शाश्वत धर्म

अक्टोबर १९९२ (5)

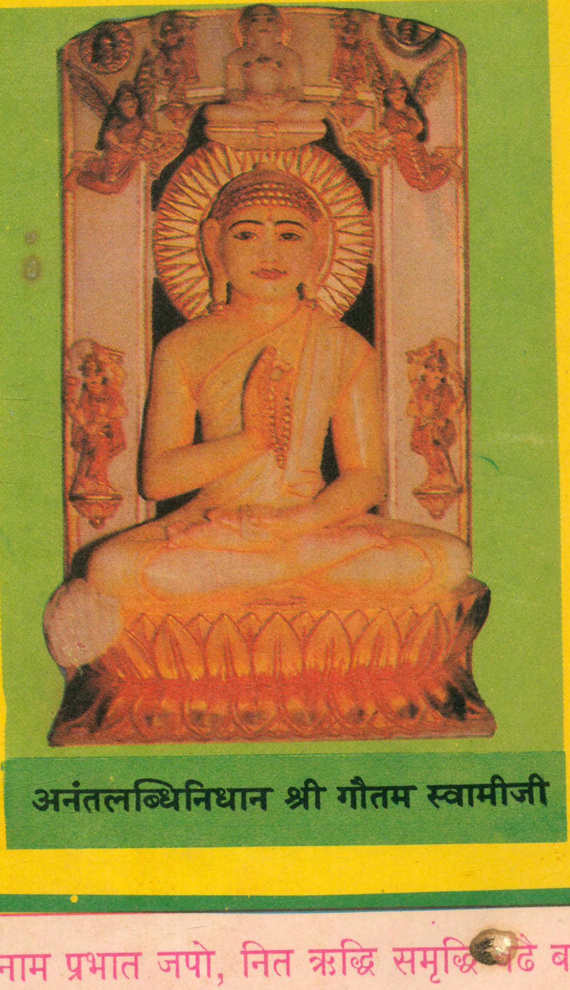

अनंतलब्धिनिधान श्री गौतम स्वामीजी

गौतम नाम प्रभात जपो, नित ऋद्धि समृद्धि बढै बहुतेरी।
ख्याल खुशाल रहे नित वासर, आस फले दिल की सघलेरी॥
भोजन मिष्ट मिले भलि भांति सुँ, आधि रु व्याधि टले अलगेरी।
लब्धिनिधान प्रधान दिये, मन वंछित घमॅड फतेरी फतेरी॥

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

प्रधान संपादक — जे. के. संघवी

- शाश्वत धर्म के सरंक्षक -

* शा. ओटमल वेलाजी कांकरिया - सुरा निवासी , * शा. ताराचंद फुटरमल फौजमल, भानाजी वेदमुथा-आहोर निवासी, * कटारिया संघवी भंवरलाल, उगमचंद, विरेन्द्रकुमार राजेन्द्रकुमार बेटा पोता तोलाजी धाणसा निवासी, * शा. तिलोकचंद, नरसींगमल, पुखराज, परखचंद, सांवलचंद, बेटा पोता प्रतापचंदजी - सरत निवासी, * संघवी मिश्रीमल, हस्तीमल, समरथमल, हिरालाल शांतिलाल जिनेशकुमार, बेटा पोता कन्नाजी कटारिया-जाखल निवासी. * नैनावा श्री जैन श्वेतांबर सकल संघ, गुरूभक्तगण-नैनावा, * श्री समकित गच्छीय जैन श्वेतांबर संघ-धानेरा, स्व. मयाचंद धुलाजी की स्मृति में धर्मपत्नी धापुबाई, सुपूत्र कुशलराज, भ्राता निहालचंद एवं श्रीमती जडावबेन कातरेला वोहरा आहोर निवासी, * मेहता तेजराज, जयंतीलाल, राजेन्द्रकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता रायचंदजी जसराजजी भूती निवासी, * मोरखीया चंदुलाल, बाबुलाल, रसिकलाल मेहशकुमार, परेशकुमार, अल्पेशकुमार, रुपेशकुमार, पुत्रपौत्र स्व. मोरखीया नानचंद मूलचंद भाई-थराद निवासी, * स्व. मुणोत रिखबचंदजी की स्मृति में धर्मपत्नी ठेलीबाई सुपुत्र बाबुलाल, सुमेरमल, अशोककुमार - रमणिया निवासी, * श्री राजेन्द्रसूरि जैन ट्रस्ट - मद्रास, * स्व. रामाणी शेषमलजी की स्मृति में मांगीलाल, फुटरमल, शांतीलाल, किशोरकुमार, बेटा पोता खुशालजी रामाणी-गुडा बालोतान (फर्म. शांतिलाल ज्वेलर्स, नेल्लोर) * शा. मोहनलाल, पारसमल, सुरेशकुमार, किशोरकुमार, कमलेशकुमार, अरविंदकुमार, बेटा पोता सांकलचंद जेरूपजी - भेंसवाड़ा निवासी (गोल्डन ज्वेलरी, नेल्लोर), * स्व. सुगीबाई धर्मपत्नी अचलजी की स्मृर्ति में पुत्र कांतिलाल प्रपौत्र रमेशकुमार बागरा निवासी, * श्री श्वेताम्बर जैन संघ - सियाणा, * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - थराद * श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ - चौराऊ, * दोशी सोमतमल, गुमानमल, सुखराज सांवलजी ह. गुमानमल सावलचंदजी चेरिटेबल ट्रस्ट, बम्बई , सुशीला बहन की स्मृति में भीमराज, हिमांशकुमार, श्रेणिककुमार बेटापोता बेचरदासजी छाजेड़ - नैनावा निवासी हाल मु. सांचोर (राज), * श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी - सोनारी सेरी - थराद, प्रतिष्ठा प्रसंगे गुरूभक्तों द्वारा. * स्व. जेठमलजी खुमाजी की स्मृति में चंदनमल, कैलाशचन्द, हंसराज, शीतलकुमार, अश्विनकुमार परिवार बागरा निवासी, फर्म : राजस्थान फायनेन्स कार्पोरेशन - काकीनाडा, * श्री विमलनाथ जैन डोसी दहेरासर - थराद. • ***श्री सौधर्मबृहत्तपागच्छ जैन संघ- आणंद***

1302

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

शाश्वत धर्म

धर्म की विविधा में शाश्वतता का प्रवर्तक हिन्दी मासिक

संस्थापक व्या. वा. आचार्यदेवश्री यतीन्द्रसूरीश्वरजी

प्रधान सम्पादक : जे. के. संघवी

सहसम्पादक : शांतिलाल सुराना

सदस्यता शुल्क
बीस वर्षीय-पांचसौ रुपये
दस वर्षीय-तीन सौ रुपये
तीन वर्षीय- एक सौ रुपये

विज्ञापन शुल्क (एक बार)
पूरा पृष्ठ - पांच सौ रुपये
आधा पृष्ठ - तीन सौ रुपये
पाव पृष्ठ - दो सौ रुपये
अंतिम कवर पृष्ठ - एक हजार रुपये
कवर पृष्ठ २ या ३ - सात सौ रुपये

सम्पर्क सूत्र
कार्यालय © ५३४ ०७ २४ निवास © ५३४ ८० ७३
शाश्वत धर्म कार्यालय
डेवलेपमेन्ट बैंक के पास, जामली नाका-थाने-४०० ६०१ (महाराष्ट्र)

वर्ष : ४० ★ अंक 5 ★ अक्टूबर १९९२

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद द्वारा संचालित

अवैतनिक सम्पादन : अव्यवसायिक प्रकाशन

झरोखा

- सम्पादकीय .... जे. के. संघवी ३
- नय और लोकजीवन........ आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. ५
- जिन मन्दिर में प्रवेश और पूजा का क्रम ... पू. मुनि श्री हेमरत्नविजयजी ८
- श्री मल्लीनाथ स्तवन (विवेचन) (१८) ..... मुनि श्री जयानंदविजयजी ९
- अहिंसक दिवाली मनाएं .... मुनि श्री भुवन सुन्दरविजयजी ११
- महा परिनिर्वाण के महा पथ पर .... श्री जय भिक्खू १३
- ऐसे थे गुरू गौतम .... कु. संगीता जे. संघवी १७
- मोक्ष की दिशा में प्रस्थान कैसे हो ? .... मुनि श्री मदनकुमारजी म. १८
- भगवान महावीर आज के परिप्रेक्ष्य में .... सौ. चन्द्रकला पाटील २४
- अहिंसा उच्चारण नहीं आचरण .... श्री नरेन्द्रकुमार रायचंदजी २८
- दिपावली महापर्व और भगवान महावीर ..... मुनि श्री हरिभद्रसागरजी ३१
- शाकाहारी बनिये .... श्री मंगल जैन ३२
- आलोक पर्व .... श्री रतनमुनिजी ३३
- मासिक धर्म का पालन .... मुनि श्री गुणसुन्दरविजयजी ३७
- अध्ययन की कुंजी .... श्री गौतम जैन ३८
- दिपावली आई (कविता) .... श्री जिनेन्द्र मुनि ४२
- समाचार दर्शन .... संकलित ४३

स्थाई स्तम्भ

- ज्ञान कसौटी (१९) .... श्री महेन्द्र जे. संघवी २३
- क्या आप जानते हैं ? .... धर्ममित्र २७
- बोधकथा (स्थायी दान) .... महेन्द्र संघवी ३२
- रूकिये ! पढ़िये !! सोचिये !!! .... मुसाफिर ३५
- सरे राह चलते चलते .... प्रवासी ३९
- एक छिद्र अनेक अर्थ .... श्री कन्हैयालालजी बोरदिया ४१

गुजराती विभाग

- श्री गणधर गौतम स्वामी .... श्री चैतनवेलजी छेड़ा ५७
- धर्म संस्कार सम्पन्न पुत्र-वधु .... श्री पूर्णानंदविजयजी ६१

लेखक के विचारों से सम्पादक अथवा परिषद की सहमति आवश्यक नहीं है।

हमारे कदम विकास की ओर या विनाश....

मानव जीवन को टिकाये रखने के लिये सबसे महत्वपूर्ण है हवा, पानी और भोजन। किन्तु मानव ने प्रगति के नाम पर आज तीनों को दूषित कर दिया है। आज न शुद्ध हवा में वह सांस ले पा रहा है, न शुद्ध पानी उसे पीने को मिल रहा है, न ही शुद्ध पौष्टिक खुराक उसे खाने को उपलब्ध हो रही है। प्रगति के नाम की भ्रामक दौड़ में हम रूककर जरा शांत चित्त से सोचें कि कहीं हमारे कदम विकास के नाम पर विनाश की ओर तो नहीं बढ़ रहे हैं? ....

आज विज्ञान सर्जित तथाकथित प्रगति के माध्यमं से मानव को अनेकानेक भौतिक सुविधाएं उपलब्ध हुयी है। पहिये के आविष्कार के बाद रेल, हवाईजहाज और रॉकेट ने हमें गति प्रदान की है। टेलिफोन द्वारा हजारों मील दूर बैठे व्यक्ति से बात करना संभव हुआ है। विविध साधनों के कारण लम्बी यात्राएं सुविधाजनक हुयी है।

वर्तमान प्रगति, औद्योगिक क्रांति एवं विकास की प्रक्रिया के गहराई में उतरकर देखें तो पता चलता है कि कहीं विकास के नाम पर विनाश की ओर तो हमारे कदम नहीं बढ़ रहे हैं? हमारी यह प्रक्रिया आत्मघाती सिद्ध हो रही है।

कालीदास के प्रारंभिक जीवन की मूर्खता सर्व विदित है। जिस डाल पर वह बैठा हुआ था, उसे ही काट रहा था यानि आत्मघात को स्वयं आमंत्रित कर रहा था। आज तथाकथित प्रगतिशील मानव की भी यही स्थिति है। प्रकृति प्रदत्त जिन साधनों के सहारे उसका जीवन संभव है, उन्हीं के साथ वह छेड़-छाड़ कर रहा है।

मानव सर्जित औद्योगिक क्रांति ने नई उपलब्धियॉं प्रदान की किन्तु आगे बढने के साथ ही पिछे दौड़ती विविध गैसों ने हानिकारक वातावरण का सर्जन करने में कोई कर-कसर बाकी नहीं छोड़ी है। कार्बनडाइ आक्साइड का वातावरण में बढ़ा हुआ अनुपात खतरे की सीमा का उल्लंघन कर रहा है। चिकित्सक इस बात से परेशान है कि इस धूल और धुंए से भरे वातावरण में रहने मात्र से लोग कैन्सर से लेकर एलर्जी रोगों के शिकार बन रहे हैं। वायु प्रदुषण ने समूची मानव जाति ही नहीं बल्कि इस पृथ्वी पर रहने वाले जीव जन्तुओं के भविष्य के लिये भी खतरा पैदा कर दिया है। पृथ्वी पर जीवन का अस्तित्व उस चक्र से संबंधित है, जिसमें जीव-जन्तुओं द्वारा कार्बन-डाइ आक्साइड का उत्पादन एवं पौधों द्वारा उसे आक्सीजन में बदलना जुड़ा हुआ है। आज स्थिति यह है कि धुंआ पैदा करने वाले उद्योग एवं प्राकृतिक इंधनों के अधिकतम उपयोग से कार्बन-डाइ आक्साइड की जो मात्रा बढ़ रही है, उससे संतुलन चक्र बिगड़ रहा है। ऐसे ही खतरों को जन्म परमाणु बमों के विकास ने भी दिया है। अणु आयुधों से राष्ट्रों की सैनिक शक्ति का नियोजन हो रहा है। छोटे बच्चों के हाथों माचिस की डिबिया पड़ने के कारण जो संकट उत्पन्न होता है वही स्थिति आज विश्व की बनी हुयी है। परमाणु आयुधों का प्रयोग तो दूर की बात है किन्तु उसका अस्तित्व होना

भी मनुष्यता के लिये हानिकारक है। आज मानव सर्जित विविध संसाधनों से निकलनेवाली प्रदूषित वायु से ओजोन की परत में छिद्र होना भी गहन चिन्ता का विषय बना हुआ है। सूर्य से निकलने वाली अल्ट्रावायलेट किरणों से जो परत हमारी रक्षा करती है, उस ओजोन की परत में छिद्र होना अर्थात् कैन्सर आदि अनेक रोगों की संभावनाएं बढ़ना।

प्राचीन काल में महामारी पृथ्वी के सीमित क्षेत्र में बंध कर रह जाती थी, उसका फैलाव एक कोने से दूसरे कोने तक नहीं होता था, किन्तु आज यातायात के द्रुत गति के साधनों ने रोगों को फैलाने में भी भूमिका निभायी है। अब विश्व के किसी भी कोने में उत्पन्न होने वाला रोग सहज ही समग्र भू-मण्डल को अपनी गिरफ्त में ले सकता है।

ऐसा ही आत्मघाती कदम आधुनिक औषधियों के निर्माण ने भी उत्पन्न किया है। अनेकानेक विविध शक्तिशाली औषधियों का निर्माण हुआ है व उसका प्रयोग लोग कर रहे हैं। विशेषज्ञों के अनुसार ऐसी तीव्र औषधियों के 'साइड इफेक्ट्स' से लोगों की मृत्यु अधिक हो रही है। औषधियों के कारण 'रियेक्शन' (प्रतिक्रिया) के कितने ही किस्से हमें दैनिक जीवन में सुनने या देखने को मिलते हैं। एण्टी बायोटिक्स औषधियों ने रोगों को तो कम समाप्त किया है किन्तु व्यक्ति को जीवन शक्ति से रहित अधिक बना दिया है। बैक्टीरिया के अन्दर उन एण्टीबायोटिक्स से लड़ने की शक्ति आ जाने से पुनः अधिक शक्तिशाली नई औषधियों का निर्माण करना पड़ता है। व्यक्ति औषधि प्रयोग द्वारा स्वयं अपने आपको खोखला, जर्जर एवं जीवन शक्ति शून्य कर रहा है।

कृषि कार्य में उपयोग में लाई जाने वाली कीटनाशक दवाईयों एवं रासायनिक खाद ने भी कई संकट खड़े कर दिये हैं। कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधी क्षमता बढ़ाकर नये-नये प्रकार के कीट विकसित हो रहे हैं। सन् १९३८ में कीटनाशक दवाओं के प्रतिरोधी कीट सिर्फ सात थे जिनकी संख्या सन् १९८९ में ४५० तक पहुंच गयी है। डी.डी.टी., बी.एच.सी., एल्ड्रीन, क्लोरडेन फारवेल, डाईब्रोमो क्लोरौ प्रोपेन जैसे कीटनाशक कीड़ों के लिये कम, किन्तु मनुष्यों व जीव जन्तुओं के लिये अधिक घातक सिद्ध हो रहे हैं। भूमि को बंजर एवं अनुपजाऊ बनाने में भी इनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। पक्षीगण इनसे विशेष रूप से प्रभावित हो रहे हैं। कई क्षेत्रों में विविध पक्षियों की कई प्रजातियाँ नष्ट हो गयी हैं।

मनुष्य ने तथाकथित प्रगति के नाम पर जैसे-जैसे प्रकृति का अन्धाधुन्ध दोहन प्रारंभ किया है, वैसे-वैसे उसे संकटों का सामना करना पड़ रहा है। जिस प्रकार कीचड़ में जानबुझकर पैर डालकर फिर धोना कोई बुद्धिमानी नहीं है, उसी प्रकार प्रकृति के विरूद्ध चलकर कई समस्याएं पैदा करना व फिर उनके निराकरण हेतु मेहनत करना भी कोई बुद्धिमत्ता की निशानी नहीं है, किन्तु यह कटुसत्य है कि आज हम उसी राह पर चल रहे हैं।

मानव जीवन को टिकाये रखने के लिये सबसे महत्वपूर्ण हैं हवा, पानी और भोजन। किन्तु मानव ने प्रगति के नाम पर आज तीनों को दूषित कर दिया है। आज न शुद्ध हवा में वह सांस ले पा रहा है, न शुद्ध पानी उसे पीने को मिल रहा है, न ही शुद्ध पौष्टिक खुराक उसे खाने को उपलब्ध हो रही है। प्रगति के नाम की भ्रामक दौड़ में हम रूककर जरा शांत चित्त से सोचें कि कहीं हमारे कदम विकास के नाम पर विनाश की ओर तो नहीं बढ़ रहे हैं?....

J. K. Sanghvi

(जे.के. संघवी)

नय और लोकजीवन

आचार्यश्री जयन्तसेनसूरिजी

किसी भी वस्तु के विषय में सापेक्ष कथन को नय कहते हैं। कोई भी व्यक्ति एक समय में वस्तु का संपूर्ण स्वरूप कह नहीं सकता। वस्तु अनन्त धर्मात्मक होने से वक्ता एक समय में उसे आंशिक रूप से ही प्रकट कर सकता है; इसलिए नय अंश ग्राही है।

चिन्तन और मनन में नय की उपयोगिता दार्शनिक क्षेत्र में सुप्रतिष्ठित है। लोक व्यवहार में भी ऐसा कोई व्यवहार नहीं है; जिसमें नय दृष्टि की उपेक्षा की जा सके। अतः लोकजीवन की अपेक्षा से नय का क्या महत्व है और वर्तमान में नय का व्यावहारिक रूप नवयुग के नये मूल्यों का संवाहक बन सकता है या नहीं। इस सन्दर्भ में हमें नय के व्यावहारिक रूप पर विचार करना है।

आज का मनुष्य भौतिक विकास के कारण स्थूल जगत के लुभावने दृश्यों की चकाचौंध में फँसा हुआ है। इस कारण वह जीवन की उन शाश्वत आन्तरिक मान्यताओं को भूल गया है; जो व्यक्ति और समष्टि की शान्ति, सुख और सौहार्द की जननी हैं। जीवन मूल्यों की विस्मृति के कारण ही समाज में तनाव की स्थिति निर्माण होती है।

आज समाज के प्रत्येक घटक में घृणा, अविश्वास, मानसिक तनाव और अशान्ति छायी हुई है। अहंकार, आत्मवंचना, अराजकता और विषमता ने मनुष्य समाज को लक्ष्यहीन बना दिया है। भौतिक विकास ने मनुष्य के दिमाग और दिल के मध्य गहरी खाई निर्माण कर दी है। सुख, शांति व समृद्धि के लिए दिमाग व दिल में समतुलन की आवश्यकता है; पर आज उसका अभाव महसूस हो रहा है। भौतिक विकास ने मनुष्य को हृदय शून्य बना दिया है और इसीलिए वह अपने अन्तर्जगत को सीमितं कर बाह्य जगत की सीमाओं को अधिकाधिक व्यापक बना रहा है।

इस विषमता को दूर करने के लिए और समस्याओं के समाधान के लिए एक ऐसे धर्म और दर्शन की आवश्यकता है; जो अनाग्रही दृष्टि को विकसित कर मानव को सत्य की खोज के लिए प्रेरित कर सके। यदि मनुष्य नय सिद्धान्त के स्वरूप को समझ कर उसे जीवन में उतारे तो समाज में समता, स्वतन्त्रता और बन्धुता का वातावरण निर्माण हो सकता है और मनुष्य वैचारिक ऊहापोह के झंझावातो से मुक्त होकर सह अस्तित्व मूलक प्रगति पथ पर आगे बढ़ सकता है।

धर्म और दर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। ये सदा साथ साथ रहते है; कभी अलग नहीं होते। धर्म मनुष्य के आचार पक्ष को पुष्ट करता है और दर्शन विचार पक्ष को। अतःइनसे दिल और दिमाग में समतुलन हो सकता है।

नय वस्तु विशेष के विषय में सापेक्ष कथन है। इससे लक्षित होता है कि वस्तु अनन्त धर्मात्मक है और क्रिसी एक धर्म की सांगोपांग प्रतीति, ज्ञान और किसी विशेष दृष्टिकोण को स्वीकार करने का अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्ति अन्य दृष्टिकोणों का खंडन कर रहा है। वह तो

केवल अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसका कारण यह है कि हर व्यक्ति का दृष्टिकोण विशेष भी सत्य के उतना ही समीप है, जितना कि अन्य व्यक्ति का उसी वस्तु संबंधी दृष्टिकोण।

यद्यपि आंशिक प्रस्तुतीकरण से वस्तु की पूर्ण रूपेण व्याख्या नहीं हो पाती; फिर भी अपेक्षा दृष्टि से वस्तु की यथार्थ- सत्ता का समावेश व बोध तो हो ही जाता है। अतः नय दृष्टि का आश्रय लेकर यदि मानव यह निश्चय कर ले कि सत्य का संपूर्ण साक्षात्कार साधारण मनुष्य की ज्ञान सीमा से संभव नहीं है। मनुष्य वस्तु के एक-एक आयाम को जानने के द्वारा आंशिक गुणधर्म का ही ज्ञान कर पाता है और इस एकांगी ज्ञान के कारण ही वस्तु की स्वरूप प्रतीति में भी पर्याप्त भिन्नता लक्षित होती है। किन्तु इस भिन्नता का यह अर्थ कदापि नहीं है कि मेरा मत ही सत्य है और अन्य असत्य।

अपेक्षा को दृष्टि सन्मुख रखने से और सामने वाले के अस्तित्व और व्यक्तित्व को मान देने से ही सामाजिक संबंध समधुर और समरस बनाये जा सकते हैं।

नय यद्यपि आंशिक ज्ञान का सिद्धान्त अवश्य है किन्तु अनाग्रह के प्रति समर्पित होने के कारण यह हठवाद या दुराग्रह का सिद्धान्त नहीं है। नयवादी न तो वस्तु के एक अंशभूत ज्ञान को ही ज्ञान की इति श्री समझ लेना प्रतिपादित करता है और न उस एकांशवादी ज्ञान प्राप्त कर लेने पर पंडितमन्यता का प्रदर्शन करता है। वह तो सिर्फ अपने मत को समुचित शिष्ट शब्दों में प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता है; चाहे फिर उस मत को अन्य व्यक्ति स्वीकार करे या न करे। वह तो हर्ष-विषादातीत हो कर माध्यस्थ भाव का आराधक होता है।

विचार स्वतंत्रता के इस युग की यह विशेषता है कि हर व्यक्ति किसी भी विचार को समयानुकूलता और उपयोगिता की कसौटी पर परख कर मूल्यांकन करता है। अतः आज के वैचारिक क्षेत्र में यदि व्यक्ति नय सिद्धान्त को आधार मान कर अपना अभिप्राय व्यक्त करने लगे, तो व्यक्ति के जीवन में विचार संबंधी मतभेद से होने वाला विरोध अपने आप समाप्त हो जाय। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को अपने विचार अन्य पर थोपने का न तो समय मिलेगा और न स्वमत पुष्टि हेतु आग्रह करने के लिए लालायित होना पड़ेगा।

इस प्रकार के विवेक युक्त दृष्टिकोण से न केवल व्यक्ति का ही विकास होगा; अपितु समाज और देश की प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

यदि व्यक्ति स्वमत का ही आग्रह करता रहेगा; तो उसके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विरोध की वृद्धि ही होती रहेगी। परिणामतः कटुता बढ़ेगी और जब वह विरोध पर विजय प्राप्ति हेतु येन केन प्रकारेण प्रयास करेगा; तो उसका नैतिक पतन अवश्य ही होगा और व्यक्ति की शक्ति विघटन और विनाश की ओर अग्रसर हो जायेगी।

अतः इस कुंठाग्रस्त युग की आवश्यकता है कि मानव जाति असहिष्णुता, दुराग्रह और हठवाद के पथ से विमुख होकर सहिष्णुता, सह अस्तित्व एवं समरसता के सिद्धान्त की ओर अग्रसर हो। यह एक ऐतिहासिक सच है कि तलवार के बल पर अपनी मान्यताएँ दूसरों पर थोपने का प्रयत्न भूतकाल में संसार भर में हुआ है; पर वह प्रयत्न पूरी तरह सफल कभी नहीं हुआ, कहीं नहीं हुआ। शस्त्र बल से लोगों का मन कभी जीता नहीं जा सकता।

आपस में मेल जोल बढ़ाने के लिए और समाज में सुसंवाद स्थापित करने के लिए नय दृष्टि एक उपयोगी आधार बन सकती है। नय दृष्टि संपन्न व्यक्ति ही राम, रहीम, कान्ह, महादेव, विष्णु, शिव, बुद्ध, पारसनाथ आदि में समान अर्थ ढूँढ सकता है और उसे प्राप्त कर स्वयं सकल ब्रह्म हो जाता है। नय दृष्टि का अवलंब लेने से व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र उन्नति के शिखर पर पहुँचने के साथ साथ अध्यात्म जगत का गुरु पद भी अधिगत कर सकता है।

उपसंहार के रूप में इतना संकेत करना पर्याप्त होगा कि नय दृष्टि भले ही दार्शनिक क्षेत्र में प्रयुक्त विचार माना जाये; लेकिन इससे लोकजीवन भी अछूता नहीं बचा है। यदि लोकजीवन में नयों की दृष्टि के अनुरूप आचार विचार की प्रवृत्ति हो; तो नयवाद पक्ष धर विशाल हृदय उदार चेता नेता बनकर विश्व बंधुत्व के आदर्श को प्रतिफलित करते हुए भगवान महावीर के जीओ और जीने दो के सिद्धान्त का यथाथ अनुयायी बन सकता है। सत्य का ज्ञान करने के लिए आँखे खुली होना अत्यन्त आवश्यक है; नहीं तो अंधे तो आपस में झगड़ते ही हैं। हाथी का सत्य स्वरूप तो वे पा ही नहीं सकते।

(एक छिद्र अनेक अर्थ-)..पृष्ठ ४१ का शेष

राजा की आंखें फटी की फटी रह गई। सोचने लगे–एक भिक्षुक के जीवन में इतना पतन ? उसके जीवन में मद्यपान, मांस भक्षण, वेश्यागमन, चौर्यकर्म एवं जुआ खेलना आदि सातों कुव्यसन कैसे आ गए। वह कुछ भी बोल नहीं सके– विचारों में डूबे रहे। इतने में भिक्षुक उनका आशय समझ गया। बोला–

राजन् ! इसमे आश्चर्य की क्या बात है ? जब जीवन में एक बुराई आ जाती है तो अन्य बुराइयां भी एक-एक करके आ जाती हैं। मैंने सर्वप्रथम मद्यपान प्रारम्भ किया। धीरे-धीरे ये सारे दोष मुझमें आ गये एक छिद्र से अनेक छिद्र हो गए। लाख प्रयत्न करने पर भी इन छिद्रों को मैं रोक नहीं पाता।

राजा अवाक् बैठा भिक्षुक की एक-एक बात को सुन रहा था। राजा को लगा कि भारी रहस्य उघाड़ दिए हैं तथा सर्वोत्कृष्ट उपदेश द्वारा सजग किया है। राजन् आत्मचिंतन करने लगे–मैंने तो मद्यपान किया है। क्या धीरे-धीरे मुझमें भी ये दुर्गुण आनेवाले हैं ? ओह ! क्या दशा होगी मेरी ? अच्छा हुआ, भिक्षुक ने मुझे सचेत कर दिया, न जाने पतन के गड्ढे में कितना नीचे चला जाता ?

तब अपने असली रूप में प्रकट होते हुए कालिदास ने कहा– राजन् ! आप धन्य हो। आपको कर्त्तव्यबोध कराने के लिए ही मैंने भिक्षुक का रूप बनाया है।

राजा–धन्य हो, नररत्न महाकवि ! मैं समझ गया कि एक छिद्र से मानव में अनेक छिद्र सहज ही आ जाते हैं।

बन्धुओं ! प्रत्येक साधक को अपने जीवन में एक भी छिद्र को आने की अनुमति नहीं देनी चाहिए। यदि साधक, चारित्र में प्रमाद रूप एक भी छिद्र से युक्त हो गया तो वह अनेक दुर्गुणों से युक्त हो जायेगा। जो साधक काय-संहनन की ओट में जीवन में शिथिलता लाएगा उनकी आत्मा छिद्रों से युक्त होकर पतन की ओर गति करती जायगी। अतः आत्म-साधना हेतु छिद्रों से बचते रहें।

'शाश्वत धर्म' के सदस्य बनने की प्रेरणा दिजीये------

जिन मंदिर में प्रवेश और पूजा का क्रम

* 'निसीहि' उच्चारण के साथ जिनालय में प्रवेश करें।
* जिनेश्वर देव का मुखारविंद दिखते ही दोनों हाथ जोडकर ''नमो जिणाणं'' कहकर प्रभु को वंदन करना।
* अर्द्धावतन प्रणाम करके तीन प्रदक्षिणा करें।
* मधुर कण्ठ से प्रभु की स्तुति कहें।
* दूसरी 'निसीहि' कहकर गर्भ द्वार में प्रवेश करें।
* प्रतिमाजी पर रहा हुआ निर्माल्य (पूर्व दिवस के फूलादि) उतारना।
* प्रतिमाजी की मोरपीछी करना।
* पानी के कलश से भीगा हुआ केशर पोछना।
* आवश्यकता हो तो खस कूंची आदि का प्रयोग करना।
* पंचामृत से अभिषेक करके शुद्ध जल से सफाई करे।
* अभिषेक के समय घंटनाद करें।
* पवासन को पाट लूछणा से साफ करना। पाट लूछणा दो रखें, एक पवासन को पोछने के लिए तथा दूसरा नीचे का स्थान पोछने हेतु।
* परमात्मा के अंगों को तीन बार विभिन्न अंग लूछणों से पोछना।
* आवश्यकतानुसार तांबे की कील का उपयोग किया जा सकता हैं।
* बरास द्वारा विलेपन पूजा करना चाहिए।
* चंदन पूजा, पुष्प पूजा, धूप पूजा, दीपक पूजा, अक्षत पूजा, नैवेद्य पूजा, फल पूजा, आदि क्रमानुसार करना।
* नाद पूजा के रूप में घंटनाद करना।
* चामर नृत्य करना।
* दर्पण में प्रभु का मुख देखना।
* यक्षास्थान अवस्था त्रिक की भावना करनी चाहिए।
* तीसरी 'निसीहि' बोलकर दुपट्टे के किनारों से तीन बार नीचे की भूमि का प्रमार्जन करके चैत्यवंदन आरम्भ करना।
* चैत्यवंदन में दिशा त्याग त्रिक, आलम्बन त्रिक, मुद्रा त्रिक और प्राविधान त्रिक का पालन करना।
* वापसी में पुनः स्तुति बोलना।
* पूजा के उपकरण यथा स्थान रखना चाहिए।
* प्रभु की ओर पीठ न पडे इस प्रकार बाहर वापस आना।
* जिनालय के चबूतरे पर बैठकर तीन नवकार का स्मरण कर भक्ति भावना को स्थिर करना।
* परमात्मा के वियोग में पीड़ित हृदय से स्वगृह की ओर वापस लौटना।

श्री मल्लीनाथ स्तवन (१९)

(मनडु किम ही न बाजे........... ए राग)

विवेचन : श्री जयानंदविजयजी म.

मोह कहो किम मेटुं हो मल्लि जिन ! मोह कहो किम मेटुं" ॥ टेर ॥
जिम जिम जतन करीने जीतुं, तिम तिम होवे तातो ।
मनडो पिण एहथी जइ मलियो, तेह थी हुओ अति मातो ॥ म. ॥ ॥ १ ॥

गुरुदेव श्री, श्री मल्लिनाथ जी से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि मोहनीय कर्म अनादि काल से मेरे पिछे लगकर मुझ से दूध पानी सम एक रूप होकर मुझे दुःखी कर रहा है । उसे मैं दूर कैसे करूं ?

मोह दूर करने के लिए श्री मल्लिनाथ भगवंत की स्तवना करने के पिछे विशेष कारण है कि उनकी आत्मा ने तीर्थंकर नाम कर्म निकाचित किया उस भव में (महाबल के भव में) मोहनीय कर्म के (एक स्त्री सैनिक के बंधन) में बंध गये थे । माया का आसेवन करने से स्त्रीवेद का बंध हुआ था । उस बंधन पर विजय प्राप्त करने से मोहनीय कर्म को हराने हेतु उसे दूर करने हेतू श्री मल्लिनाथजी से विशेष रूप से स्तवना की गई है ।

गुरुदेव भगवंत कहते हैं कि मैं जिस प्रकार से जब-जब मोहनीय कर्म को जीतने हेतु प्रयत्न करता हूँ तब-तब वह विशेष पुष्ट होता है । उसमें भी मन उसके साथ मिल जाता है तब वह अधिक जोर करता है । घर का भेदू चोर के साथ मिलने पर चोर का जोर विशेष होता है । वैसे ही मन का मोह से मिल जाने के कारण उसे जीतना अतीव दुष्कर हो गया है ।

सोले सामंते संचरीयो, उपशम गुणे जई अड़ियो ।
परमादी एहने वश पड़ियो, भोगी सुं जई भलियो हो । म. । ।२ ॥

मोहराय का परिवार भी सशक्त एवं विशाल है । कषाय रूप सोलह उसके सामंत है ।

मोह का साम्राज्य ग्यारहवें गुणस्थानक तक है । उस का जोर वहां तक चलता है । ग्यारहवें गुणस्थानक तक जीवात्माओं को वह अपने वश में रखता है ।

उपशांत मोह गुणस्थानक पर पहुँचे हुए आत्मा को अपनी शक्ति से खींचकर नीचे गिरा देता है । उसी भव से नरक निगोद की गोद में सुला देता है । आत्मा प्रमादी बनकर उसके वश में हो जाता है । मोहराय का वशीकरण मंत्र प्रमादी आत्माओं पर विशेष रूप से चलता है । जिससे वे भोग कर्म में लिप्त होकर मोह से एक मेक हो जाते हैं ।

अप्रमादी अति ऋद्धि लच्छी, हेले एह हरावे ।
चउ नाणी चउ गति संचारे, प्रत्यक्ष एह प्रभावे । हो म. ॥ ३ ॥

इस मोहराय की शक्ति का दिग्दर्शन करवाते हुए कहा कि जो अप्रमत्त अवस्था को प्राप्त हो गये हैं, अनेक लब्धियाँ रूप ऋद्धि के स्वामी है । उनकी अप्रमत्तावस्था एवं लब्धिरूप ऋद्धि को क्षण मात्र में विनष्ट कर देता है ।

चतुर्थ मनःपर्यवज्ञान का प्रथम भेद ऋजुमति मनःपर्यवज्ञान की प्राप्ति जिन आत्माओं को हो गई है ऐसे महापुरूषों को भी उसी भव से चारों गति में से किसी भी गति में भेजकर परिभ्रमण के चक्कर में डाल देता है । यह सब मोहराय का प्रत्यक्ष प्रभाव है ।

दो गाथाओं में मोहराय की प्राबल्यता का/शक्ति का सचोट दिग्दर्शन करवाया है ।
गुरूदेव श्री भगवंत से प्रश्न करते है कि–

पूर्व भवे एणे आपने पीड़या, अचरिज अधिको एह ।
तेहने तुमे ततखिण किम जीत्यो, नाथ भाखो धरी नेह हो ।

हे मल्लिनाथ भगवंत ! पूर्व के भव में मोहराय ने आपको पीड़ा पहुँचाई थी । आप पर अपनी सत्ता का साम्राज्य फैलाया था । आपको भी अपने बंधन में बांध लिया था । मोहराय पर विजय प्राप्त करने हेतु अत्यंत प्रयत्नशील पुरूषार्थरत आप पर उसने साम्राज्य फैलाया यह मेरे लिए महान आश्चर्य का कारण है । उस पर आपश्री ने तत्काल विजय कैसे प्राप्त की, उसे आपने अति शीघ्रता से कैसे जीता ? यह हकीकत मुझ पर कृपा करके/स्नेह करके हे भगवंत आपश्री मुझे कहिये ।

कहेशो अमे करियो तिम करशो, हारे मोहन मल्ल ।
सूरि राजेन्द्र तो सत्य प्रकाशे, मन नहीं एहवो मल्ल हो । हो. ॥ ५ ॥

मोह से आत्मा की शक्ति अत्यंत विशेष हैं ऐसा दर्शाते हुए, ऊपर के प्रश्न के उत्तर में कहा कि हे मल्लिनाथ भगवंत ! आप ऐसा कहोंगे कि मैंने किया वैसा तुम भी करो मोहरूपी मल्ल हार जायगा ।

तीर्थंकर भगवंत सत्य ही कह रहे हैं कि मन, एवं मोह ये कोई मल्ल नहीं है जो कि आत्मरूपी मल्ल के जागृत होने पर उसे हरा सकें ।

आत्मरूपी मल्ल सुप्तावस्था में हो जाता है, तभी मोहराय चोर की संज्ञा से युक्त होने से आत्मा के घर में चोरी कर उसे दरिद्र बना लेता है । उसका आत्मधन लूट लेता है । पर जब आत्म मल्ल जागृत रहता है तब मोहराय का लेशमात्र नहीं चलता । वह हार जाता है । आत्मा उसके बंधन से मुक्त होकर शिव-सुख पा लेता है ।

गुरूदेवश्री ने इस स्तवन में मोहराय की प्राबल्यता सशक्तता का दिग्दर्शन करवाकर आत्मा की अनंत शक्ति का स्पष्टीकरण कर कहा है कि आत्मा मोह पर विजय प्राप्त करने में सक्षम है ।

अहिंसक दिवाली मनायें

मुनि श्री भुवनसुंदर विजयजी

संत तुलसीदास ने एक सुभाषित में महत्व का उपदेश दिया है कि – "तुलसी दया न छोडिए, जब लग घटमें प्राण।" अर्थात् जीवन जीते जीते दूसरों का विचार अवश्य करना। जीवदया का विचार करना और उसे कभी छोडना नहीं।

जैन धर्म में तो दया और अहिंसा का अपार महत्व बताया है। साधु के पांच महाव्रतों और श्रावकों के पांच अणुव्रतों में जीवदया और अहिंसाव्रत के लिए ही बाकी के चार व्रत है, ऐसा आगम शास्त्रों ने कहा है। अपने भगवान और जैनाचार्यों ने भी जीवदया और अहिंसा की महिमा गायी है। भगवान श्री पार्श्वनाथ ने जलते सांप को लकडी में से बाहर निकाला था। शांतिनाथ भगवान ने मेघरथ राजा के भव में कबूतर की दया की खातिर अपनी जान की बाजी लगा दी थी। हिंसक राजा अकबर को जीवदया की प्रेरणा देने के लिए आचार्य हीरसूरिजी महाराज हजारों मील चलकर आगरा गये थे। चींटी की दया हेतु धर्मरुचि अणगार ने कडवी तूंबडी का आहार कर लिया था। क्रौंच पक्षी की रक्षा हेतु मेतारज मुनिने अपने प्राण का बलिदान दे दिया था। जीवदया हेतु राजा कुमारपाल अपने ११ लाख घोडों को छानकर पानी पिलाते थे। कबूतर की हिंसा के प्रायश्चित में दयासिंह नामक मेवाड के राजाने गरम-उबलता सीसा पी लिया था और मृत्यु को प्राप्त हो गये थे, तब से वे सिसोदिया कहलाये थे। यानि हमारा इतिहास जीवरक्षा और जीवदया का गौरव पूर्ण इतिहास है।

जैनियों की तो कुलदेवी है - जीवदया और अहिंसा। शास्त्र में भी लिखा है कि - जीवदया एक महानदी है, जिसके किनारे पर क्षमा, नम्रता, पवित्रता, विनय, विवेक, शील, सदाचार रुपी वृक्ष पनपे हुए हैं।

जीवदया-अहिंसा-जीवरक्षा सिखाने हेतु ही पर्युषणा महापर्व में 'अमारि' यानी अहिंसा एक महान कर्तव्य महापुरुषों ने फरमाया है। किन्तु आज हम भी अहिंसा-जीवदया का मार्ग भूलते जा रहे हैं। यही कारण है कि जैन भी दिवाली दिनों में पटाखे छोडते हैं।

पटाखे चलाना महा भयंकर हिंसा है। भगवान श्री महावीर देवने कहा है – जैसी करनी वैसी भरनी, यानी करनी और भरनी समान होती है। जैसा बोलेंगे वैसा ही पायेगे। बबूल बोने पर आम कैसे मिल सकता है ? हाँ, कांटें अवश्य मिलेगे। वैसे ही पटाखे चलाने से जीव अपार कर्मबंध करता है, पाप बांधता है और पाप से अनेक प्रकार के दुःख आते हैं।

राजस्थान के एक गांव में एक वैष्णव नव युवान को मैंने देखा था जो दोनों आखों से अन्धा था। पूछने पर पता लगा कि दिवाली में बोम्ब चलाने गया और बोम्ब अचानक फटा...आंखों में गोला बारुद गया। फिर आग्रा, दिल्ही, बम्बई आदि में बहुत ट्रीटमेन्ट करवायी किन्तु ठीक नहीं हुआ, दोनों आंखे चली गयी ! २० साल का नवयुवान अंधा हो गया ! यानी मौज क्षण की है पटाखे चलाने में, जिससे पाप मण का लगता है और दुःख टन का आता है। हँसते हुए बंधे कर्म रोने पर भी छूटते नहीं है। इसलिए पाप करने से पहले सावधान हो जाईए।

जैनियों को तो हिंसा के कारण पटाखें चलाने ही नहीं चाहिए। फिर दिवाली के दिनों में तो हमारे

परम उपकारी श्री महावीर भगवान का हमसे वियोग हो गया है, इसलिए भी पटाखें चलाकर तुच्छ आनंद नहीं मनाना चाहिए। आज भारत देश में लाखों करोडों गरीबों को खाना नहीं मिलता है। पुरे कपडे तक नहीं मिलते है। और हम जीवदया भूलकर, हजारों रुपयो के पटाखें चलाते हैं, यह हमे शोभा नहीं देनेवाली बात है। एक अंदाज है कि भारत देश की जनसंख्या १ अरब की है, प्रत्येक व्यक्ति सरासर १० रुपये के पटाखे चलायें तो एक ही दिवाली में करीब १० अरब रुपयों का फालतु खर्च हो जाता है और जो पाप का संचय होता है यह तो अलग !

पटाखें में कागज का उपयोग होता है और यह जलता है जिससे ज्ञानावरणीय कर्मों का बंध होने से भविष्य में हमें पागल, अज्ञानी, अनपढ बनने का दुःख आता है। भगवान ने अहिंसा सिखायी है, इसके सामने हम हिंसा करते है, भगवान की आज्ञा का भंग कर देते है, इससे दर्शनावरणीय कर्मों का बन्ध होता है, जिससे भविष्य में जिनशासन नहीं मिलता, जिनाज्ञा नहीं मिलती है, और निद्रा-अंधापन आदि रोग होते हैं। पटाखें चलाने पर जीवों की हिंसा होती है, छोटे छोटे चलते-फिरते जीव बडी संख्यामें मरते हैं। कबूतर-चिडिया-तोते आदि आवाज व धुंए के कारण तडपते हैं और रात्रिमें उडनेपर इलेकट्रीक वायरों से गिरकर या बिल्ली के शिकार बनकर मर जाते हैं। जिससे हमें भयंकर वेदनीय कर्मो का बंध होता है, जिसके उदय के परिणाम स्वरुप हमें टीबी. केन्सर, लकवा आदि भयंकर रोग आते हैं। इसी प्रकार आठों कर्मों का भयंकर पाप-बंध हमारी आत्मा को होता है, जिससे दुर्गति प्राप्त होती है। इसलिए हमें पटाखें नहीं चलाने चाहिए।

पैसों की बरबादी करनेवाले, हिंसा का पाप करानेवाले, आग लगानेवाले, जीवदया भूलानेवाले ऐसे पटाखों से आप सर्वथा दूर रहे यही अभिलाषा है।

अगर आप पुण्य-पाप में विश्वास करते हैं तो पटाखे चलाना छोड दें।

अगर आप मानवता को मानते हैं, तो भी पटाखे चलाना छोड दें।

अगर आप अहिंसा प्रेमी है, फिर तो पटाखें चलाना छोड ही दें।

अगर आप पर्यावरण की शुद्धि चाहते है तो पटाखे चलाना छोड दें।

दिवाली जीवदया पूर्ण-अहिंसक मनायें। तप-जप से बिताए और अपार पुण्य कमायें यही शुभाशा है। शिवमस्तु सर्व जगतः

कृ पया ध्यान दें..

'शाश्वत धर्म' के पुराने अंकों का क्या करें ? इस विषय में कई बार ग्राहको के पत्र हमारे पास आते हैं। आप इनकी फाइल बनाकर अपने यहॉ ज्ञान भंडार में रख सकते हैं। यदि यह संभव न हो तो हमें सूचित करें ताकि उन अंको का योग्य उपयोग करने के लिये हम उन्हे अपने कार्यालय में मंगवाने की व्यवस्था कर लेंगे। याद रखें इन्हे रद्दी में न बेचें अथवा किसी भी प्रकार की आशातना हो ऐसा कार्य कदापि न करें।

सम्पादक

महापरिनिर्वाण के महापथ पर

– श्री जय भिक्खु

भगवान श्री महावीर ने बयालीसवाँ चातुर्मास पावानगरी में किया। वहाँ के शासक हस्तिपाल के रज्जुकसभा–धर्मगृह में वे उतरे थे। चातुर्मास के तीन महीने व्यतीत हो गये और चौथा भी आधा समाप्त होने को आ गया। उस काल में भगवान ने अपने श्रीमुख से एकदम समीप आ पहुँचे अपने निर्वाण–समय की चतुर्विध संघ को जानकारी दी।

इस समाचार से पावापुरी के घर–घर में शोक की एक कष्टदायक गहन छाया मँडराने लगी, आकाश का निर्मल व स्वच्छ हृदय भी रंज से भर–भर आया और वेग न रोक पाने के कारण छलक पड़ा। पुष्करिणियों के विशुद्ध जल में महकते कमल–दल भी गम्भीर और स्थिर हो गये। आह! समस्त अग–जग के प्राणवन्त स्वरूप भगवान श्री महावीर की पार्थिव काया अब अलोप हो जायेगी। संसार का कण–कण शोकाग्नि में ऊभ–चूभ हो गया।

ज्ञानीजन कहने लगे – भगवान आज मुक्ति का वरण करेंगे। मुक्ति के मध्य से देह की दीवार हट जायेगी। वे मुक्त और स्वतंत्र हो जायेंगे। विस्तार और अधिक विस्तार ग्रहण कर लेगा।

प्रजाजन लम्बे–लम्बे दीर्घ निःश्वास बिखेरते, आहें भरते कह रहे थे – 'हाय रे! प्रभु की अलौकिक देह–छवि अब फिर क्या कभी निरखने को मिलेगी? युगों–युगों के पश्चात् सुनी गई अमृत–वाणी का रसास्वादन क्या फिर कभी सौभाग्य से प्राप्त हो पायेगा? ज्ञानियों के वचनानुसार शोक एवं आनन्द को समान मानने का हम निरन्तर प्रयास कर रहे हैं, किन्तु आनन्द के स्थान पर शोक आकर ऐसा जम कर बैठ गया है कि वह यत्नपूर्वक हटाने पर भी अपने से तिल भर भी टस से मस होने का नाम नहीं ले रहा है। हाय रे, प्रभु, क्या हमसे सदा–सदा के लिए दूर हो जायेंगे?

अन्तरिक्ष के समस्त दृश्य–प्रदृष्य देवता एवं ऋषिगण मधुर ध्वनि से शंख–नाद कर रहे हैं। आज भगवान की परम जीवन–ज्योति अखण्ड अलौकिक एवं महान् ज्योति में समाहित–विलय हो जानेवाली है। मुक्ति की आड़ बना हुआ देह–बन्धन आज टूट जायेगा और अपना प्रिय वीर मुक्ति का वरण करेगा।

भगवान ने निर्वाणोपलब्धि का जिक्र किया है जो प्रसन्नता का विषय है किन्तु भोले भक्त–जनों के शुष्क एवं सन्तप्त मुख से आनन्द का एक भी अक्षर नहीं निकल रहा है। वे कहते हैं – 'हाय! लगता है कि भगवान अभी कल ही तो हम लोगों के मध्य पधारे थे, उदित होते सूर्य की भाँति बारह–बारह वर्ष की मौन–बदरिया जैसे अभी–अभी ही तो बरसी है, अभी–अभी

ही तो आप्लावित किया था उसने अग–जग के शुष्क कणों को। अभी तो केवल बहत्तर वर्ष की हुए हैं भगवान! इतने अल्प काल में देह–मुक्ति की यह उलझन कैसी? भाई तुम्हारी बात हम समझते हैं। उनके लिए मृत्यु शोक का विषय नहीं, हर्ष का भी नहीं, किन्तु जीवन का ही उत्सव हो सकता है। मृत्यु का उत्सव क्या आत्मा से हो सकता है? चाहे जितनी प्रकाशमय होने पर भी रात तो रात ही कहलायेगी न?

प्रभु ने तो उसके पश्चात् उपदेश की वर्षा ही प्रारम्भ कर दी थी। जाते–जाते भी विश्व को जितना भी धर्मामृत का पान करा दिया जाय उतना ही कम। सोलह प्रहर तक अखण्ड उपदेश प्रदान करते रहे। बारहों पार्षदें तन्मयता से प्रभु–वाणी का अमृत–पान कर रही थीं। लगता था जैसे मेघ मूसलाधार निरन्तर बरस रहा हो और सूखी धरित्री हौंस–हौंस में ही उसे अपनी गर्म देह पर झेल रही हो। हरी–भरी बनती जा रही है उसकी देह, उसकी रग–रग उसका कण–कण, रस सिंचित होकर।

वर्षों तक सेवा में संलग्न देवताओं का स्वामी इन्द्र भी अन्तिम घड़ी में तो अपनी हिम्मत हार बैठा। साज जो सभी सजाये, निर्वाण–कल्याणक की समस्त छोटी–बड़ी, गहन–सरल रचनाएँ भी रचीं, किन्तु अन्तिम क्षणों में प्रभु के अभाव की कल्पना ने उसे भी हिला दिया, पीड़ित कर दिया। उसकी स्थिति उन्मत्त जैसी हो गई।

एकत्र जन–समुदाय के मध्य इन्द्र ने प्रभु से प्रश्न किया – ''भगवन्! आपके गर्भ, जन्म, दीक्षा एवं केवलज्ञान हस्तोत्तरा नक्षत्र में थे, सत्य है न?''

भगवान ने प्रत्युत्तर में 'हाँ' मुद्रा में केवल अपना सिर हिला कर सम्मति प्रकट की। ''आपके निर्वाण के नक्षत्र में भस्म ग्रह संक्रान्त हो रहा है, अनिष्ट भावी की यह अग्रिम सूचना कहलायेगी न?''

भगवान ने फिर पूर्ववत् अपना सिर हिला कर हामी भरी।

''तो प्रभु, आप तो महा समर्थ हैं, सर्वज्ञ हैं, सर्व शक्तिमान हैं। क्या आप अपनी निर्वाणवेला को तनिक लम्बी नहीं कर सकेंगे, उस ग्रह को टालने के निमित्त ?''

''नहीं।'' भगवान ने प्रत्युत्तर में कहा।

इन्द्र के हृदय की अत्यन्त गहनतम गहराइयों में इच्छा थी कि एक बार निर्वाण–वेला कुछ आगे खिसक जाये तो पीछे सब देख लिया जायेगा। अनी का चूका सौ वर्ष जीता है।

भगवान मेघ जैसी गम्भीर वाणी में बोले – ''इन्द्र! मोह, विवेक का नाश करता है। इसीलिए मोह को अन्धा कहा गया है। मेरी देह के प्रति उत्पन्न तुम्हारा मोह ही आज तुमसे यह सब कहलवा रहा है। तुम मेरे अत्यधिक समीप रहे हो, ज्ञानार्जन भी किया है, फिर भी मेरा कहा भूल गये कि आयुष्य का एक क्षण मात्र भी सुर–असुर अथवा मानव कोई भी बढ़ा नहीं सकता। देह का काम जन्म का कारण एवं मृत्यु की गरज पूरी हो गई। अब तो आयु का एक–एक क्षण एवं इस क्षण का एक एक कण भी बोझ स्वरूप लगने लगा है। इन्द्र!

देखो तो सही, शान्ति और आनन्द की कभी अस्त न होनेवाली कैसी मन–भावना उषा उग रही है? अमरत्व, पूर्णत्व एवं शान्ति का अमर वसन्त खिल रहा है। सत् चित् आनन्द की अमर वर्षा से सब कुछ भीगने लगा है। स्वागत के लिए अन्तरिक्ष भी किस तरह उल्लसित हो रहा है?

एकत्र समुदाय में प्रभु के अन्तेवासी भी थे। उन्होंने भक्तजनों को एकत्र करके एकान्त में लेजाकर आश्वासन दिया। जैसे कोई व्यक्तिगत गूढ़ बातें वे जानते हों, उस तरह उन्होंने लोगों को समझाया – ''भन्ते! भले ही भगवान चाहे जैसे कहें, चाहे जो कहें किन्तु इस काल में वे निर्वाण को स्वीकार नहीं करेंगे, उसे अवश्य ही टाल देंगे। यह एक और एक मिल कर दो होने जैसी बात है। हम उनके अन्तेवासी हैं। अतः उनके अन्तर की बात भली भाँति जानते हैं।''

''क्या जानते हैं?'' श्रोतावर्ग ने आश्वस्त हाते हुए प्रश्न किया।

''हमें भली प्रकार से याद है कि भगवान ने अपने प्रिय शिष्य महर्षि गौतम को एक बार कहा था कि 'हे गौतम! हम दोनों एक दिन एक जैसे हो जायेंगे।' आज ही प्रभु ने महर्षि गौतम को धर्म–बोध देने के लिए देवशर्मा ब्राह्मण के पास भेजा है। प्रभु के अभाव में जीवित न रह पाने वाले गौतम स्वामी के पास लौटने से पूर्व क्या भगवान देह छोड़ सकेंगे? नहीं, नहीं, यह असम्भव है। आप सब शान्ति धारण करें। यह तो प्रभु की लीला मात्र है, अपनी परीक्षा की वेला।''

अन्तेवासियों की इन बातों से समस्त समुदाय में धैर्य का संचार हुआ, किन्तु भगवान तो अन्तिम क्रिया में निमग्न थे, पर्यंकासन में बिराजित, मौन, स्वयं से साक्षात्कार करते हुए। बादर मनोयोग एवं वचनयोग रुँधकर काययोग में स्थिर हो गये थे। कुछ ही क्षणों में उन्होंने बादर काययोग में से सूक्ष्म काययोग में प्रवेश किया। वाणी तथा मन के काययोग भी उन्होंने बन्द कर दिये।

आयुष्य की शीशी में से ज्योतित अन्तिम कण झर रहे थे एवं वे भी अब पूर्णावस्था को प्राप्त होने की दशा में प्रयत्नशील थे। दुविधाओं से घिरा जन–समूह उनकी सहस्रों सूर्यों की कलाओं जैसी ज्योतिर्मय मुख–मुद्रा को एकदम निहार रहा था। सभी के श्वास उँचे थे। सभी के मुख पर शोक के बादल घिर आये थे।

प्रभु ने जब अन्तिम सूक्ष्म काययोग भी रूँध दिया, समस्त क्रियाओं का उच्छेद कर दिया, अकस्मात् आँखों को चकाचौंध करं देनेवाला तेजवर्तुल प्रकट हुआ। तारागण से आच्छादित अमावस्या की गहन रात्रि अकस्मात् अलौकिक प्रकाश से झिलमिला उठी। चारों ओर से जय–जयकार का नाद उभरने लगा। दुन्दुभियों का स्वर्गीय घोष और नक्कारों की अलौकिक ताल–बद्ध स्वरलहरी जैसे आभा–मण्डल से शनैःशनैः नीचे उतरने लगी। सर्वत्र सुगन्ध ही सुगन्ध फैलने लगी। दिव्य पुष्पों की वृष्टि होने लगी। स्वर उभरने लगे – ''प्रभु निर्वाण को प्राप्त हो गये।''

हवाओं के निर्मल आँचल में से

बह–बह कर आती शंख–नादों की मधुरिम गंगा जैसे तैरने लगी। वन की निस्तब्धता में से दुन्दुभि–स्वर उभरने लगे।

संसार को अपने दिव्य प्रकाश से जगमगानेवाला महादीपक अन्तरचक्षुओं को ज्योतित कर चर्म–चक्षुओं के समक्ष बुझ गया।

मोह के दारुण पलों में इन्द्रदेव को जब कुछ होश आया और वे स्वस्थ हुए तो कहने लगे – ''अरे दीपक जलाओ, दीपावलियों की संरचना में संलग्न हो जाओ। प्रभु निर्वाण–पद को प्राप्त हो गये हैं। शीघ्रता करो, सारे संसार को ज्योत्स्नाओं से भर दो। घर का कोई कोना अन्धकार में न रहे।''

इन्द्र के आदेश से अमावस्या की वह रात असंख्य दीपकों के प्रकाश से जगमगा उठी। किन्तु कितने ही लोग गौतम को दिये वचन की सत्यता का उत्तर पाने के लिये आतुर थे। उन लोगों ने अनशन ग्रहण कर लिया था। न तो वे बोलने वाले थे, न चलनेवाले।

दूसरी ओर प्रभु के निर्वाणोत्सव की संरचना चल रही थी। चारों ओर पूर्ण मुक्ति का उल्लास, मंगल एवं कल्याण का प्रतीक प्रकाश एवं शंख, मृदंग एवं पण्व की ध्वनी से समस्त वातावरण गूँज रहा था।

जिस रात्री में भगवान का निर्वाण हुआ उस रात को नौ मल्ली, नौ लिच्छवी व काशी–कौशल के १८ गणराजा पौषध व्रत में थे। इन्द्रों ने शिविका उठाई, शिविका यथास्थान पहुँची। भगवान की देह गोशीर्ष चन्दन की चिता पर रखी गई। अग्निकुमार देवों ने अग्नि प्रज्वलित की और वायुकुमार देवों ने वायु प्रचलित की। फिर मेघकुमार ने जल–वृष्टि करके चिता को शान्त किया। शकेन्द्र ने ऊपर की दाई दाढ़ों का और ईशानेन्द्र ने बाई दाढ़ों का संग्रह किया। अमरेन्द्र तथा बलीन्द्र ने नीचे की दाढ़ें लीं। अन्य देवों ने दाँत तथा अस्थिखण्ड लिये। मानवों ने भस्म ग्रहण कर सन्तोष का अनुभव किया।

वर्धमान महावीर का निर्वाण ५२७ ई. पूर्व हो गया था। उनके संघ में १४००० श्रमण, ३६००० श्रमणियाँ थीं। परिवार में ३१४ पूर्व ज्ञान के अधिकारी मुनि थे, १३०० अवधिज्ञानी मुनि थे, ७०० वैक्रियक लब्धिकारक थे और ७०० अनुत्तर विमान स्वर्ग में जाने वाले साधु थे। ५०० मनःपर्यवज्ञान के धारक थे, ४०० विद्वान खण्डन–मण्डन के विषय का प्रतिपादन करते थे। १५६००० श्रावक तथा ३१८००० श्राविकाएँ ऐसी थीं जिन्होंने धर्म के १२ व्रतों को पूर्णतया आजन्म पालन करने का बीड़ा उठाया था।

– सदाचार –

यह सोचो कि अपना हित किस में है? हित माने स्वार्थ नहीं, मगर शुद्धि। आत्मा की शुद्धि। इस शुद्धि में हित है, सुख है। शरीर की शुद्धि के बाद विचारों की और भाषा की शुद्धि का प्रयोग करो। शरीर की शुद्धि तक ही मत रुको। दूसरों का हित करने की भावना के साथ अपने हित के प्रति जागृत रहो। दूसरों का हित करने की क्षमता प्राप्त करो।

मुख पृष्ठ परिचय

ऐसे थे गुरु गौतम...

अंगूठे अमृत वसे, लब्धितणा भंडार ।
श्री गुरु गौतम समरिए, वांछित फल दातार ।।

- श्रमण भगवान महावीर के १४ हजार शिष्यों में गौतम स्वामीजी प्रथम शिष्य और प्रथम गणधर थे ।
- गौतम स्वामीजी ने दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् आजीवन पर्यंत छट्ठ (बेले) के पारणे छट्ठ किये थे ।
- इन्द्रभूति गौतम ने अपनी आयु के ५० वें वर्ष में दिक्षा ली । ३० वर्ष तक प्रभु महावीर की सेवा की और प्रभु के निर्वाण के पश्चात् १२ वर्ष तक केवली पर्याय में रहे । इस प्रकार उन्होंने संपूर्ण ९२ वर्ष की आयु पाई ।
- भगवान महावीर को कैवल्यज्ञान प्राप्त हुआ, उसके दूसरे ही दिन गौतमस्वामीजी को संयम मार्ग प्राप्त हुआ एवं भगवान महावीर को मोक्ष प्राप्त हुआ, उसके दूसरे ही दिन गौतमस्वामीजी को कैवल्यज्ञान प्राप्त हुआ ।
- भगवान महावीर के १४ हजार शिष्यों में से सिर्फ ७०० शिष्य उसी भव में मोक्ष पधारे, किंतु, गौतमस्वामीजी के ५० हजार शिष्यों में से सभी उसी भव में मोक्ष पधारे ।
- सूरिमंत्र पट्ट में एवं ऋषिमंडल यंत्र में बीच में गुरु गौतम स्वामीजी की छबी अंकित रहती है ।
- अष्टापदजी तीर्थ यात्रा में गुरु गौतम स्वामी ने वहीं पर जगचिंतामणी सूत्र की रचना की थी ।
- नूतन वर्ष को गौतम स्वामीजी का रास सुनाया जाता है ।
- भगवती सूत्र में गौतम द्वारा पूछे गए ३६००० प्रश्न एवं भगवान महावीर द्वारा दिये गये उत्तर संकलित है और उनकी भक्ति के लिए मंत्री पेथड शाह ने छत्तीस हजार सोनामहोरों द्वारा गोयम शब्द की पूजा की थी ।
- जैन आचार्यों को आचार्यपद की प्रतिक रूप मिलता सूरिमंत्र का केन्द्रबिंदु गौतमस्वामी महाराज हैं ।

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

संकलन - संगीता जे. संघवी (आहोर)

ऐसे दुनियाँ में कितने ही जानवर है जिनकी हत्या हम अपने शौक, जीभ के स्वाद और फैशन के लिये करते हैं । सील, मछली, मगरमच्छ, गजराज जैसे विशाल पशु, व्हेल जैसी बडी मछली, सर्प, कछुए, वनराज, रेशम के कीड़े, शुतुरमुर्ग, नेवला, भालु, कुत्ते आदि अनेक जानवरों की हम किसी न किसी प्रकार हत्याएं करते हैं और अपना मनोरथ पूरा करते हैं, चाहे इस कार्य करने में कितनी ही हिंसा हो जाये ।

मोक्ष की दिशा में प्रस्थान कैसे हो?

मुनि श्री मदनकुमारजी

आध्यात्मिक आनंद

आध्यात्मिक जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष है। भारतीय दर्शन, चिन्तन और परिवेश में यह विचार बहुत प्रखरता के साथ प्रकट हुआ है। सभी आस्तिकवादी दर्शन मोक्ष-प्राप्ति पर बल देते हैं। कुछ दर्शन दुःख-क्षय को ही मोक्ष मानते हैं। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा की सर्वथा कर्म मुक्त अवस्था मोक्ष है। सभी कर्मों के क्षय से आत्मा कर्म विशुद्ध अवस्था को प्राप्त होती है। आत्मा का अपने अस्तित्व में, पारिणामिक भाव में अवस्थित होना ही मोक्ष है। कर्म-क्षय से असीम आत्म-वैभव और आत्मिक सुख प्रकट होता है। स्वभाव-रमण से परम आनंद की उपलब्धि होती है। कर्म-क्षय और आत्मिक सुख में कार्य कारण संबंध देखने को मिलता है। कर्म-क्षय से मिलने वाला सुख ही वास्तविक होता है। मोक्ष-प्राप्ति के पाश्चात् जन्म-मरण-जरा रूप संसार का सर्वथा अन्त हो जाता है। संसार में मनुष्य मोहजनित सुख का संवेदन करता है। अध्यात्म का साधक आत्म-सुख की अनुभूति करता है। संसार का सुख स्वल्प, क्षणिक और दुख की परम्परा को प्रसूत करने वाला होता है। अध्यात्म-साधना से निष्पन्न सुख स्थायी, अद्भुत और जन्म-मरण की अनादिकालीन परंपरा को तोड़ने वाला होता है। पुद्गलजनित सुखों से देह को आराम मिलता है, किंतु शांति और समाधि की संप्राप्ति में उनका योगदान नहीं है। उपशम सुख या आत्मिक सुख पुद्गल निरपेक्ष होता है। यह सत्य की अनुभूति से होने वाला सुख है। आत्म सुख संप्राप्त व्यक्ति द्रष्टा की भूमिका में चला जाता है। प्रिय-अप्रिय संवेदन से मुक्त बनने वाला ही पुद्गल निरपेक्ष सुख की अनुभूति कर सकता है।

अनंत आत्म वैभव

हमारी आत्मा स्वच्छ दर्पण के समान है। जैसे धूल और रजकण दर्पण को आवृत्त कर उसकी क्षमता को आवृत्त कर देते हैं। वैसे ही हमारी आत्मा कर्म पुद्गलों से आवृत्त विकृत और बाधित है। कर्मों के सघन आवरण से आत्मा का असीम वैभव उद्घाटित नहीं हो पा रहा है। जो हम पाना चाहते हैं, पाने के लिए लालायित हैं, वह सब कुछ हमारे भीतर विद्यमान हैं। कर्म की परतों से आत्मा का अनंत वैभव आवृत्त हो गया है। धर्म के पास चेतना के अनावरण और विशुद्धि की प्रक्रिया है। धर्म की उपासना और सान्निधि से चैतन्य को सर्वथा आवरण मुक्त कर सकते हैं। कर्म संस्कारों को क्षीण और निवीर्य करने के लिए निर्जरण का आलम्बन आवश्यक है। अनेक उपाय विहित हैं, जिनसे आत्मा की उज्ज्वलता होती है। आत्म उज्ज्वलता का परिभाषिक नाम निर्जरा है। आत्मा की आंशिक उज्ज्वलता निर्जरा कहलाती है। जब आत्मा संपूर्ण रूप से उज्ज्वल हो जाती है, मोक्षत्व को उपलब्ध हो जाती है। चेतना की आंशिक उज्ज्वलता निर्जरा है और संपूर्ण उज्ज्वलता मोक्ष है।

निर्जरा का सिद्धान्त महत्त्वपूर्ण हैं। आगमकारों ने निर्जरा के बारह प्रकार बतलाए हैं, परन्तु वास्तव में वे तपश्चर्या और साधना के प्रकार हैं। बारह प्रकार की तपश्चर्या से विपुल निर्जरा होती है। ये सभी प्रकार निर्जरा के कारण हैं, अत: इन्हें उपचार से निर्जरा कह दिया जाता है। आध्यात्मिक साधना का प्रारंभ उपवास और खाद्य-संयम से होता है। जो खाद्य संयम नहीं जानता है, वह साधना को भी नहीं जानता है। निर्जरा के सभी प्रकार इन्द्रिय और मनो-निग्रह के पुष्ट आयाम है। इन्द्रिय और मन के संयम से ही व्यक्ति अन्तर्जगत् में प्रवेश करता है।

धर्म के दो रूप

निर्जरा अतीत का स्पर्श करती है। अतीत में कृत कर्म-संस्कारों को भस्म करती है। निर्जरा के द्वारा अतीत में बंधे हुए कर्मों की विशोधि होती है। संवर धर्म का आलंबन परम आवश्यक है। संवर धर्म की आराधना से व्यक्ति आने वाले नये कर्मों को रोक देता है। आगन्तुक कर्मों को रोक देना और पुराने कर्मों को जीर्ण-शीर्ण कर देना धर्म का अभीष्ट है। यह धर्म की आराधना का फलित हैं। संवर निर्जरात्मक धर्म के आश्रय से ही व्यक्ति परम पद मोक्ष को प्राप्त कर सकता है। निर्जरा का दर्शन सरल है, सब के लिए शक्य है। यह प्रयत्न और अप्रयत्न दोनों प्रकार से संभावित है। संवर धर्म के लिए प्रबल पुरुषार्थ की अपेक्षा होती है। इन्द्रिय और मन का निग्रह या निरोध महापुरुषार्थ है। संवर धर्म की पृष्ठ भूमि में सम्यग् दर्शन का होना अनिवार्य है। जिस व्यक्ति में सम्यग् दर्शन का अभाव होता है, वह संवर धर्म की समुपासना में समर्थ नहीं हो पाता है। मोक्ष-प्राप्ति के लिए संवर-धर्म की आराधना अनिवार्य अपेक्षा है। जैनधर्म संवर-प्रधान है, क्योंकि समग्र दर्शन निर्वाणवादी है।

धार्मिक के दो रूप

धर्म व्यक्ति की आस्था से अनुबंधित है। आस्था के साथ जब क्रिया का योग होता है, तब जीवन में निखार आता है। कुछ लोग प्रिय धर्मी होते हैं, उन्हें धर्म बहुत अच्छा लगता है, किंतु वे आचरण नहीं कर पाते हैं। वे धर्म के प्रति सहज श्रद्धालु होते हैं। धर्म के कठोर मार्ग का अनुसरण नहीं कर पाते हैं। कुछ लोग दृढ़धर्मी होते हैं। वे धर्म को जीवनगत बनाते हैं। वे आस्था और आचरण दोनों दृष्टियों से समृद्ध होते हैं। आस्था विहीन आचरण निराकायक्लेश बन जाता है और आचरण विहीन आस्था अनुपयोगी बन जाती है। आस्था और आचरण के योग से वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होती है। प्रियधर्मी श्रावक को विकासोन्मुख धर्मी और दृढ़धर्मी श्रावक को विकासशील धर्मी की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।

धार्मिक की चित्तवृत्ति

मनुष्य के जीवन और व्यवहार से धर्म का प्रकट होना सुखद घटना है। जो धर्म का आराधक

बनता है, उसके जीवन से कुछ लक्षण स्पष्टतया प्रतिभासित होते हैं। उस व्यक्ति के जीवन पर अर्थ और पदार्थ का प्रभुत्व नहीं होता है, बल्कि वह सदैव मानसिक शांति का अनुभव करता है। वह अर्थ को जीवन के केन्द्र में प्रतिष्ठित नहीं करता है। वह अर्थ को मात्र आवश्यकता पूर्ति का साधन मानता है। वह क्षुद्र स्वार्थ-पूर्ति और अर्थ-लाभ के लिए अनैतिक आचरण करने में सदैव संकोच का अनुभव करता है। उसके जीवन में धर्म का मूल्य धन से अधिक होता है। वह अपने जीवन और व्यवहार में संयम और आवश्यकता परिसीमन की बात सोचता है। वह संयम के सुख का अनुभव करता है। उसके चैतन्य में पदार्थ के प्रति आसक्ति और व्यग्रता स्वल्प हो जाती है। वह आवेग और आवेश जनित व्यवहार का परिहार करता है। उसकी चेतना मोक्षाभिमुख हो जाती है। उसका मानस मोक्ष-सुखों को पाने के लिए उत्कंठित रहता है। अन्तःकरण वैराग्य से भर जाता है, जिससे उसकी चेतना त्याग-मार्ग की ओर प्रवृत्त होने लगती है। उसके मन में प्राणी मात्र के प्रति करुणा और मैत्री का भाव बनता है, जिससे उसके जीवन में पापभीरूता और प्रामाणिकता की चेतना विकसित होती है। सिद्धान्त के प्रति भी उसके मन में गहरी आस्था होती है। जीवन में भटकाव और मानसिक द्वन्द्व निःशेष हो जाता हैं। देव, गुरु, धर्म के प्रति उसकी आस्था प्रगाढ़ से प्रगाढ़तर होती चली जाती है। लोक-धर्म और लौकिक देवताओं के प्रति वह उदासिन हो जाता है। उसके जीवन में आत्मस्थ वृत्ति का अभ्युदय होता है, जिससे काल्पनिक दुःखों का अन्त हो जाता है।

मोक्ष सुख की बाधा

मोक्ष-प्राप्ति की सबसे बड़ी बाधा है—लौकिक चेतना। लौकिक चेतना से लोकोत्तर लक्ष्य की संप्राप्ति असंभव है। विराट लक्ष्य की प्राप्ति के लिए विराट साधना की आवश्यकता रहती है। तद्नुरुप साधन के अभाव में लक्ष्य की संपूर्ति संभव नहीं हो पाती है। जैसे कपड़े की सिलाई कैंची से संभव नहीं है वैसे ही लौकिक चेतना से मोक्ष की प्राप्ति संभव नहीं है। पदार्थ-प्रतिबद्ध चेतना मोक्ष के लिए अयोग्य है। संसार की प्रत्येक आत्मा पदार्थ से संवलित है, पदार्थ उसके लिए उपयोगी है। पदार्थ का स्वीकार केवल उपयोगिता के आधार पर काम्य है। जब पदार्थ चेतना पर हावी हो जाता है तब चेतना लौकिक बन जाती है। लौकिक चेतना से की जाने वाली आध्यात्मिक क्रिया फलदायी नहीं बन पाती है।

संज्ञातीत चैतन्य का निर्माण

आसक्त मनुष्य का मन आहार के प्रति गृद्ध रहता है। वह आहार-संज्ञा के वशवर्ती बनकर आहार की मात्रा का अतिक्रमण करता है। उसका मन परिग्रह के प्रति लुब्ध रहता है। वह मुर्च्छा से प्रेरित होकर पदार्थों का अंबार लगा देता है। पदार्थ के बाहुल्य और असीमितभोग से मन मूर्च्छाग्रस्त हो जाता है। मूर्च्छित को मोक्ष कहां है? उसके मन में स्वात्व-समर्पण विकसित ही नहीं हो पाता है। जिसका मन पदार्थ प्रतिबद्धता और ममता

से बद्ध है, वह घोर परिग्रही है। आसक्त मन कामुक बनता है। आसक्त मन भयग्रस्त होता है। आसक्त मन में कषाय का उद्दीपन होता है। इस प्रकार मूर्च्छा के चक्रव्यूह में फंसा हुआ प्राणी आहार, भय, मैथुन और परिग्रह संज्ञा को अतिक्रांत ही नहीं कर पाता है। संज्ञातीत बनकर ही मोक्ष की दिशा में प्रस्थान किया जा सकता है। लोकोत्तर चेतना के निर्माण से ही मुक्ति संभव हो सकती है।

मोक्ष की दिशा में प्रस्थान

चेतना की परमशुद्ध अवस्था मोक्ष है। जहां सिद्ध, बुद्ध और मुक्त आत्माएं निवास करती है, वह निवास-स्थल ही मोक्ष कहलाता है। आस्तिक दर्शन में मोक्ष आत्मा का सर्वोच्च साध्य है। निर्ग्रन्थ प्रवचन का एक मात्र ध्येय मोक्ष है। निर्ग्रन्थ साधना में मोक्ष और उसके हेतुभूत साधना ही उपादेय है। निर्ग्रन्थ साधना में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की संयुक्त आराधना ही मोक्ष-मार्ग है। साधना की पृष्ठभूमि में सम्यग्दर्शन अर्थात् सही श्रद्धा का होना अनिवार्य है। ज्ञान और दर्शन आत्मगुण हैं। चारित्र और तप इन्हें विकसित करने के पुष्ट आलम्बन है। ज्ञान की निर्मलता का हेतु सम्यग् दर्शन है। सही तत्व-श्रद्धा के बिना ज्ञान कुत्सित हो जाता है। कुत्सित ज्ञान अज्ञान कहलाता है। ज्ञान भीतर से प्रकट होता है। उससे स्व, आत्म-अस्तित्व और अमूर्त जगत् का बोध होता है। ज्ञानावरणीय कर्म के उदय से आत्म-ज्ञान आवृत्त हो जाता है। आवृत्त ज्ञान के लिए ज्ञानावरणीयकर्म जिम्मेदार है। कुत्सित ज्ञान के लिए दर्शन मोहनीय कर्म जिम्मेदार है। दोनों प्रकार के अज्ञान से मुक्त होने के लिए मोहनीय कर्म को कृश करना आवश्यक है। जब मोहनीय कर्म क्षीण होता है, तब ज्ञान-चेतना स्वत: विकसित हो जाती है। ज्ञान सहजतया भी प्राप्त होता है, और प्रयत्नजनित भी होता है। शास्त्र अध्ययन, उपदेश-श्रवण आदि के द्वारा होने वाला ज्ञान प्रायोगिक-ज्ञान कहलाता है-। चेतना की उज्ज्वलता से स्वत: निष्पन्न ज्ञान वैस्रसिक ज्ञान कहलाता है।

अन्तर्मुखी व्यक्तित्व और जीवन निर्माण के लिए ज्ञानाराधना के साथ साधना पक्ष को मजबूत बनाना आवश्यक है। जब जीवन में ज्ञान पक्ष का एकांगी विकास होता है तब अहंकार चेतना के उद्दीपन और पद-पद पर विषादग्रस्तता की संभावना बहुत बढ़ जाती है। आचार-विहीन ज्ञान खतरनाक बन जाता है। ज्ञान-विहीन आचार जड़ता पैदा करता है, अत: दोनों का योग जरूरी है। आचार की उपेक्षा करने वाला साधना-मार्ग से च्युत हो जाता है और ज्ञान की उपेक्षा करने वाला मुसीबतों को आमंत्रित करता है। अत: दोनों का समन्वित रूप ही जीवन-विकास की सही दिशा है।

मोक्ष-प्राप्ति के लिए धर्माराधना आवश्यक है। हमारी धर्माराधना मुख्यत: द्विधात्मक है—संवर और निर्जरा यद्यपि मोक्ष-धर्म के चार मार्ग प्रतिष्ठित हैं, किंतु संक्षेप नय की दृष्टि से इन चार मार्गों का समाहार संवर और निर्जरा धर्म में किया जा सकता है। सम्यक् दर्शन के अभाव में सम्यक् ज्ञान नहीं होता है। सम्यक् ज्ञान के अभाव में सम्यक् चारित्र अर्थात् संवर-धर्म की आराधना अशक्य है। तप निर्जरा का साधन है, अत: तप निर्जरा में समाहित

हो जाता है।

मोक्ष-प्राप्ति का प्रधान साधन संवर है। निर्जरा की प्रबलता भी संवर-चेतना पर आधारित है। जहां संवर धर्म होता है, वहां निर्जरा-धर्म की निष्पन्नता अवश्यंभावी है। जैन साधना पद्धति में संवर अर्थात् निग्रह को विशेष मूल्य प्राप्त है। गुणस्थान-आरोहण में क्रमशः निग्रह बलवान बनता चला जाता है। इसके सन्नियोग में निर्जरा भी प्रबल हो जाती है। कोरी निर्जरा केवल नौ ग्रैवेयक देवलोक तक ही पहुंचाने मे समर्थ होती है। पांच अनुत्तर विमान देवलोक और मोक्ष जाने के लिए संवर-धर्म का आलंबन अत्यन्त आवश्यक है।

सिद्धों का अवस्थान

मुक्त आत्माओं का निवास-स्थल मोक्ष है। चार भवोपग्राही (अघाती) कर्मों के क्षीण होते ही आत्मा मात्र एक समय में मोक्ष में अवस्थित हो जाती है। मुक्तात्माओं के निवास-स्थल को ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी कहते हैं। इसे सिद्धशिला भी कहते हैं। यह ४५ लाख योजन विस्तृत है तथा ऊर्ध्व लोक में अवस्थित है। मध्य लोक की पृथ्वी भी ४५ लाख योजन विस्तृत है, जहां से मोक्ष की ओर प्रस्थान होता है। जहां से प्रस्थित जीव ऋजु गति से अपने गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाता है। लोकान्त में पहुंचते ही आत्मा का गति-चक्र समाप्त हो जाता है और आत्म-स्वरुप में शाश्वत-कालीन अवस्थान हो जाता है।

देवलोक और मोक्ष की पृथ्वी उर्ध्व लोक में अवस्थित है। अंतिम देवलोक सर्वार्थसिद्ध विमान है। सर्वार्थसिद्ध विमान और लोकान्त के बीच २१ योजन की दूरी है। सर्वार्थसिद्ध विमान से १२ योजन ऊपर ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी है। यह पृथ्वी मध्य में ८ योजन मोटी है तथा लोक के अग्र भाग में अवस्थित है। ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी और लोकान्त के बीच एक योजन कर अवगाहन (क्षेत्र) है। मुक्त आत्माओं का अधिकतम अवगाहन ३३३ धनुष एक हाथ आठ अंगुल होता है। ईषत् प्राग्भारा पृथ्वी से लोकान्त के २४ हिस्से करने पर प्रथम २३ हिस्से खाली रह जाते हैं। एक योजन के २४ वें भाग जितने अंतिम हिस्से में अर्थात् लोकान्त से सटकर सभी सिद्ध आत्माएं निवास करती हैं। लोक के बाहर गति और स्थिति का साधन धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय नहीं है, अतः सभी सिद्ध आत्माएं लोकान्त का स्पर्श कर निवास करती हैं।

अवतार से निरपेक्ष

लोकान्त में अवस्थित सिद्ध आत्माएं अवतार और पुनर्जन्म की परंपरा से मुक्त हो जाती हैं और शाश्वत सुखों में संलीन हो जाती है। तप और ध्यान का आलंबन लेने वाला साधक सिद्ध आत्माओं के समीप समुपस्थित होने की अर्हता अर्जित कर लेता है। तप और ध्यान कर्म संस्कारों को विदीर्ण करने के समर्थ साधन हैं। कर्म रजों को प्रकंपित करने के लिए इनका आश्रय नितान्त अपेक्षित है। आत्म-जागरण होते ही कर्मों का सघन घेरा बिखरना प्रारंभ हो जाता है। कर्म संस्कारों का भेदन और बिखराव चेतना की विजय है। मुक्ति का प्रथम सोपान जागरण है। जागरण की दिशा में प्रस्थान मुक्ति की दिशा में प्रस्थान है। जागो! जागो! जागो! यही वीतराग वाणी का सारभूत तत्व है।

ज्ञानकसौटी (१९)

- महेन्द्र जे. संघवी - थाने

(स्वाध्यायी पाठक निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पहले क्रमशः एक कागज पर लिखे फिर इसी अंक में पृष्ठ ४२ पर दिये गए उत्तरों से तुलना करें। - **सम्पादक**)

(नोट - सभी उत्तर 'व' अक्षर की वर्णमाला से शुरू होते हैं।)

४५१) महावीर प्रभु को उडद-वाकुले वहोराकर पारणा करानेवाली स्त्री।
४५२) स्त्रियाँ कौन सा सूत्र प्रतिक्रमण में नहीं बोलती।
४५३) किस महामंत्री नें आवु के विशाल जिनालयों का निर्माण करवाया था।
४५४) नौ लोकांतिक देव में से एक।
४५५) तीन वर्ष की उम्र में ११ अंग पढ़नेवाले।
४५६) संभवनाथ भगवान के प्रथम गणधर।
४५७) कोंकण शत्रुंजय थाने तीर्थ की वर्षगांठ किस दिन आती है।
४५८) श्री आदिनाथ भगवान को किस --- वृक्ष के नीचे केवलज्ञान हुआ था।
४५९) वह तप जिसकी अवधि १४ वर्ष, ३ महिने एवं २० दिवसों की है।
४६०) एक तीर्थंकर का लंछन।
४६१) उन गुरू के पिता के नाम जिनके सब (५० हजार) शिष्य उसी भव से मोक्ष सिधारे थे।
४६२) एक संघयण का नाम।
४६३) एक ग्रह का नाम।
४६४) श्रीपालराजा के मामा का नाम।
४६५) एक दिग् कुमारी का नाम।
४६६) श्रावक के १४ नियमों में से एक।
४६७) पर्युषण पर्व के तृतीय एवं चतुर्थ दिवस को क्या कहा जाता है

४६८) चार शाश्वत जिन में से एक।
४६९) गोडवाड की पंचतीर्थों में से एक तीर्थ।
४७०) चरम तीर्थपति का मूल नाम।
४७१) गोचरी वहोरकर लौटते समय गुरू भगवंत क्या कहते है?
४७२) शत्रुंजय पर्वत की तलहटी पहले कहाँ तक थी।
४७३) सोलह विद्यादिवीयों में से एक।
४७४) सर्वप्रथम शास्त्र कहाँ पर पुस्तकारूढ़ हुये।
४७५) आश्रम में वस्तपात्रादि की रज को दूर करते हुये किसको केवलज्ञान हो गया था।

भगवान महावीर : आज के परिप्रेक्ष्य में

– सौ. चन्द्रकला पाटील

भगवान महावीर का स्मरण तत्कालीन युग के संदर्भ में करना जितना जरूरी है उतना ही आनेवाले कल के लिए, आज के संदर्भ में भी करना जरूरी है। महावीर कोई नाम नहीं है : वह वृत्ति है जो समय के परिवर्तित संदर्भों में नया विचार, नया रूप, नया आकार बनकर उपस्थित होती है। समय का चक्र ऐसे नाम को अधिक चमक देते चलता है, शक्तिमान बनाता है।

कहने को तो भगवान महावीर का जीवनक्रम एक निश्चित समय की परिधि से बँधा है। उनके सूत्रमय वचन विशिष्ट प्रसंगों में विशिष्ट व्यक्तियों को लक्ष्यकर कहे गए हैं। उनके तत्व–सिद्धान्त–चिन्तन याने कि दर्शन को एक समय का संदर्भ प्राप्त हुआ है। उस युगीन परिवेश की प्रकाश रेखा में ही उनके जीवन को, कार्य को, उपदेश को और जीवनसाधना को रखना होगा लेकिन आज के लिए भी महावीर नाम उतना ही सार्थक है जितना कभी था। इस दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में महावीर नामक सत्य को वंदन करना नए नजरिये का परिचायक है।

सत्य शब्द के मूल में शब्द है सत्। सत् अर्थात् तीनों कालों में प्रतिस्थापित सत्ता। कल आज और कल जिसकी सत्ता की ज्योति सदैव प्रकाश मान होती है वह सत्य कहलाता है। सत्य स्वयंप्रकाशी होता है। भगवान महावीर का तत्वज्ञान सत्यदर्शी है। महावीर युगपुरूष थे उनका अस्तित्व धरती सा व्यापक और आकाश सा विराट होते हुए नदी सा सर्वस्पर्शी है।

मनुष्य का धरती पर जो अविर्भाव हुआ वह अविकसित था लेकिन था विकास की संभावनाओं से भरपूर। आदिम वृत्तियों के साथ पनपा–मानव जंगली जानवरों के साथ चला। उन्हीं की तरह शिकार करता, खाता, लड़ता–मरता, भय दिखाता–भयभीत होता। शरीर के स्तर पर जिता, उन्हीं के साथ रहते–रहते वह उन्हीं मे से एक हो गया था। आहार, निद्रा, भय, मैथुन, बल, दूसरे शब्दों में खाओ पिओ मजा करो – Eat, drink and be merry मनुष्य जंगल में जानवरों की भाँति, जानवरों की सोहबत में, उनके समकक्ष उतर कर जीता मरता रहा। पंजे और नाखून उसकी ताकत थे। दाँत और जबड़े उसकी शक्ति थे। उसकी इच्छा–वासना उसकी राह खोजनेवाली ताकत थी। पैर तो थे उसे दो ही लेकिन आचार–विचार–उच्चार में वह पशुतुल्य था, पशु था चौपाया जानवर।

इसी वातावरण में कोई पुकार उसने सुनी। 'तुम कौन हो?' इसका अपेक्षित उत्तर था – 'हम अमृत संतान है।' यह उत्तर जब महापुरूष की दिव्य वाणी से प्रस्फुटित हुआ तब दिग–दिगन्त में गूंज उठा। उसके आरोह–अवरोह ने मनुष्य के मानस को नयी दीप्ति से भर दिया यह दीप्ति आत्मचेतना की थी – आत्मबोध की थी। 'हो सकता है!' यह संभावना की आहट थी और 'बन – सकता हूँ। उस विश्वास की हुंकार थी! मनुष्य के

विकास, उन्नति और ऊर्ध्वगामी चेतना की पृष्ठभूमि थी। आत्मबोध का विचार था। इसे हीं संस्कृति कहा जा सकता हैं। इसीसे मनुष्य की जीवनदृष्टि विशिष्ट बनी – व्यवच्छेदक बनी। इसीसे उसके जीवन व्यवहार में ऊर्ध्वमुखी अबस्था जागी। इसीसे मनुष्य उठा और अपनी निर्मिति – प्रक्रिया में जुट गया क्योंकि यहीं से उसे अपनी हर बात पशु से भिन्न लगने लगी थी। यही संस्कृति विचार मनुष्य के जीवन का चरम, परम और शाश्वत सत्य है, यही विभाजक रेखा है जो मनुष्य को पशु से भिन्न रुप में स्थापित कर सकती हैं।

मनुष्य फँस जाता है। अनेक प्रलोभनों से उसकी बुद्धि–चेतना घिर जाती है। ये प्रलोभन परिस्थितियों के मायाजाल के, लाभ के, लोभ के, पद के, प्रतिष्ठा के, रिश्वत–घूंस के, शॉर्टकट के होते हैं, मनुष्य की आत्मचेतना उसे रोकती है। मनुष्य उस दिव्य ध्वनि को अनसुनी करने के लाख प्रयत्न करे वह चेतना अपना काम करती रहती है। यही वजह है कि मनुष्य अपनें आपमें बुरा हो फिर भी वह भलाई की जयगाथा गाता है। वह भले ही दुष्ट हो, लेकिन जीत वह सज्जनों की चाहता है। पशुता के घटाघोप अंधःकार में, आंधी तूफानों में, विषम–विषमय परिस्थिति में मनुष्य के कर्मपथ पर देवत्व का प्रकाश बिखरा रहता है। यह प्रकाश उसके कदमों के घेरों को ही क्यों न प्रकाशित करता हो लेकिन सारी राह इसी वजह से जगमगा उठती है।

राम ने कहा कि युद्ध पशुता है, संस्कृति के विरुद्ध हैं। यह कहा कि 'सत्यमेव जयते' राम ने अपनी बात को, अपने आग्रह को सत्य से भरपूर और न्याय से परिपूर्ण होने की शर्त रखी। राम के निर्णय अंधेरे में प्रकाश की पहली शलाका थी। सत्य के पक्ष में असत्य के खिलाफ जो लड़ेगा वह जीतेगा। जीत उसके पक्ष में ही होगी।

कृष्ण के जीवन का घनघोर प्रश्न यह था कि युद्ध रूके कैसे! कौरव पाण्डव कटु परिस्थितियों के वात्याचक्र में फँसे एक–दूसरे के विरोध में मोर्चा जमाकर खड़े हो गए थें। शंख गूंजने लगें थे। पाण्डवों ने शर्त को पूरा किया कौरव राज्य लौटाने से मुकर गए, सत्य से हट गए, बेईमान हो गए और तो और युद्ध के लिए सन्नद्ध हो गए। कृष्ण युद्ध में शस्त्र नहीं उठाते हैं और युद्ध की पशुता से बचने–बचाने के यथासंभव प्रयत्न करते हैं। तब फिर जीत योगेश्वर कृष्ण और पार्थ की ही होती हैं।

राम ने युद्ध की पशुता को एक व्यापक उन्नत आधार देकर संस्कृति से जोड़ दिया, कृष्ण ने युद्ध की पाशविकता के साथ मधुर व्यवहार करने की एक नयी मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि निर्माण की फिर भी पशुता ज्यों कि त्यों बरकरार रहीं।

तब जन्मा एक क्रान्तदर्शी महामानव भगवान महावीर। उसने कहा कि पशुता मनुष्य को शोभा नहीं देती। हिंसा पशुता है और अहिंसा मानवता। अहिंसा परम धर्म है। मनुष्य के मनुष्यत्व की माँग है कि वह पूरा अहिंसक बने। 'जीवो जीवस्य रक्खणाए।' प्रत्येक जीव दूसरे जीव की रक्षा का पात्र होता है। संसार के युद्धों से थकी मानवता की यह एक नयी वाणी थी। नया आश्वासन था, नव्य बोध था।

भगवान महावीर के संबंध में आजकी दृष्टि का यह कोण हमें नयी राह दिखाता है।

महावीर के अहिंसात्मक चिंतन की आगे की कड़ी के रूप में अनेकांतवाद को मान्यता है। अनेकांतवाद या स्याद्वाद केवल चिन्तन–प्रक्रिया नहीं है, वह जीवनदर्शन नहीं है अपितु जीवनपद्धति या जीवनशैली (Way of life) है। इसके साथ मनुष्य का मन भी पूरी तरह अहिंसक बन सकेगा। 'ही' के स्थान पर 'भी' का प्रयोग पूर्ण सत्य की दिशा में अग्रसर होनेवाले साधक के लिए बल देनेवाला सूत्र है। 'मेरा ही उत्तम है कहने के अहंभाव से रहित होकर अगर 'उत्तम ही मेरा है।' ऐसा मानने लगे तो साधनामार्ग की राह अधिक सरल, तरल, प्रकाशमय बन सकती है। दुनिया का सत्य कभी परस्परविरोधी नहीं हो सकता। पानी का रासायनिक सूत्र (H_2O) सर्वत्र ही वही होगा। उसे एक वैश्विक सत्य की (Universal Truth) प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है।

भगवान महावीर कल की तिथि है। आनेवाला कल अधिक अटपटा, व्यामिश्र और अडचनभरा ऊगता दिखाई दे रहा है। उस समस्या में भगवान महावीर का जीवनदर्शन प्रकाश पुंज बनेगा और साधकों को तो साधकों को सामान्य मनुष्यों को भी मानवता के आश्वासन से भरपुर बना देगा।

कल का सत्य भगवान महावीर, आज की दृष्टि से देखने पर भी कल की निधि बनते हैं। यह कम आश्चर्यकारी तत्व नहीं है उनका मूल नाम वर्धमान तक आज प्रचार में नहीं है। लेकिन युद्ध के विरोधी, शांति के उपासक, आत्मा के प्रकाशक, अहिंसा के पुजारी भगवान महावीर बनो यह महावीर का पद कौनसा है? यह अंतर्द्वंदों से नितांत युद्धरत परिस्थितियों का प्रतिफलन है। साधक के जीवन में निरंतर जो समस्याएं उठती हैं उनसे उसका अंतर्मन मथा जाता है।

छोटी–छोटी प्रार्थनाओं में हम एकतान–तल्लीन नहीं हो सकते। ऐसे समय में राम की वाणी, कृष्ण की गीता, महावीर का संदेश कल की निधि बनकर सामने आते हैं। आनेवाले कल की सुरक्षितता के लिए मनुष्य अपने आज का होम देने के लिए तैय्यार–तत्पर है। आवश्यकता इतनी भी नहीं है आवश्यकता सहज इतनी है कि वह कल के सत्य स्वरूप को आज के परिप्रेक्ष्य में देख आनेवाले कल के लिए सुरक्षित कर लें।

☆ मननीय ☆

तिमिर गया रवि देखते, कुमति गई गुरु–ज्ञान।
सुमति गई अति लोभ से, भक्ति गई अभिमान।।

■ □ ■

दया धर्म का मूल है, पाप मूल सन्ताप।
जहाँ दया वहाँ धर्म है, क्षमा वहाँ है आप।।

■ □ ■

श्वास–श्वास में नाम ले, वृथा श्वास मत खोय।
ना जानो या श्वास को, आवन होय न होय।

क्या आप जानते हैं कि

- सन् १९५० में भारत का निर्यात विश्व मंडी में चार फीसदी था, पर आज वह घटकर सिर्फ ०.४४ फीसदी रह गया है ।
- प्रोटीन का प्रमुख स्त्रोत शाकाहारी भोजन ही है । मांस, मछली और अण्डों से प्राप्त होने वाले प्रोटीन भी परोक्ष रूप से शाकाहारी प्रोटीनों से ही प्राप्त होते हैं, जिन्हे ये स्त्रोत क्रमशः घास, समुद्र में उपलब्ध खाद्य पदार्थों और अनाज से प्राप्त करते हैं ।
- सभी तरह की दालें, अनाज, दूध व दूध से बने पदार्थ, सूखे मेवे, मूंगफली आदि प्रोटिन के भण्डार हैं ।
- आज के पढ़े-लिखे परिवारों में एक चलन हो गया है विटामिन की गोलियाँ खाने का । कुछ लोग ऐसा डॉक्टरों के कहने से करते हैं, तो कुछ अपने आप ही ऐसा शुरू कर देते हैं । यह बता देना जरूरी है कि कृत्रिम विटामिन (गोलियाँ) प्राकृतिक विटामिनों की जगह नहीं ले सकते ।
- पिछले कुछ दशकों में स्वाभाविक पेय पदार्थों के बजाय शीत पेयों का इस्तेमाल बढ़ा है । कृत्रिम सुगन्धों और रसायनों से युक्त ये पेय फायदे के बजाय नुकसान पहुंचाते हैं ।
- मांसाहारी लोगों को त्वचा की बिमारियाँ शाकाहारियों की अपेक्षा अधिक होती है । यह भी साबित हो चुका है कि खाद्यनलिका की बिमारियाँ, गुर्दे खराब होने की बिमारियाँ, कैंसर और दिल की बिमारियाँ भी मांसाहारी लोगों को अधिक होती हैं ।
- वैज्ञानिक अनुसन्धानों के बाद यह माना जाने लगा है कि मांसाहारियों के मुकाबले शाकाहारी लोग अधिक और निरोगी उम्र पाते हैं ।
- जहाँ शाकाहारी भोजन कम मसाले या बिना मसाले के ही सुस्वादु होता है, जबकि मांसाहारी भोजन में मांस की गंध दबाने के लिये मसालों और चिकनाई का अधिक उपयोग करना होता है । ये दोनों चीजें न मनुष्य के दिल के लिए अच्छी है न अन्य अवयवों के लिये ।
- अपने आप में प्राकृतिक पानी न पाने के कारण मांसाहारी भोजन कब्ज करता है, इसका असर आंतो पर पड़ता है, जबकि शाकाहार पानी और रेशेयुक्त होता है ।
- यह मानना गलत है कि महंगे खाद्यपदार्थ अधिक शक्तिदायक होते हैं । बादाम और मूंगफली में समान मात्रा में प्रोटीन होते हैं ।
- दूध कैल्शियम और प्रोटीन का मुख्य स्त्रोत है ।
- पहले हजार साल में जीवसृष्टि एक प्रजाति लुप्त होती थी, लेकिन आज पर्यावरण विनाश के कारण हर साल एक प्रजाति लुप्त हो रही है ।
- देश का ७० प्रतिशत जल संसाधन प्रूदषित हैं और देश में दूषित जल पीने से उत्पन्न बीमारी का प्रतिशत काफी ज्यादा है ।

— धर्ममित्र

अहिंसा : उच्चारण नहीं आचरण

श्री नरेन्द्रकुमार रायचंदजी – बागरा

जैनेन्द्र कुमार कहते हैं : "जैसे साधु की पहचान उसकी साधुता से हो सकती है न कि उसके वेष से, वैसे ही अहिंसा की पहचान आचरण से होती न कि कहने से। अहिंसा का मतलब इतना ही नहीं है कि हम किसी का बुरा नही चाहेंगे और नही करेंगे बल्कि हम हर किसी का भला सोचेंगे और भला करने के लिए आगे बढेंगे।"

अहिंसा क्या है ? :- अहिंसा जीवन दर्शन का तत्व है। उसकी उपयोगिता प्रांसगिक अथवा सामयिक नहीं बल्कि सर्वकालिन एवं सर्वदेशिक है। अहिंसा धर्म-ध्रुव है, नित्य है और सनातन है। जहाँ अहिंसा है, वहाँ अनुशासन है, अपरिग्रह है, संयम है, समता है और है विश्व-बन्धुत्व। अहिंसा धर्म है, यह धर्म अहिंसा शब्द का उच्चारण करने से गम्य नहीं होता, व्याख्या करने से व्यक्त नहीं होता और इस सम्बन्ध में अनेक ग्रंथ लिखने पर भी स्पष्ट नहीं होता। अहिंसा को तभी परखा जा सकता है, जब वह आचरण में आती है क्योंकि उसका सम्बन्ध प्राणवध न करने तक सीमित नहीं है। किसी भी प्राणी का प्राण-विनियोजन करते समय उसे जो पीड़ा होती है, उसका संवेदन कर अहिंसा से आत्मा को भावित कर लेना अहिंसा का सही स्वरुप समझना है। अहिंसा के दो रुप है, एक है निषेधात्मक अर्थात किसी को न मारना, किसी का दिल न दुखाना, दुसरा है विधेयात्मक अर्थात मैत्री-करुणा-समता-बंधुत्व। प्रेम ही अहिंसा का परम रुप है। अहिंसा का परिपाक ही सत्य है। ये दोनों अन्योन्याश्रित है। कोई व्यक्ति अहिंसक है और सत्यवादी नहीं ऐसा हो ही नहीं सकता।

हिंसा क्यों है ? :- महावीर ने कहा है कि जितने भी दुःख है, सब हिंसा से उत्पन्न हुए हैं। हिंसा तब बढ़ती है जब सामाजिक निरपेक्षता बढती है। समाज की आधारशिला है - सापेक्षता। व्यक्ति जब अपने स्वार्थ को मुख्य मान लेता है तब वह समाज के प्रति निरपेक्ष व्यवहार करने लगता है। इस स्थिति में हिंसा को उत्तेजना मिलती है। जब और जहाँ भी आग्रह पनपने का अवसर मिलता है, हिंसा की घुसपैठ शुरु हो जाती है। मानव के स्वार्थ और अहंकार ने घृणा, द्वेष, वैर एवं क्रूरता की फौज खड़ी कर दी, जिसने करुणा और प्रेम का रास्ता रोक दिया। मनुष्य ने अपने जीवन को समृद्ध, साधन-सम्पन्न, आरामदेह और गतिपूर्ण बनाने की धुन में जिस सभ्यता को स्वीकार लिया है, उसके तार हिंसा से, संहारक हिंसा से जुडे हुए हैं। स्वार्थ का उन्मुक्त प्रयोग, गलत-मूल्यों की स्थापना, अर्थ और सत्ता का केन्द्रीकरण, श्रम का अवमूल्यन, अनैतिकता का उत्कर्ष समाज में व्याप्त होने से धर्म का जो रुप हमारे सामने आता है, वह कई सवाल हमारे समक्ष एक साथ उपस्थित करता है।

१) क्या धर्म केवल निजी और वैयक्तिक वस्तु है ?

२) क्या धर्म केवल निरे वैयक्तिक मोक्ष-मार्ग का साधक है ?

३) क्या परिवेश और समाज समुदाय से उसका कोई सम्बन्ध नहीं ?

४) सत्य-अहिंसा-अचौर्य और अपरिग्रह क्या मूलतः ही विश्वसापेक्ष और समाजसापेक्ष नहीं है ?

५) क्या परिवेशगत चराचर सृष्टि और जनसमुदाय के साथ व्यक्ति का संबंध, व्यवहार ही उक्त धर्माचरणों की कसौटी नहीं है ?

धर्म : कितना निर्जीव, कितना दिखावटी :- वर्तमान युग में धर्म मात्र एक रुढि-निर्वाह होकर रह गया है । असत्य, हिंसा-चोरी-परिग्रह सब धर्म की सुन्दर वेशभुषा में सजकर प्रकट हो रहे हैं । अपने बाद के दूसरे मनुष्य या जीव के साथ हमारा कोई सम्वेदनात्मक जीवंत सरोकार नहीं है । कहाँ है हमारे भीतर की मानव मात्र और प्राणिमात्र के प्रति कोई ज्वलंत सहानुभूति, समानुभूति, अनुकम्पा, मैत्री करुणा ? कहाँ है हमारे भीतर सर्व के प्रति कोई सक्रीय आत्मोपम भाव ? कहीं ऐसा तो नहीं कि छोटी-छोटी हिंसाए तो हमने बचा ली और बड़ी-बड़ी विनाशकारी हिंसाओं से हम जुड़ते चले गये । हम श्रावकाचार के नाम पर सूक्ष्म एकेन्द्रिय स्थावर जीवों की दया पालते हैं, मच्छर तक को नहीं मारते, सूक्ष्म निगोदिया जीवों तक का जतन करते हैं पर सत्ता एवं सम्पत्ति के उपार्जन और संग्रह के लिए अनर्गल भाव से लक्ष-लक्ष मानवों का शोषण करते चले जाते हैं । गाय की हत्या पर जुगुप्सा हो सकती है पर चमड़े के व्यापार में करोड़ों की कमाई ठीक लगती है । हिंसा से जी घबराता है लेकिन उत्पादन और पूंजी के अमित केन्द्रीकरण से होनेवाली व्यापक/सूक्ष्म हिंसा प्रिय लगती है । हम बहुत ममता से गाय को घाँस खिला रहे हैं और पैर में लचीले कॉफ शू (बछड़े के मुलायम चमड़े से बने जूते) पहने हुए हैं । पीने का पानी छानकर लेते हैं मगर हमारे कारखाने का विषैला पानी मीलों तक मछलियाँ नष्ट किये जा रहा है । हम अनाज और भाजी के शोधन में लगे हैं पर हमारी कीटनाशक दवाईयों ने अरबों कीट-पतंगों को स्वाहा कर दिया है । हमने कभी जाना है कि जो सोना वीतरागी मूर्ति का छत्र बनकर शोभायमान है और हर परिवार के लिए श्री और समृध्दि का चिन्ह है, उसमें कितने मनुष्यो की हत्या शरीक है ? खबिज वैज्ञानिक के आंकड़े बोलते हैं कि औसतन एक तोला सोने के पिछे एक मनुष्य का बलिदान स्वर्ण खदानो ने लिया है ? अंग्रेजी में Chirist ने कहा है कि You can-not Serve both - God and Mammon (यह मेमोन धन का देवता है- कुबेर है) अर्थात प्रभु होंगे तो धन-कुबेर की सत्ता, ऐश्वर्य और छलयुक्त हिंसा नहीं होगी और जहाँ यह सब होगा वहाँ प्रभु का निवास नहीं होगा ।

महावीर का निःशस्त्रीकरण सिद्धांत : कितना सार्थक :- महावीर की अहिंसा का रुप नकारात्मक ही नहीं था । निषेध के साथ विधि के प्रवक्ता महावीर ने विश्वात्मा में निजात्मा का अनुभव किया । उन्होंने कहा कि आत्मतत्व सिर्फ स्वयं में नहीं बाहर भी है, लोकतत्व में भी सन्निहित है इसलिए सभी आत्माओं और पौढगात्मिक द्रव्य के प्रति समता का व्यवहार या व्यवहार का संयम करना ही अहिंसा का मूल आधार है । महावीर ने शस्त्र-निर्माण और शस्त्र व्यापार के सम्बन्ध में जो आचार-संहिता दी, वह अहिंसा के क्षेत्र में सम्भवतः उस समय भी प्रथम थी और आज भी प्रथम है । महावीर ने शस्त्र निर्माण में क्रियाशील भाव एवं उस आकांक्षा को, जो शस्त्रों

के निर्माण की मूलभूत प्रेरणा है, मिटाने पर जोर दिया। संयुक्त राष्ट्र-संघ द्वारा उद्घोषित स्वर "युद्ध पहले मनुष्य के मस्तिष्क में लड़ा जाता है फिर समरांगण में" महावीर द्वारा प्रतिपादित भाव शास्त्र की भाषा का ही पुनरुच्चारण है इसलिए महावीर के निःशस्त्रीकरण के सिद्धांत की सार्थकता एवं शाश्वतता आज फिर विश्व स्तर पर सिद्ध हो रही है।

हिंसा को जीतना हो तो मानव को अपना वर्तमान जीवन बदलना होगा। आधुनिक सभ्यता के जिस शिखर पर हम चढ बैठे हैं, वहॉ से उतरकर धरती पर पैर टिकाने होंगे। महावीर का नाम लेते हैं, उनके नाम पर मन्दिर और धर्मस्थानक खड़ा कर देते हैं, लड्डू बटवा देते हैं, पूजा-अर्चना कर लेते हैं अतः हम समझ लेते हैं कि हम बड़े अध्यात्मिक हैं, पुण्यात्मा हैं। मगर महावीर स्पष्ट कहते हैं "अगर मुझे पाना है तो हिंसा छोड़ो, परिग्रह छोड़ो और अगर परिग्रह चाहिये तो मुझे छोड़ो, दोनों एक साथ नहीं चल सकते।" जब तक व्यक्ति की अनियंत्रित अर्थलालसा तथा भोगेच्छा पर नियंत्रण नहीं होगा तब तक अहिंसा का समुचित विकास नहीं होगा। परिग्रह की आसक्ति को छोड़े बिना हिंसा का छोड़ना असंभव है। हाथ में अहिंसा और पैर में हिंसा दोनों साथ कैसे चलेंगे ? आपका अस्तित्व और मेरा वर्चस्व दोनों कैसे मेल खायेंगे ? आँखो में करुणा की पटरियॉ बिछानी होगी क्योंकि अहिंसा की जय-पताका लेकर हम कितना भी दौडे, नीचे तो पटरियॉ स्वार्थ और अहंकार ही की बिछी है। महावीर का कहना कितना सही है कि "अहिंसा का आदर्श हमारे आचरण में, अपरिग्रह का सस्पर्श हमारे व्यवहार में एवं अनेकान्त का उत्कर्ष हमारे विचार में होना चाहिये।" हम महावीर के अनुयायी हैं, हम चरित्र में करुणा और मैत्री का विश्वव्यापी संगीत संजोकर जीवन को सुन्दर फुलों की क्यारी बनाएं, उसे हथियारों और क्रूरताओं का प्रसूतिगृह क्यों बनाये ?

निश्चय ही आज के इस अणु-युग में परमाणु-शक्ति की भयंकरता से संत्रस्त समग्र मानव परिवार की सुरक्षा के लिए, सर्वग्रासी विनाश से बचने के लिए उस अहिंसा की नितान्त आवश्यकता है जो जीवन में बोल सके, जीवन में झांक सके, जीवन में चल सके। अहिंसा जैन धर्म द्वारा दिया गया मानव-जीवन के लिए मुक मंगलमय वरदान है। हमे अहिंसा को वाद-विवाद का विषय नहीं, आचरण का सिद्धान्त बनाना है।

शाकाहार कीजिये; तन-मन से स्वस्थ रहिए। पान मसाला - पान पराग 'केन्सर की है धीमी आग'

सव्वत्थ वि पियवयणं, दुव्वयणे दुज्जणे वि खमकरणं।
सव्वेसिं गुणगहणं, मंदकसायाण दिट्ठंता ॥

सर्वत्र ही प्रिय वचन बोलना, दुर्वचन बोलने वाले को भी क्षमा करना तथा सबके गुणों को ग्रहण करना-ये मन्दकषायी जीवों के लक्षण हैं।

"दिपावली महापर्व और भगवान महावीर"

- मुनि श्री हरिभद्रसागरजी म.

पचीशसो तेर वर्ष पूर्व एक पूंज प्रकाश तणो प्रगटयो,
जुग जुनो अंधकार विदारतो, भारत भाग्य रवि चमक्यो...

चरम तीर्थेश, विश्ववालेश्वर, त्रिलोकेश्वर, परमात्मा श्री महावीर देव ने भारत वर्ष के क्षत्रीयकुंड नगर नरेश सिद्धार्थ महाराज की महारानी त्रिशला की कुंख से जन्म लिया। ३० वर्ष की युवानवय में राज्यादि समृद्धि को त्याग कर "सविजीव करूं शासन रसी" की महान भावना के साथ, घोर साधना - तपश्चर्या और भयंकर उपसर्गों को सहन करते हुए अनादिकाल के कर्म शत्रु को पराजित कर केवल ज्ञान प्राप्त किया।

केवल ज्ञान द्वारा परमात्मा ने भरत भूमि पर ३० सालों तक अविरती और विचरण कर अमृतरस के समान उपदेश द्वारा अज्ञानी जीवों का उद्धार किया। चरम चातुर्मास परमात्मा ने अपापापुरी में किया। परमात्मा ने अंतिम समय में ४८ घंटों तक निरंतर उपदेश दिया। और वह अभागी पल आ गई। आश्विन अमावस्या की अंधेरी रात में परमात्मा महावीर देव ने मोक्ष की ओर पदार्पण किया। निर्वाण को प्राप्त हुए और चारों ओर अंधकार छा गया। परमात्मा लाखों - करोड़ों भक्तगणों, साधु-साध्वियों और देव-देवीयों को रूलाते, घाती - अघाति कर्मों को क्षय करके मुक्तिनगर में शाश्वत सुख पाने के लिए शीव-रमणी के पास चले गए। अजर अमर हो गए।

अविरत बहनेवाली देशना सहसा रुक गई। देव, मानव और साधु-साध्वीओं के मुखमंडल म्लान हो गए। अठारह देश के राजा भी चिंतातुर हो गये। अरे! और तो और प्रगति की गति ही मानो रूक गयी। झरनों का प्रवाह, नदी की गति, पंखीओं का चहकना सब कुछ रुक गया। दसों द्विशाएँ शून्य वन गयी। आबाल - वृद्ध सभी की आँखो से गंगा - जमुना बहने लगी। त्रिलोक का तारणहार अचानक देखते ही देखते जगत से अलविदा ले गया।

एंक तो काजल - सी अंधेरी रात... और उसमें भी भाव दीपक बुझ जाने के कारण सर्वत्र राजा और प्रजा ने भी द्रव्य दीपक का प्रज्वलन किया। बस, उसी दिन से पूरे भारतवर्ष में दिपावली का महान व सुनहरा पर्व प्रारंभ हुआ। और आज भी उस महापर्व की हम उपासना कर रहे हैं। भविष्य में भी हजारों सालों तक यह पर्वाराधना होती रहेगी।

परमात्मा के निर्वाण के कारण समस्त संघ शोकातुर हुआ, लेकिन अमावस्या के पश्चात अनंत लब्धि निधान गणधर श्री गौतमस्वामिजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। सभी आनंद विभोर हो गए। समस्त संघ नए वस्त्र पहनकर गौतमस्वामिजी को वंदन करने हेतु आए। उपदेश सुनकर सभी आपस में मिले। और इसी दिन से जगत में नूतन वर्ष का प्रारंभ हुआ। नूतनवर्ष के दिन सभी से मिलने और बड़ों से आशीर्वाद लेने का क्रम शुरू हुआ।

दिपावली व नूतनवर्ष का महत्त्व समझकर हम सब परमात्मा की आज्ञा के अनुसार आराधना और उपासना कर निर्वाण पद की प्राप्ति के लिए अनूठा प्रयास करें।

बोधकथा

स्थायी दान

अपने जन्मदिवस के शुभावसर पर माधवराव पेशवा दान कर रहे थे। अन्न एवं वस्त्र से लगाकर स्वर्ण तक उनके दान में शामिल था। किन्तु, एक ब्राह्मण ने इन वस्तुओं को अपनाने से इन्कार कर दिया। आश्चर्यचकित होकर पेशवा ने कारण जानना चाहा। उसने ब्राह्मण से प्रश्न किया, "क्या तुम्हे इससे संतोष नहीं हैं?"

ब्राह्मण ने जवाब दिया, "इन नाशवान वस्तुओं का मैं क्या करूँगा? मुझे स्थायी दान की आशा है।"

"अर्थात्", पेशवा ने कहा।

अपनी बात को जारी रखते हुये ब्राह्मण ने कहा, "स्थायीदान से मेरा मतलब विद्या से है।"

पेशवा ने इस कुमार को काशी विद्याभ्यास के लिये भेजा। यही कुमार आगे चल कर प्रसिद्ध न्यायाधीश रामशास्त्री हुआ।

✍ महेन्द्र.जे.संघवी.

'शाकाहारी बनिये'

मंगल जैन - कुणं
(राजस्थान)

ये क्या कर रहे हो?
माँस, मछली और अण्डा
खा रहे हो, यार।
जिनेन्द्र की जिनवाणी में
त्याज्य है यह सब
घृणित अभक्ष्य आहार।
आर्य पुरुष नहीं करते
माँस एवं खून का आहार
तब तुम कौन हो?
जो खा रहे हो
माँस, मछली, अण्डा।
ये क्या कर रहे हो?
माँस खाकर शरीर में
क्यूं करते उत्पन्न
कोढ़ जैसे भयंकर
हानिकर रोग।
दिखता शरीर तुम्हारा
राक्षस जैसा सचमुच
शुद्ध-शाकाहारी, संतुलित-
भोजन से ही
शरीर बनेगा
हृष्ट-पुष्ट, बलवान, निरोग।
गौतम-बुद्ध, महावीर भी
दे गये उपदेश में
"अहिंसा परमोधर्म" एवं
'जीओ और जीने दो' का
मूलमंत्र।
धर्म हमें
नहीं देता आज्ञा
मांसाहार की।
प्रकृति ने दी (हमें) पृथ्वी पर
सब प्रकार की जड़ी-बुटियाँ,
साथ में दिये
तरह-तरह के फलों से लदे
पेड़-पौधे।
खाओ तुम भरपेट
इन सब शाकाहारी पदार्थों को,
ये हैं तुम्हारे लिए
माँस से भी अधिक लाभप्रद।
भगवान महावीर एवं
महात्मा बुध्द भी
कह गये, कि -
"जो व्यक्ति दूसरों का माँस
खाता हैं, वह सचमुच
अपने पुत्रों का माँस
खाता है।"
अहिंसा का प्यारा सन्देश
जीवन में उतार लो
दया धर्म का पालन कर लो,
त्याग दो, सर्वथा
अभक्ष्य पदार्थ।
इसी में सबका मंगल हैं!!

❁ शाश्वत धर्म के ग्राहक बनाकर सम्यग्ज्ञान के प्रचार-प्रसार में सहयोग दीजिये। ❁

आलोक पर्व

- श्रमण सं. सलाहकार श्री रतनमुनिजी

दीप पर्व आलोक पर्व या की निर्वाण पर्व। जैन संदर्भ में इस पर्व का अपना एक अलग ही आध्यात्मिक महत्व है। यह पर्व महाविभूति भगवान महावीर के निर्वाण से जुड़ा हुआ है। मृत्यु संभवतः कुछ विषाद उत्पन्न कर सकती है किन्तु निर्वाण एक पर्व रुप ग्रहण कर लेता है। भगवान महावीर एक ज्योतिर्मय व्यक्तित्व थे। जब उन्होंने निर्वाण पाया तो वह ज्योतिर्मय व्यक्तित्व समय की धारा में विलुप्त हो गया परन्तु जन-जन में उनके निर्वाण की स्मृति स्थिर हो गई। इस स्मृति को सदा जीवंत रखने के लिये मानवों ने उस दिन दीप प्रज्ज्वलित किये और इस तरह कार्तिक अमावस्या का वह अंधियारे से परिपूर्ण अवसर अनन्य आलोक से दीप्त हो उठा।

भगवान महावीर के अप्रतिम व्यक्तित्व ने अपने मरण को एक रुप दिया या कहें वह दिवस स्वतः ही पर्व में ढला। कितना मन को हर्ष प्रदान करने वाला व्यक्तित्व था उनका। उन्होंने एक वर्ग विशेष की नहीं, उस समय स्थित सर्वजनों की मान्यता पाई। इसका कारण यह था कि महावीर ने जाति से नहीं कर्म से मनुष्य को जाना व अपनाया। वे किसी वर्ग के विकास के लिये नहीं, समस्त मानवता के विकास के लिये चिंतित रहे। उन्होंने मानव मात्र को योग्य जीवन जीने का नैतिक अधिकार दिया।

निर्वाण के कुछ समय पूर्व प्रभू ने पट्ट शिष्य इन्द्रभूति गौतम के मन में उठने वाले संशय को स्वतः ही प्रकट किया व स्वतः ही समाधान दिया। प्रभू ने प्रकट किया - ''गौतम तुम' सोच रहे हो कि मेरे बाद कोई जन नहीं रहेगा, मार्गदर्शन कौन करेगा?'' फिर स्वयं ही समाधान दिया - ''हे गौतम! यह शाश्वत जिनवाणी ही भविष्य का मार्गदर्शन करेगी'' गौतम के विमोह को पहले ही जानते हुए प्रभू ने निर्वाण की बेला में उन्हें अन्यत्र भेज दिया। फिर हरितपाल राजा की रज्जुग सभा में प्रवचन का प्रकाश देते हुए वे निर्वाण को प्राप्त हुए। उपस्थित राजाओं ने उस महान आत्मा की स्मृति में रत्नों की जगमगाहट से प्रकाश का विकीर्ण किया। सर्वत्र जगमगाहट फैल गई। २५०० से भी अधिक वर्ष पूर्व की वह जगमगाहट आज भी आलोक पर्व के रुप में प्रतिबिम्बित हो रहीं है।

भगवान महावीर के कथानुसार जिनवाणी ही जैन धर्मवलम्बियों का मार्गदर्शन कर रहीं है। एक तरह से अहिंसा, सत्य आदि का जो स्वरुप आज जहां कहीं पर प्रकट हो रहा है उसके मूल में जैन धर्म ही है। आधुनिक युग में महात्मा गांधी ने अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य को अपने माध्यम से प्रचारित किया उसके मूल में जैन धर्म है यह तो सर्वविदित ही है।

भगवान महावीर के निर्वाण पर्व को हम केवल एक परंपरा रुप न देकर उसमें निहित श्रेष्ठताओं को स्वीकारने में लगावें तो पर्व की सार्थकता होगी। पर खेद का विषय है कि हम स्मृति में लाकर भी उस विभूति को भुलाने की चेष्टा करते हैं। हम उनकी देन को व्यवहार

रुप देने की बजाय कहीं और व्यस्त है। जाने क्यों भगवान महावीर के बताये मार्ग पर चलकर सफलता पाने के प्रति हमारे मन में एक गहरा घाव पैदा हो गया है। उनके पांच महाव्रत व गृहस्थों के लिए उन्हीं का अणुव्रत रुप आज चाही जैसी श्रद्धा से नहीं देखा जा रहा है। यह एक बड़ी विडम्बना पूर्ण स्थिति है।

स्थिति जो भी हो पर्व को सार्थकता देना हमारा परमधर्म है अर्हत् ज्योति उस निर्वाण की बेला में सिद्धत्व ज्योति में परिणित हो गई। जब भाव उद्योत चला गया तो उसके स्थान पर प्राच्य उद्योत अर्थात बाह्य रुप से स्थूल प्रकाश प्रतीक रुप में किया जाने लगा। आज भी प्रज्जवलित होने वाला हर दीप ऐसा ही प्रतीत होता है जैसे वह भगवान महावीर के निर्वाण के उल्लास में ही ज्योतित है। दीपक का यह ज्योतित होना भगवान महावीर के ज्योतिर्मय व्यक्तितत्व की ओर ही जैसे संकेत करता है। इस मंगल अवसर पर हमें इस दिन को आध्यात्म दिवस मानकर आत्म विकास के लिये त्याग तपस्या के द्वारा इस पर्व की आराधना करना चाहिये। हमें इस दिवस को कषाय से मुक्ति का दिन मानना चाहिये तब आत्मा स्वयं एक अनूठे दिप का स्वरुप ग्रहण कर लेगी।

१ सितम्बर से ३० सितम्बर १९९२ तक शाश्वत धर्म के बनाए गए सदस्यों की सूची

सदस्य बनाने वाले का नाम	बीस वर्षीय	दस वर्षीय	तीन वर्षीय	कुंल सदस्य
श्री पारसमलजी मुथा - लोनावला	--	--	१८	१८
कार्यालय - थाने	--	१	११	१२
श्री किशोर पुनमिया	--	--	९	९
श्री जे. के. संघवी - थाने	१	--	८	९
श्री पदमचंद जैन - भरतपुर	--	--	८	८
श्री पारसमल सेठिया - नीमच	--	--	६	६
श्री शांतिलाल जैन - बाग	१	--	६	७
श्री मोहनजी - जोगेश्वरी	--	--	५	५
श्री कांतिलालजी भंडारी-राजगढ़-धार	--	--	४	४
श्री अशोक श्रीश्रीमाल - टाण्डा	--	--	१	१
श्री नीरज - सुराना	--	--	१	१
श्री राजेन्द्र चौधरी	--	--	१	१
	२	१	७८	८१

आपका पत्र मिला

अगस्त माह के अंक में सबसे अधिक प्रशंसनीय है आपका सम्पादकीय, मुनि श्री जयानंद विजयजी म. सा. का धारावाहिक श्री कुन्थुनाथ जिन स्तवन का अर्थ सहित विवेचन अत्यंत सराहनीय है।

- सन्तोष मामा - राजगढ़ (धार)

रुकिये ! पढ़िये !! सोचिये !!!

- रासायनिक उर्वरकों के इस्तेमाल से पैदावार लगातार बढाई जा सकती है - यह वैज्ञानिक धारणा भी मिथ्या सावित हुई हैं। आकड़े वताते हैं कि एक किलोग्राम रासायनिक खाद डालने पर १९६० के दशक में जितनी पैदावार होती थी, १९७० के दशक में उससे कम होने लगी। पंजाब के सबसे अधिक उपज देनेवाले लुधियाना जिले में ८५.३ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से रासायनिक खाद डालने पर १९७०-७१ में जहाँ ३२७९ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर गेहूँ की पैदावार हुई वहीं १९८०-८१ में रासायनिक खाद की यह मात्रा दुगनी अर्थात १६२.५ किलोग्राम प्रति हेक्टेयर करने पर पैदावार केवल ३१६३ किलोग्राम रह गई। स्पष्ट है कि अधिक मात्रा में रासायनिक खाद देने पर एक सीमा के वाद पैदावार में विशेष बढ़ोतरी नहीं हो पाती। मगर फिर भी रासायनिक उर्वरकों का व्यामोह फैलाने में हमारे संचार माध्यम दिन-रात एक किए हुए है।
- विश्व में रासायनिक कीटनाशकों के आधे से अधिक कारोवार पर केवल १० वहुराष्ट्रीय कंपनियों का वर्चस्व है। ये इन कीटनाशकों के खिलाफ दुनिया भर के स्वास्थ्य संगठनों, पोषण विज्ञानियों, पर्यावरणवादियों और विष-विशेषज्ञों की चेतावनियों को धत्ता बताकर अपने कारोवार के विस्तार मे लगी है। इनके कीटकनाशकों ने कुछ नए किस्म के कीट, खरपतवार और फफूंदी पैदा की हैं। जिससे भारत में हर साल फसलों को ६००० करोड़ रुपए से ज्यादा का नुकसान हो रहा है। कीटनाशकों के बेहताशा इस्तेमाल से खेती की लागत तो बढ़ी ही है, साथ ही लाभदायक कीटों के नष्ट होने और पर्यावरण को पहुँचने वाले नुकसान अकृत है।
- दिशाहीन हो चुकी शिक्षा दिन-ब-दिन इतनी महंगी होती जा रही है कि आम आदमी को अपने बच्चों को पढ़ाना आसान नहीं है। कस्वों, नगरों, महानगरों में पब्लिक स्कूल रूपी दुकानें धंधेबाजों के व्यावसायिक केन्द्र हो गए हैं।
- आंकड़ों की खेती और जमीन की खेती के वीच फर्क को जव तक हमारे कृषि नीति नियंता ईमानदारी से नहीं स्वीकारेंगे तब तक हवाई लक्ष्यों से वे फाइलों का पेट बेशक भर लें, देशवासियों का पेट नहीं भर सकते। देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ आज भी कृषि ही है, मगर लगातार अशक्त और जर्जर बनाई जा रही यह रीढ़ भी आखिर कव तक बढ़ते पेटों का भार उठा पाएगी।
- स्टेनफार्ड विश्वविद्यालय अमेरिका के अन्वेषण के अनुसार बारह किलोमीटर प्रति सप्ताह पैदल चलने से मृत्यु के खतरे २१ प्रतिशत कम और ४०-४५ किलोमीटर प्रति सप्ताह पैदल चलने से लगभग १० प्रतिशत रह जाते हैं।
- दो मिनट में तैयार होनेवाले फास्ट फूड के पैकेटों, आलू चिप्स के पैकेटों और विदेशी कम्पनियों द्वारा तैयार कोल्ड ड्रिंक्स की बोतलों का भारतीय बाजार में बोलबाला है जिससे

भारतीय अर्थतन्त्र लगातार बदहाली और आर्थिक गुलामी की ओर बढ रहा है।

☛ पानीपत के नेशनल फर्टिलाईजर्स लिमिटेड में अमोनिया गैस रिसने से एक बार फिर साबित हो गया है कि हमने भोपाल गैस कांड से कोई सबक नहीं लिया और जितने भी रासायनिक कारखाने हैं सभी गैस चेम्बर की तरह है। कभी भी इनमें विस्फोट हो सकता है और लोगों का दम घुट सकता है।

☛ वर्तमान सरकार को तरक्की का एक मात्र रास्ता बड़े उद्योग ही नजर आ रहा हैं। लाल किले की प्राचीर से स्वाधीनता दिवस के दिन भी श्री राव ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यहाँ के उद्योगपतियों को और उद्योग खोलने का आव्हान किया। अभी जब सरकार की नजर में कम उद्योग है, तभी कहीं अमोनिया, कहीं ओलियम और कहीं मिथाईल आईसोसाईनेट रिस रही है तो बाद में पता नहीं क्या होगा ?

☛ एक साथ ज्यादा गैस रिसने से लोगों को पता चल जाता है, पर किसी भी बड़े रसायन से संबंधित कारखाने की चिमनी से लगातार थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कोई न कोई रसायन प्रायः रिसते ही रहते हैं, जिनमें कई विस्फोटक हैं, कई कैन्सरजनक और कई जहरीले। ये धीमे जहर का काम करते हैं।

☛ रियों के सम्मेलन में जाकर भाषण देना आसान है पर यहाँ की जर्जर हुयी व्यवस्था को सुधारना मुश्किल। तेजी से विकास का रास्ता जो हम अपना रहे हैं, उसमें आगे अंधेरा ही अंधेरा है। भोपाल गैस कांड के बाद छोटी-छोटी घटनाओं को लें तो इनकी संख्या सैकडों में होगी। ----- **मुसाफिर**

एलोपैथी में अभक्ष्य दवाइयाँ एवं विकल्प

ट्रेड नेम (व्यापारिक नाम)	इन्ग्रीडिअँट (संघटक)	उपयोगी	आल्टरनैटिव (विकल्प)
१. एल्वीजाइम (टेब्लेट)	पैंक्रिएटिन	पीलिया	लिवोर्ब लिक्विड)
२. फेस्टाल	पैंक्रिएटिन	यकृत-निष्क्रियता	स्टिमुलिव (लि.)
३. रिपोसोन	लिव्हर एक्स्ट्रेक्ट	-"- -"-	सोर्बीलिन (लि.)
४. पेंक्रियोफ्लेट	-"- -"-	-"- -"-	हेपासल्फोल
५. पेंक्रियोफ्लेट	-"- -"-	-"- -"-	सिनेथिओनिन
६. मर्केन्जाइम	पैंक्रिएटिव	-"- -"-	सिनेथिओनिल
७. बायर्स टॉनिक	लिव्हर फ्रेक्शन	भूख कम होने पर	हेमीफोस
८. जे. पी. टोन	लिव्हर एक्स्ट्रेक्ट	-"- -"-	केनीटोन
९. लिवोजिन	लिव्हर फ्रेक्शन	-"- -"-	सिप्लेटिन
१०. सिक्सेप	लिव्हर फ्रेक्शन	-"- -"-	वीटाहेक्स्ट या रेनबेक्सीज टॉनिक

'जीववन्धु' से साभार

मासिक धर्म का (M.C.) पालन क्यों करना चाहिये ?

– मुनि श्री गुणसुन्दरविजयजी

- मासिक अटकाव (M. C.) वाली स्त्रियों का –
  * मुह देखना, * स्पर्श करना, * उनके आसन पर बैठना, * उनके साथ चीज–वस्तु का आदान–प्रदान करना, * उनके साथ संसार–सुख भोगना आदि का पवित्र आर्य शास्त्रों में निषेध है।

- ऋतुवंती (M. C.) वाली स्त्रियों को –
  * घर का काम करना, * इष्ट देव को वन्दन करना – पूजा करना, * साधु–सन्तों को भिक्षा देना, * सूती कपड़े पर बैठना, * शास्त्र–स्वाध्याय करना, * नदी, तालाब, सरोवर आदि स्थलों पर स्नान करना, * बच्चों को स्तन–पान करवाना, * अनाज, आचार, पापड़, आदि का स्पर्श करना आदि का पूर्व महर्षियों ने निषेध किया है।

- पूर्व पुरुषों ने यह भी बतलाया है कि जिस घर में मासिक–धर्म का पालन नहीं होता है, उस घर से भाग्य–लक्ष्मी चली जाती है।

- इसके अलावा बाईबल (Old Testament) यहूदी धर्म के पैगंबर पारसी–धर्म के ग्रंथ ''खोंर–देह–अवस्था'' इस्लाम धर्म का ग्रंथ ''कुराने–शरीफ'' आदि अलग–अलग धर्म शास्त्र भी (M. C.) पालने के बारे में विविध मार्गदर्शन देते हैं।

- प्राचीन वैज्ञानिक प्लीनी, युरोप के प्रसिद्ध डॉ. सीकम, वैज्ञानिक डॉ. यीसीफ, डॉ. बिशक, अमेरिका की प्रसिद्ध जॉन होपकिन्स विश्‍व–विद्यालय की प्रयोगशाला ने भी मासिक धर्म न पालने से अनेक नुकसान होते हैं यह वैज्ञानिक पद्धति से सिद्ध किया है।

- देश–विदेश की धरती पर भी (M. C.) पालन का महत्त्व है। अफ्रिका के कोंगो नदी के किनारे पर रहनेवाली स्त्रियाँ, ओरिनोको और साउथ–सी–आर्यलेंड की स्त्रियाँ, (Latin America and Iryaland) न्युजीलेंड की औरतें, लेबनोन – देश की किसान–स्त्रियाँ जर्मनी, फ्रान्स, सिरिया, इटली (Maxico) साथगोन, इग्लेण्ड की वेसेज और वेस्टेज नामक जगह की स्त्रियाँ, अमेरिका (U. S. A.) की कई जातियों की औरतें, जापान की औरतें, नाईजिरिया की महिलायें, चीन की बौद्ध धर्म की नारियाँ, नेपाल की ब्राह्मण औरतें, भूतान–सिक्किम तथा तिब्बत की स्त्रियाँ, दक्षिण मिझनापुर की औरतें, दक्षिण–भारत के नैयर जाति की हिन्दू–स्त्रियाँ, जैन धर्म की बहनें, साध्वियाँ – एक या दूसरी रीति से ऋतु–धर्म के पालन के बारे में अच्छी तरह जानती हैं एवम् अलग–अलग ढंग से पालन करती हैं।

- आज भी कई जगहों पर वड़ी, पापड़, आचार आदि बिगड़ जाने के भय से लोग (M. C.) वाली औरतों को इनसे दूर रखते हैं।

- कई सर्जन, डाक्टर भी ऋतुवंती स्त्री–डाक्टर और स्त्री नर्सों को आपरेशन थियेटर में आने नहीं देते।
- ऋतुवंती (पुष्पवती) स्त्रियों के स्पर्श से नुकसान होता है। यह जानकर कई मदिरा, रेशम और शक्कर के कारखानेवाले ऐसी स्त्रियों को अपने यहाँ काम करने के लिये नहीं आने देते।
- (M. C.) वाली बहनें ७२ घण्टे के बाद गृहकार्य करने के लिये योग्य होती हैं।
- गृहस्थी बहनों को शरीर शुद्धि हो तो पाँचवें दिन इष्ट देव की पूजा कर सकती है।
- मानसिक शुभ–भावनायें, शुभ–विचार, शुभ–चिंतन, मानसिक इष्ट–देव स्मरण, शरीर की कोई भी अशुचि अवस्था में भी हो सकती है। इसलिये (M. C.) वाली औरतें यह कर सकती हैं। और विशेष रूप से करने जैसा भी है।

अध्ययन की कुंजी

ज्ञान का अन्त नहीं है, वह अनन्त है। जीवन सीमित है। पढ़ना आवश्यक है, पर कहाँ तक पढ़े? कितना पढ़े? क्या क्या पढ़े? जिसका मन पढ़ने में नहीं लगता, वह क्या करे? जो कम से कम पढ़ना चाहता हो वह क्या पढ़ें? कौन सा विषय उसके जीवन में काम आ सकता है?

इन प्रश्नों का उत्तर निम्नलिखित श्लोक में मिलता है –

यद्यपि बहु ना धीषे, तथापि पठ पुत्र! व्याकरणम्।
स्वजनः श्वजनो माऽभूत, सकलं शकलं सकृच्च शकृत्॥

एक पिता अपने पुत्र से कहता है – ''हे पुत्र! यद्यपि तू अधिक न पढ़ सके, तो भी व्याकरण तो अवश्य पढ़ना जिससे स्वजन श्वजन नहीं होगा, सकल शकल नहीं होगा और सकृत शकृत्, नहीं होगा।''

स्वजन का अर्थ है पारिवारिक मनुष्य और श्वजन का अर्थ है कुत्ता। सकल का अर्थ है सम्पूर्ण और शकल का अर्थ है टुकड़ा। उसी प्रकार सकृत का अर्थ है अच्छा कार्य और शकृत् का अर्थ है विष्ठा।

शब्द के अशुद्ध उच्चारण से शब्द का अर्थ बदल जाता है और कभी–कभी अनर्थ भी हो जाता है। व्याकरण सब शास्त्रों की कुंजी है। उच्चारण शुद्धि के लिए व्याकरण का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए हर व्यक्ति को कम से कम व्याकरण का अध्ययन तो अवश्य ही करना चाहिये।

संकलन – श्री गौतम जैन (विजयवाड़ा)

सरेराह चलते-चलते

❋ **यह कैसा सरकारी न्याय ?** - आयकर विभाग की एक सुचना के अनुसार आवक में कटौती हेतु भरी गयी रक्कम के सबूत की रसीद यदि रिटर्न भरते समय न जोडे हो तो पिछे से वह सबुत मान्य नहीं किया जायेगा। करदाता के पास से उसकी भूल का हक छिन लिया गया है। परन्तु आयकर विभाग पिछले वर्षों की जॉच कर सकता है। - यह कैसा सरकारी न्याय ?

❋ **छुट्टियॉ मनायें** - किसी राजपुरूष या नेता का मृत्युदिन या कोई न कोई बहाना बनाकर छुट्टियाँ मनायें एवं उनकी समाधि के नाम सेकड़ों एकड़ जमीन फालतू रोक लें, भले ही देश में कई लोगों को रहने के लिये छोटी सी जगह भी उपलब्ध न हो। इस प्रकार महापुरूषों के तप त्याग, सादगी आदि जीवन मूल्यों को आचरण में न उतारकर मात्र छुट्टियॉ मनाने या स्मारकों की रचना का उल्टा क्रम हमारे देश में चल रहा है।

❋ **वर्तमान शिक्षा पद्धति** - वर्तमान में मैकाले की शिक्षा प्रणाली का एक मात्र लक्ष्य ऐसे गुलामों की एक मात्र फौज तैयार करना है जिसकी न तो कोई राष्ट्रीय दृष्टि हो, चिन्तन हो और न भारतीय समाज और संस्कृति से उनका कोई सरोकार हो, वे तो बस अपने पेट भरने से ही मतलब रखते हों।

❋ **एक कटु सत्य** - दुर्भाग्य की बात है कि पिछले तीन दशकों के दौरान कृषिविभाग की भूमिका बीज, उर्वरक या कीटनाशक बनानेवाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों और उनके सूत्रधार पश्चिमी देशों के दलालों जैसी रही है, जिनका मकसद कृषि या किसानों का नहीं, केवल कम्पनियों का हित साधना है। यह निष्कर्ष कटु भले ही लगे लेकिन इसे बाकायदा तथ्यावर सिद्ध किया जा सकता है। आखिर क्यों जानते-बुझते हुए भी उन बीजों, कीटनाशकों और उर्वरकों को अपने किसानों के आगे परोस दिया जिन्हें स्वयं इनके जन्मदाता देशों में निषिद्ध किया जा चुका था।

❋ **हरित क्रांति एक धोखा** - हरित क्रांति से पूर्व तक भारत में धान की लगभग ५० हजार किस्में थीं, पर आगामी कुछ वर्षों में इनके पचास किस्मों तक सीमित रह जाने की आशंका है।

❋ **भारत सरकार और व्यापार** - हमारी सरकार ने प्रति टन ९५ डॉलर के भाव से अर्थात् २४० रूपये क्विंटल के भाव से छः लाख ५० हजार टन गेहूं को निर्यात कर प्रति टन १९४ डॉलर के भाव से पुनः आयात किया है, इसमें भ्रष्टाचार की गंध आना स्वाभाविक है।

❋ **म. गांधी के इस देश में** - अपने देश में कितने ऐसे होटल हैं, जिनमें कुर्ता धोती पहनकर प्रवेश करना वर्जित है। क्या यह भारत में ही भारतीयता का अपमान नहीं है। आज भारतीय संस्कृति मूल रूप को खोती जा रही है तथा अंग्रेजी कल्चर दिनों दिन काबिज़ होता जा रहा है। अश्लील फिल्में, घिनौने विज्ञापन, नशाखोरी और फैशन के नाम पर नग्नता क्या-क्या नहीं हो रहा है, गांधी के इस देश में।

❋ **जेलों की दुर्दशा** - लखनऊ जेल से चार आतंकवादियों की फरारी के बाद बिहार में तेनूघाट जेल से ९० कैदियों के भागने की बात सामने आयी है। इन घटनाओं ने हमारे जेलों की दुर्दशा एवं वहाँ के सुरक्षा व्यवस्थाओं की पोल खोल दी है। ऐसा लग रहा है कि भ्रष्टाचार, अव्यवस्था एवं दुर्दशा ने अपराधियों को सुधारने के इन केन्द्र को भी अपराधों के अड्डे बना दिए है।

❋ **आयोडिन युक्त नमक** - सामान्य नमक एक रूपये प्रति किलो मिलता है। जब कि आयोडिन युक्त नमक के नाम पर तीन से पांच रूपये प्रति किलो वसूले जा रहें हैं। गौर तलब है कि एक किलो नमक को आयोडीनयुक्त बनाने पर केवल १५ से २० पैसे खर्च आता है। इस तरह आयोडिन मिले नमक के धंधे में साल भर में उद्योगपतियों को ८५० करोड से ज्यादा का मुनाफा होता है।

❋ **तेरी भी चुप मेरी भी चुप** - स्वतंत्रता के बाद देश के गरीब वर्ग को उंचा उठाने के बहाने पंचवर्षीय योजनायें कितनी कामयाब हुयी है एवं वास्तव में देश को उसका कितना हिस्सा मिला है या खर्च हुआ है उसकी निष्पक्ष जांच जरूरी है। सरकारी तंत्र में छोटे से छोटे क्लर्क या चपरासी से लेकर बड़े बड़े पदों पर बैठे पदाधिकारी या नेता येन केन प्रकारेण अपनी तिजोरियाँ भरने में लगे हुए हैं, फिर कौन किसको कहे? अब तो इस प्रजातंत्र में बड़े राजकीय पक्षों को भी गुंडो की मदद लेकर चुनाव जीतने के लिये मजबुर होना पड़ रहा है।

❋ **दोगली शिक्षा नीति** - सरकार द्वारा एक तरफ तो **प्रौढ़शिक्षा** अभियान द्वारा करोड़ों रूपये खर्च किये जा रहे हैं वहीं दूसरी तरफ शिक्षा इतनी महंगी होती जा रही है कि आम व्यक्ति अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाने की कल्पना भी नहीं कर सकता। प्रतिवर्ष फीस एवं पुस्तकों के मूल्य में अपार वृद्धि हो जाती है। जहाँ आज साधारण या मध्यम परिवार को रोटी कपड़े और मकान की व्यवस्था करने में ही दम भर जाता हो वहाँ महंगी उच्च शिक्षा वह अपनी सन्तानों को कैसे दिलवा सकता है। - **प्रवासी**

★☆★☆★☆ तो कितना अच्छा होता! ☆★☆★☆★

मानव के कानों में कोयल की कर्णप्रिय आवाज पड़ी तो उसने कोयल से कहा, "अगर तुझमें कालापन न होता तो कितना अच्छा होता।"

गुलाब की मदमाती सुगंध से तृप्त होकर **मानव ने** उससे कहा, "गुलाब! अगर तुझमें काँटे न होते तो कितना अच्छा होता।"

चारु चंद्र की चंचल किरणें जल, थल पर खेल रहीं थी। चन्द्र को इंगित कर मानव बोला, "काश! इस पर दाग न होता तो कितना अच्छा होता।"

अथाह सागर से लाभान्वित होकर मानव ने उससे कहा, "हे रत्नाकर! अगर तेरा पानी खारा न होकर मीठा, मधुर होता तो कितना अच्छा होता।"

मानव की पर दोष दृष्टि देखकर कोयल, गुलाब, चन्द्र और सागर ने उससे कहा, "हे मानव! अगर तुझमें दोष दृष्टि न होती तो कितना अच्छा होता।"

● **महेन्द्र जे. संघवी**

एक छिद्र-अनेक अनर्थ

बोध कथा

-श्री कन्हैयालालजी बोरदिया

एक बार राजा भोज अपनी मित्र मंडली के कारण मद्यपान की ओर आकर्षित हुए । राज्य के हितचिन्तकों को चिन्ता होने लगी । राजा सुरा और सुन्दरी के पीछे प्रजा का हित भूल जायगा ।

उनके राजदरबार में नवरत्न थे, उनमें महाकवि कालिदास भी थे । जब उन्होंने राजा भोज की ऐसी दुर्दशा देखी तो बड़े दुःखी हुए । उन्होंने चिंतन किया कि राजा का एक छिद्र अनेक छिद्रों को जन्म देगा-एक दुर्गुण के साथ अनेक दुर्गुण पैदा हो जायेंगे, राज्य व्यवस्था कुचक्र में फंस जायेगी । अतः महाकवि कालिदास ने राजा भोज को मद्यपान से विरक्त करने का दृढ़ निश्चय किया ।

एक दिन कालिदास बौद्ध-भिक्षुक का वेश बनाकर तथा ऐसी गूदड़ी ओढ़कर राज्य-सभा में गए जिसमें अनेक छिद्र थे । राज्यसभा में मंत्रीमंडल के साथ राज्य कार्य पर चर्चा चल रही थी । बौद्ध भिक्षुक को अचानक राज्य सभा में देखकर सभी आश्चर्यचकित हो गए और उपहास से राजा भोज बोले–

अरे, भिक्षुराज ! तुम्हारी कंथड़ी तो बड़ी अजीब लग रही है । इतनी जीर्ण और हजारों छिद्रों वाली गूदड़ी ओढ़कर राज्यसभा में कैसे आ गए ?

भिक्षुक (हँसते हुए)–राजन ! यह कंथड़ी नहीं है । यह मछली पकड़ने का जाल है । इसे देखकर आप समझे नहीं ?

राजा–मछलियां पकड़ने का जाल है ? क्या तुम मछलियां पकड़ा करते हो ? राजा ने आश्चर्यपूर्वक कहा ?

भिक्षुक– हाँ राजन् ! मछलियां नहीं पकड़ूँ को फिर खाऊँ क्या ?

राजा– क्या तुम मछलिया भी खाते हो ?

भिक्षुक–जी हाँ, हुजूर ! मछलियाँ भी खाता हूँ क्योंकि मैं शराब पीता हूँ । शराब पीने वाले को मांस भी तो चाहिए ।

राजा (आश्चर्यपूर्वक)- तुम शराब पीते हो, मांस खाते हो क्या यह भिक्षु का कर्त्तव्य है ?

भिक्षुक–पर महाराज ! मैं वेश्याओं के साथ रहता हूँ । वहाँ तो बिना मांस-मदिरा के कुछ आनन्द नहीं आता ।

राजा-ओह ! भिक्षु होकर वेश्यागमन ? मांस और मदिरा का प्रयोग ? तुम कैसे भिक्षु हो ? सबके लिए आखिर तुम्हारे पास धन कहाँ से आता है ?

भिक्षुक–धन प्राप्त करना कौनसी बड़ी बात है ? राजन् ! मैं दिन में जुआ खेलकर पैसा बना लेता हूँ और रात को चोरी करके धन लाता हूँ । फिर आप ही बताइये, धन की क्या कमी रह सकती है, मेरे पास ।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

दीपावली आयी

- श्री जिनेन्द्र मुनि "काव्यतीर्थ"

दीवाली आई नई, लाई नया प्रकाश।
जले बिना कैसे पले, फले आत्म-विश्वास॥

देख रमा का आगमन, पूजन और उजास।
हुआ अमा के अंग से, अन्धकार का नाश॥

उदासीनता भाग गई, ले आलस को साथ।
दीप पर्व की हो रही, प्रफुल्लता से बात॥

मिठाइयों की हो रही, मन भर कर मनुहार।
मीठे बनने के लिए, कहता है त्यौहार॥

झुको रुको क्षण-भर भले, दीप पर्व पर आप।
पुण्य प्रसादी बांट दो, मन का मेल मिलाप॥

इसी निशा में वीर का, कहते परि निर्वाण।
जपी तपी साधक करे, नवजीवन निर्माण॥

विजय आतमा राम की, विक्रति रावण नाश।
शिवरमणी सीता मिले, उद्यम करे उजास॥

दीप पंक्तियाँ दे रही, जग को नव सन्देश।
सम्प बढ़ाओ नेह से, सुखी रहे सब देश॥

'मुनि जिनेन्द्र' आलोक से, आलोकित हो लोक।
सदा काल लगती रहे, रोग-शोक पर रोक॥

अगर

- मुनि क्षमासागरजी

उसने सोचा
जब वह पहली बार
नीड़ से बाहर
पैर रखेगा
तब कोई आ कर
उसे थाम लेगा
आँचल से लगा कर
दुलार लेगा
पंख सहला कर
उसे उड़ने का साहस देगा
दो-चार कदम
उसके साथ चलेगा
पर हुआ यह
कि उसने
न पैर बाहर रखा
न पंख खोले
न उड़ा
सोचता ही रहा
अगर ऐसा न हुआ
तो क्या होगा?

ज्ञानकसौटी १९ के उत्तर

(४५१) वसुमति, (४५२) वरकनक, (४५३) वस्तुपाल, (४५४) वरुण, (४५५) वज्रस्वामी, (४५६) वज्रधर, (४५७) वसंत-पंचमी, (४५८) वट, (४५९) वर्धमान-तप, (४६०) वराह, (४६१) वसुभूति, (४६२) वज्रऋषभनारायण, (४६३) वरुण, (४६४) वसुपाल, (४६५) वसुन्धरा, (४६६) वस्त्र, (४६७) बड़ाकल्प, (४६८) वर्धमान, (४६९) वरकाणा, (४७०) वर्धमान, (४७१) वर्तमान जोग, (४७२) वल्लभीपुर, (४७३) वज्रांकुशी, (४७४) वल्लभीपुर, (४७५) वल्कलचिरि

समाचार दर्शन

श्री राजेन्द्रसूरि कीर्ति मंदिर - भरतपुर में निर्माणाधीन धर्मशाला का खात मुहूर्त सम्पन्न

भरतपुर - पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की प्रेरणा से श्री राजेन्द्रसूरि जैन कीर्ति मंदिर ट्रस्ट के तत्वावधान में निर्माणाधीन धर्मशाला का नींव मुहूर्त ११ अक्टूबर को सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री आर. एस. कुम्मट सा. (राजस्व सचिव-राजस्थान सरकार) विशिष्ट अतिथि श्री आर. मोहन सा. (निदेशक विज्ञान एवं प्राद्योगिक, राजस्थान सरकार) पधारे थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री एस. एन. थानवी सा. (जिलाधीश - जयपुर) ने की।

सुरत में उपधान तप प्रारंभ

सुरत - पू. राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी आदि ठाणा की निश्रा में उपधान नगर, संध्या दर्शन एपार्टमेन्ट, भुलका भवन के सामने, अड़ाजण रोड़ पर आसोज सुदि ७ दि.३-१२-९२ से भव्य उपधान तप का प्रारंभ हो गया है। जिसमें १६० भाई-बहन आराधना का लाभ ले रहे हैं। उपधान तप की पुर्णाहुति मालारोपण कार्तिक वदि ११ दि.२०-११-९२ को होगी।

सर्वधर्म समभाव के अनोखे प्रतिक महाविदेह तीर्थधाम में प्रतिष्ठोत्सव

सूरत कामरेज चार रास्ता हाइवे पर दादा भगवान ट्रस्ट द्वारा निर्मित श्री महाविदेह तीर्थधाम में प्रतिष्ठा मगसर सुदि ६ सोमवार दि. ३० नवम्बर को राष्ट्रसन्त, साहित्य मनीषी जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में सम्पन्न होगी। इस अवसर पर देश-विदेश से बड़ी संख्या में भक्तजनों के आने की संभावना है। ट्रस्टी श्री प्रकाशभाई के अनुसार भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री शंकरदयाल शर्मा का भी उपरोक्त प्रसंग पर उपस्थित रहने का अनुमान है। उसी दिन तीर्थ परिसर में शिवालय व कृष्ण मंदिर की प्रतिष्ठा भी होगी।

सुरत में अग्यारह दीक्षाएं होंगी

राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में मगसर सुदि ११ को ३ भाई एवं ८ बहनें भागवती प्रवज्या अंगीकार करेंगी।

पूज्य जैनाचार्य जयंतसेनसूरीश्वरजी की निश्रा में आयोजित होनेवाले संभवित कार्यक्रम

पूज्य आचार्य भगवंत की निश्रा में सुरत में अभी उपधान तप चल रहा है। मगसर सुदि ६ को महाविदेह तीर्थधाम में प्रतिष्ठा व मगसर सुदि ११ को ११ भाई-बहनों को संयम प्रदान कर आप बम्बई की ओर विहार करेंगे। पोष सुदि १ के आसपास बम्बई पधारने की संभावना है। यहाँ गुरूदेव श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरीश्वरजी की जन्म स्वर्गारोहण तिथि पोष सुदि ७ (गुरुसप्तमी) का वृहद् आयोजन आपकी निश्रा में होगा। विलेपार्ला में गुरू मंदिर का उद्घाटन आदि उपनगरों में कई आयोजनों के पश्चात् आप थाने तीर्थ होकर भिवंडी, कल्याण, मोहने में आयोजित कार्यक्रमों को निश्रा प्रदान करेंगे। तत्पश्चात् थाने के मानपाड़ा में आपकी निश्रा में माह सुदि १३ शुक्रवार दि.५.२.९२ को श्री शांतिनाथ जिन मंदिर की प्रतिष्ठा व तप उद्यापन सम्पन्न होगा। पूज्य श्री की निश्रा में लोनावला, पुणे, वाई आदि में कार्यक्रमों के पश्चांत् जेठ सुदि ११ सोमवार दि.३१.५.९२ को नेल्लोर में प्रतिष्ठोत्सव होगा।

राष्ट्रसंत वर्तमानाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. के आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणियों के समाचार

उज्जैन - प. पू. राष्ट्रसंत साहित्य मनीषी तीर्थ प्रभावक जैनाचार्य श्री जयंतसेनसूरीश्वरजी म. सा. के जीवन के ५६ वें वर्ष के अनुमोदनार्थ विद्वान तपस्वी मुनिराज श्री पद्मरत्नविजयजी म. सा. श्री विद्वदरत्नविजयजी म. सा. श्री हर्षितरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में जिनेन्द्र भक्ति निमित्ते महापूजनादि सह अष्टान्हिका महोत्सव (दि. २९-९-९२ से १-१०-९२ तक) सानन्द मनाया गया।

भीनमाल - सरल स्वभावी पं. पू. मुनिराज श्री भुवनविजयजी म. सा. श्री रामरत्नविजयजी म. सा. एवं वयोवृद्धा सरल स्वभाविनी पू. श्री महाप्रभाश्रीजी म. सा. डा. श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. सा. एवं डॉ. श्री सुदर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की सुप्रेरणा एवं उन्हीं की निश्रा में पर्युषण पर्व के पुनीत प्रसंग पर श्री महावीरजी मन्दिर में सामूहिक अट्ठाइयों का आयोजन किया गया। तपस्वियों की तपश्चर्या के अनुमोदनार्थ भीनमाल श्री संघ एवं महिला मंडल - भीनमाल की ओर से संवत्सरी के दिन बारह सौ सूत्र वांचन के बाद 'तप मुमुक्षु अभिनन्दन-पत्र' समारोह व दोपहर एक बजे चैत्य परिपाटी का आयोजन भी शानदार ढंग से सम्पन्न हुआ।

सांथू - मुनिराज श्री केवलविजयजी, श्री जयानंदविजयजी आदि ठाणा की निश्रा में ३५ छोड़ का उद्यापन, नवपदजी ओली आराधना, वृहद् शान्ति स्नात्र महापूजा सह नव्हान्हिका महोत्सव आसोज सुदि ७ से सुदि १५ तक सम्पन्न हुआ।

पाटण - पू. साध्वी श्री प्रेमलताश्रीजी श्री कल्परेखाश्रीजी एवं श्री पूर्णकिरणाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में विविध तपश्चर्याएँ एवं सानन्द चल रही है। पू. सा. श्री पूर्णकिरणाश्रीजी म. सा. के धर्मचक्र तप की तपश्चर्या का पारणा दि. ११-१०-९२ को सुखशान्ति पूर्वक हुआ।

गुजराती पंचांग भेंट मिलेंगे -

कार्तिक मास से प्रारंभ होनेवाले "**राज राजेन्द्र तिथि दर्पण**" बुक लेट साइज में पोस्टकार्ड लिखकर निम्नांकित पते से मंगवा सकते हैं -

राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मन्दिर

२-बी, प्रार्थना समाज, आर. आर. मोहनरॉय रोड, आदर्श दुग्धालय के पास, गिरगांव, बम्बई - ४०० ००४

शोक श्रद्धांजली

अहमदाबाद - थराद निवासी, त्रिस्तुतिक जैन संघ अहमदाबाद के ट्रस्टी एवं कई सामाजिक धार्मिक संस्थाओं से जुड़े श्री बचुभाई धरू का देहावसान लम्बी बिमारी के बाद २१-९-९२ को हुआ। सद्गत युवाओं में चारित्र निर्माण हेतु पाठशाला अभ्यासक्रम में खूब ध्यान देते थे। श्री बचुभाई के निधन से समाज को अपूरणीय क्षति हुयी है।

'शाश्वतधर्म' परिवार एवं परिषद द्वारा हार्दिक श्रद्धांजली।

परिषद के प्रांगण से

परिषद के केन्द्रिय पदाधिकारियों का दौरा अपूर्व उल्लास के साथ सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के केन्द्रिय अध्यक्ष - श्री सेवन्तीभाई मणीलाल मोरखिया, वरिष्ठ उपाध्यक्ष - श्री चैतन्यजी काश्यप, महामंत्री - श्री सुरेन्द्र लोढा ने वार्षिक दौरा कार्यक्रम में परिषद शाखाओं को राष्ट्रसंत पूज्य जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी महाराज के उपदेशों को कार्यान्वित करते हुए परिषद संकल्पों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया। दौरा तीन दिवसीय कार्यक्रमों के अनुसार मध्यप्रदेश के झाबुआ, धार, उज्जैन, रतलाम तथा मंदसौर जिलों की चुनी हुई शाखाओं में सम्पन्न हुआ। दौरा कार्यक्रमों में समाज तथा परिषद कार्यकर्ताओं की बैठकें हुई तथा पिपलौदा में श्रीमद् राजेन्द्र जैन वाटिका का शिलान्यास हुआ। दौरा काफी सफल माना गया। रम्भापुर (जिला झाबुआ) में नई शाखा का गठन किया गया। दौरे में राष्ट्रीय अल्पबचत मंत्री - श्री जवाहरलालजी जैन, श्री वाडीभाई संघवी, गुजरात इकाई अध्यक्ष - श्री चंद्रकांतभाई वोरा, श्री चन्दूभाई सी. वोरा, श्री सरदारमलजी संघवी, केन्द्रीय सह महामंत्री - श्रीमती कांता आंचलिया, श्रीमती मधुकांताबहन जैन, म. प्र. इकाई के महामंत्री - श्री ओ. एल. जैन, श्री प्रकाशजी जैन (बामनिया), झाबुआ जिला ईकाई अध्यक्ष श्री चंद्रसेनजी जैन आदि भी साथ थे।

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा.

रम्भापुर

परिषद पदाधिकारी १ अक्तूबर को प्रातः जल्दी उठ कर दौरा कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं होने पर भी मेघनगर के निकट रम्भापुर पहुंचे। वहां बैठक की तथा परिषद शाखा का गठन इस प्रकार किया -

सर्व श्री मनोजकुमारजी चंद्रशेखरजी जैन (अध्यक्ष), संतोषकुमारजी बाबुलालजी भंडारी (उपाध्यक्ष), पंकजकुमारजी रांका (मंत्री), सुनिलकुमारजी बाबुलालजी जैन (उपमंत्री), सुभाषकुमारजी फौजमलजी भंडारी (शिक्षामंत्री), बाबुलालजी भंडारी (कोषाध्यक्ष), जयंतिलालजी भंडारी (संगठन मंत्री), कार्यसमिति में नरेन्द्रकुमारजी जैन, कमलेशकुमारजी भंडारी, राजेशकुमारजी भंडारी, प्रदीपकुमारजी भंडारी, सतीषकुमारजी भंडारी, रवीन्द्रकुमारजी जैन, वीरेन्द्रकुमारजी जैन, राजेशकुमारजी रूनवाल।

श्री सेवन्तीभाई मोरखिया तथा श्री सुरेन्द्र लोढा ने शाखा को सक्रिय बनाने का आव्हान किया। मेघनगर के सर्व श्री मूलचंदजी रूनवाल, प्रदीपजी जैन, रमेशजी भंडारी आदि भी साथ थे।

मेघनगर

श्रीमद् राजेन्द्रसूरि जैन ज्ञान मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में अतिथियों के स्वागत

के पश्चात शाखा अध्यक्ष - श्री चन्द्रेशजी भंडारी ने प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। श्री प्रदीपसिंहजी जैन ने स्थानिय समस्याएं प्रस्तुत की केन्द्रिय अध्यक्ष - श्री मोरखियाजी ने शाखा को मान्यता प्रमाणपत्र प्रदान किया। महामंत्री श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने परिषद की योजनाओं की जानकारी दी। श्री चंद्रकांतभाई, श्री वाडीभाई, श्रीमती कांतावहन आंचलिया ने भी मार्गदर्शन दिया। श्री तेजमलजी जैन ने आभार प्रदर्शन किया। परिषद के सन्माननीय सदस्य वनाए गए। शाखा ने परिषद पाठ्यक्रम भाग - १ की पुस्तकें क्रय कीं। समारोह का संचालन श्री चंद्रेशजी भंडारी ने किया।

झावुआ

यहां शाखा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में पूज्य गुरूदेव श्री के चित्र पर श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने माला अर्पण, श्री वाडीभाई ने दीप तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने धूप प्रज्ज्वलन किया। कु. वंदना कांठी ने मंगलाचरण किया। अतिथियों का स्वागत संघ व परिषद के पदाधिकारियों ने किया। शाखा सचिव श्री संजय कांठी ने परिषद गतिविधियों पर प्रकाश डाला। श्री यशवंतजी भंडारी ने परिषद के आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा पेश की। सर्व श्री सेवन्तीभाई मोरखिया, श्रीमती कांतावहन आंचलिया, श्रीमती मधुकांतावहन आंचलिया, श्री जवाहरलालजी काकड़ीवाला, श्री पुखराजजी कांठी, श्री सुरेन्द्रजी जैन तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने सम्बोधित किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए श्री मनोहरलालजी भंडारी ने संघ व परिषद की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। समारोह में श्री सागरमलजी भंडारी, श्री अरविन्दजी लोढा, श्री संजयजी कांठी, कु. आभा वाबेल तथा कु. वंदना कांठी का सन्मान किया गया। श्री महेन्द्रजी भंडारी ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री बाबुलालजी संघवी ने आभार माना। परिषद कार्यकर्ताओं का सामुहिक भोज हुआ।

रानापुर

अतिथियों का ढोल ढमाके के साथ स्वागत किया गया। बस स्टेंड पर पत्रकार श्री संजयजी अग्रवाल ने मालाओं से स्वागत किया जिनदर्शन तथा गुरूदर्शन के पश्चात पदाधिकारी गणों ने साध्वीजी श्री अनन्तगुणाश्रीजी महा. आदि ठाणा ६ को वंदन किया। साध्वीजी के सानिध्य में कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। गुरूदेव के चित्र पर श्री सेवन्तीभाई मोरखिया, श्री सुरेन्द्रजी लोढा तथा श्री सरदारमलजी संघवी ने मालार्पण व दीप प्रज्ज्वलित किए। अतिथियों का स्वागत किया गया। प्रदेश महामंत्री श्री ओ. एल. जैन ने स्वागत भाषण दिया। श्री चंद्रसेनजी कटारिया ने परिषद गतिविधियों पर प्रकाश डाला। श्री सुरेशजी समीर ने कहा कि साध्वीजी के चातुर्मास से सभी भावविभोर हैं। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने मार्गदर्शन दिया। शाखा परिषद द्वारा आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के पुरस्कार श्री मोरखियाजी के करकमलों से वितरित किए गए। साध्वी श्री अनन्तगुणाश्रीजी महाराज ने कहा कि आज परिषद समाज की प्रगति का कारण बना है। युवाओं की मेहनत सार्थक बन रही है। परिषद वटवृक्ष में अंतरित हो रही है। शाखा अध्यक्ष - श्री सोहनजी भंसाली ने आभार प्रदर्शन किया। समारोह संचालन श्री सुरेश समीरजी ने किया। यहां बाल परिषद तथा बालिका परिषद की गतिविधियां भी अच्छी हैं। महिला परिषद भी कार्य कर रही है। सभी परिषदों के नव निर्वाचित पदाधिकारियों को श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने शपथ दिलाई।

पारा

परिषद पदाधिकारियों का स्वागत बेण्डवाजों के साथ किया गया। रात्रि को श्रीमद् राजेन्द्रसूरि ज्ञान मंदिर में आयोजित कार्यक्रम में पदाधिकारियों के स्वागत के पश्चात् शाखा अध्यक्ष श्री राजेन्द्रकुमारजी कोठारी ने शाखा प्रगति विवरण प्रस्तुत किया श्री प्रकाशजी छाजेड़ ने शाखा की गतिविधियों का संचालन करवाया। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने कहा कि पारा में परिषद व समाज का समन्वय एक आदर्श उदाहरण है। श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने बताया कि पारा परिषद को महत्वपूर्ण शाखाओं में माना जाता है। श्री ओ. एल. जैन, श्री चंद्रकांतभाई वोरा, श्री कांताबहन आंचलिया ने भी परिषद उद्देश्यों का प्रतिपादन किया प्रारंभ में कन्याओं ने मंगल गीत गाया। कार्यक्रम में काफी संख्या में समाज के महानुभाव तथा महिलाएं उपस्थित थे। आभार प्रदर्शन श्री राजमलजी तलेसरा ने किया। पारा में परिषद की काफी गतिविधियां चलती है। परिषद पाठ्यक्रम भाग - १ की प्रतियाँ शाखा ने क्रय कीं।

राजगढ

रात्रि देर तक शाखा के कार्यकर्ता तथा समाज के महानुभाव राष्ट्रीय पदाधिकारियों की प्रतिक्षा करते रहे। परिषद भवन के सभागृह में पदाधिकारियों का स्वागत किया गया। कार्यक्रम संचालन शाखा अध्यक्ष - श्री सुरेन्द्रजी तांतेड़ ने किया। सचिव - श्री महेन्द्रजी मोदी ने प्रगति विवरण पेश किया। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने परिषद उद्देश्यों की समझाईश दी। परिषद भवन के प्रवंधक - श्री राजमलजी भंडारी ने भी स्वागत किया। बैठक में अच्छी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

पदाधिकारियों ने परिषद भवन में विश्राम किया।

धार

दौरे के दूसरे दिन २ अक्टूबर को प्रातः पदाधिकारी गणों ने श्री मोहनखेड़ातीर्थ पर दर्शन-पूजन कर अपना कार्यक्रम प्रारंभ किया। वे धार पहुंचे जहां पू. साध्वीजी श्री दर्शितकलाश्रीजी, साध्वीश्री दर्शनकलाश्रीजी तथा साध्वी श्री जीवनकलाश्रीजी का वंदन किया। पूज्य साध्वीजी के सानिध्य में समाज तथा शाखा परिषद द्वारा पदाधिकारियों का मालाओं से स्वागत किया गया। श्री मोरखियाजी को साफा बंधवा कर वहुमान किया गया। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया, श्री सुरेन्द्रजी लोढा तथा श्री सरदारमलजी संघवी के भाषण हुए। साध्वी श्री दर्शितकलाश्रीजी म. ने आव्हान किया कि परिषद को मजबूत वनाया जाए। शाखा अध्यक्ष श्री सुरेशचंदजी भंडारी ने सभी का स्वागत किया।

महिदपुर

महिदपुर में पूज्य साध्वीजी श्री कल्पतरूश्रीजी महाराज आदि ठाणा के सान्निध्य में परिषद कार्यकर्ताओं की बैठक हुई। शाखा अध्यक्ष - श्री माणकलालजी छाजेड़ ने परिषद की गतिविधियों की जानकारी दी। श्री श्यामसुन्दरजी बांठिया एडवोकेट ने आश्वासन दिया कि परिषद के संकल्पों को पूर्ण करने में सभी सहयोग देंगे। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने सम्बोधित किया। श्री नरेन्द्रजी धारीवाल से पदाधिकारियों ने चर्चा की।

रात्रि विश्राम जावरा स्थित श्रीमद् राजेन्द्रसूरि दादावाड़ी पर किया।

पिपलौदा

दौरे का तीसरा दिन ३ अक्टूबर पदाधिकारियों ने पिपलौदा से प्रारंभ किया। पिपलौदा पहुंचते ही वे श्रीसंघ द्वारा आयोजित जुलुस में सम्मिलित हुए। यहां श्री राजेन्द्र वाटिका का निर्माण श्री त्रिस्तुतिक जैन समाज तथा अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की शाखा द्वारा किया जा रहा है। शिलान्यास राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यजी काश्यप द्वारा श्री सेवन्तीभाई एम. मोरखिया की अध्यक्षता में आयोजित था। मुख्य अतिथि श्री वाडीभाई संघवी थे। कार्यक्रम से पूर्व पदाधिकारियों को बेण्ड बाजे सहित समारोह स्थल पर लाया गया। पिपलौदा स्थित बुनियादी प्रशिक्षण संस्था भवन के सामने गुरू मंदिर तथा वाटिका निर्माण के लिए भूमि ली गई है। वहीं भूमि पूजन का कार्यक्रम आयोजित था। समारोह में पिपलौदा के पूर्व महाराज श्री रघुराजसिंहजी भी उपस्थित थे। मंगलाचरण श्री मुकेश रूनवाल ने तथा स्वागत गीत कु. अलका ने गाया। कार्यक्रम संचालन श्री महेश कुमार नांदेचा अध्यक्ष श्रमण संघ पिपलौदा ने किया। पदाधिकारियों का भव्य स्वागत साफा बांधकर तथा शाल भेंट कर किया गया। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया तथा श्री चैतन्यजी काश्यप को अभिनन्दन पत्र भेट किए गए। अभिनंदन पत्रों का वाचन श्री राजेन्द्रजी कोठारी तथा श्री अजितजी जैन ने किया। समारोह में इक्कीस अतिथियों को साफा बंधवाकर एवं शाल भेंट कर स्वागत किया गया। श्री रमेशजी धींग अध्यक्ष पिपलौदा संघ ने स्वागत भाषण पढा। श्री चैतन्यजी काश्यप ने कहा कि पिपलौदा संघ अपने कार्यों में सेवा के कार्यक्रमों को भी जोड़े। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने कहा कि इस गुरू मंदिर के निर्माण से आराधना की सुविधा होगी। श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा ने कहा कि पिपलौदा संघ अनूठा व अनुकरणीय कार्य करने जा रहा है। गुरू मंदिर निर्माण में श्री काश्यपजी ने इक्कीस हजार एक, श्री मोरखियाजी ने ग्यारह हजार एक तथा श्री वाडीभाई संघवी ने पांच हजार एक रूपये दिए जाने की घोषणा की। भूमिपूजन का विधान श्री सरदारमलजी संघवी (रतलाम) ने करवाया। इस अवसर पर जावरा, रतलाम तथा निकटस्थ नगरों के गुरूभक्त अच्छी संख्या में आए। बाद में स्वधर्मी वात्सल्य हुआ। परिषद पदाधिकारियों ने कार्यकर्ताओं से चर्चा की।

दलौदा

दलौदा में श्री शीतलनाथ राजेन्द्रसूरि मंदिर के नवनिर्मित सभागृह में पदाधिकारियों के स्वागत में कार्यक्रम हुआ। गुरूदेव के चित्र के सन्मुख दीप प्रज्ज्वलन श्री सेवन्तीभाई मोरखिया ने किया। म. प्र. के परिषद अध्यक्ष डॉ. सोहनलालजी सुराना ने स्वागत भाषण दिया। शाखा अध्यक्ष श्री रमेशजी मेहता ने मंदिर प्रांगण में एक ट्यूबवेल लगाने की घोषणा की। श्री सेवन्तीभाई मोरखिया, श्री चैतन्यजी काश्यंप, तथा श्री सुरेन्द्रजी लोढा ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम संचालन श्री अनिलजी सुराना ने किया।

मंदसौर

राष्ट्रीय पदाधिकारी तथा अतिथि मंदसौर में स्व. श्री राजमलजी लोढा के निवास स्थान पर शोक प्रकट करने के लिए गए। बाद में राजेन्द्र विलास में परिषद कार्यकर्ताओं के सामूहिक भोज में उन्होंने भाग लिया। यहां जैन शिक्षण प्रसार समिति के अध्यक्ष - श्री गजराजजी जैन, सचिव - श्री गजेन्द्रकुमारजी हिंगड़, भारतसिंहजी कोठारी, महेन्द्रजी चौरड़िया, उमरावसिंहजी

कुदार तथा दिलीपजी संघवी ने समिती की ओर से पदाधिकारियों का स्वागत किया। बाद में सभी ने गुरूदेव की आरती में भाग लिया।

शाखा परिषद द्वारा श्री राजेन्द्र जैन पौषधशाला पर सन्मान समारोह का आयोजन शाखाध्यक्ष उद्योगपति - श्री शांतिलालजी जैन मंदसौर स्टील्स की अध्यक्षता में किया गया। श्री मोरखियाजी तथा श्री काश्यपजी का साफा बांध कर बहुमान किया गया। अ. भा. श्री सौधर्मबृहत्पागच्छीय जैन श्वे. त्रिस्तुतिक संघ के केन्द्रीय महामंत्री श्री भंवरलालजी छाजेड़ ने परिषद को मजबूत बनाने पर बल दिया। कार्यक्रम का संचालन - श्री मोहनलालजी खाबिया ने किया। श्री मोरखियाजी, श्री काश्यपजी, श्री सुरेन्द्रजी लोढ़ा तथा श्री शांतिलालजी जैन के भाषण हुए।

भारी उत्साह के साथ दौरा सम्पन्न हुआ। दौरे में पदाधिकारियों ने मुख्यतः श्रीमद् यतीन्द्र जयंत ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित की जाने वाली धार्मिक परिक्षाओं में छात्रों को बैठाने, कार्यकर्ता शिविर आयोजित करने, धार्मिक शिक्षण शिविरों में छात्र भेजने तथा स्वयंसेवक दल गठित करने पर बल दिया। दौरे से परिषदों को नई प्रेरणा प्राप्त हुई।

मंदसौर शाखा के चुनाव

मंदसौर - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद शाखा मंदसौर के चुनाव विगत दिवस भारी जनसमुदाय के मध्य राजेन्द्र विलास में सम्पन्न हुए जिसमें उद्योगपति श्री शांतिलाल जैन मंदसौर स्टील सर्वानुमति से अध्यक्ष निर्वाचित किये गये।

कई महानुभावों द्वारा इनका समर्थन किया गया। श्री जैन ने उपरान्त अपनी कार्यसमिति निम्नानुसार घोषित की -

उपाध्यक्ष - सर्वश्री जिनेन्द्रकुमार सिसोदिया तथा शांतिलाल चपरोत, मंत्री शैलेन्द्रकुमार चंडावला, उपमंत्री अनिलकुमार फांफरिया मनोहरसिंह सोनगरा, अशोककुमार चपरोत, अशोक मानमलजी खाबिया, सांस्कृतिक मंत्री दिलीपकुमार कर्नावट, संगठन मंत्री हेमन्तकुमार हींगड़, प्रचार मंत्री पारसमल लोढा, स्वधर्मी सेवा कोष मंत्री दिलीपकुमार संघवी, स्वयंसेवक दलनायक भारतसिंह कोठारी सदस्य कार्यसमिति - बापुलाल पोरवाल, गजेन्द्रकुमार नाहर, दिलीपकुमार दुग्गड़, किरणकुमार बाफना, निर्मलकुमार खाबिया।

केन्द्रीय प्रतिनिधि - गजेन्द्रकुमार हींगड़, सुरेन्द्र लोढा, शांतिलाल एलचीवाला, जवाहरलाल जैन (देववाणी) तथा समरथमल दुग्गड़।

कार्यसमिति में पांच और सदस्यों का मनोनयन किया जाएगा।

झाबुआ शाखा के चुनाव

झाबुआ शाखा परिषद के चुनाव श्री महेन्द्रजी भंडारी की अध्यक्षता में हुए जिसमें अध्यक्ष - श्री मुकेशजी जैन, उपाध्यक्ष - श्री मनोजजी संघवी तथा अनिलजी चीप, महामंत्री - संजयजी कांठी, सहमंत्री महेशजी संघवी, कोषाध्यक्ष - सुबोधजी राठोर व अनिलजी रूनवाल, संगठनमंत्री - प्रदीपजी जैन, प्रचारमंत्री - राजेशजी सेठिया, संदीपजी जैन, सांस्कृतिक मंत्री - इन्द्रसेनजी संघवी, देवेन्द्रजी सेठिया। ग्यारह सदस्यीय कार्यसमिति बनाई गई।

शांतिलालजी जैन परिषद केन्द्रिय कार्य समिती में

मन्दसौर - अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद की केन्द्रिय कार्यसमिति में मन्दसौर के उद्योगपति श्री शांतिलालजी जैन मंदसौर स्टील्स का मनोनयन राष्ट्रसंत जैनाचार्य श्रीमद् विजय जयंतसेनसूरीश्वरजी महाराज के निर्देश एवं केन्द्रिय अध्यक्ष - श्री सेवन्तीभाई मोरखिया (बम्बई) व केन्द्रिय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री चैतन्यजी काश्यप (रतलाम) की अनुमति से किया गया है।

नीमच शाखा के चुनाव

नीमच परिषद शाखा के चुनाव श्री भंवरलालजी छाजेड़ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए जिसमें श्री सरदारसिंहजी चौधरी अध्यक्ष, अभयकुमारजी बाबेल उपाध्यक्ष, पारसमलजी सेठिया मंत्री, सुरेशचंदजी डूंगरवाल कोषाध्यक्ष, नवीनकुमारजी पोरवाल प्रचार मंत्री, हस्तीमलजी चौधरी शिक्षामंत्री, सुजानमलजी पगारिया सह शिक्षामंत्री चुने गए। श्री माणकलालजी नागोरी तथा श्री ज्ञानमलजी सेठिया केन्द्रिय प्रतिनिधि बनाए गए। श्री शांतिलालजी बोकड़िया जिला प्रतिनिधि तथा श्री सरदारमलजी पगारिया, अजितसिंहजी चौधरी, महेन्द्रसिंहजी चौधरी, प्रकाशजी सेठिया, अभयकुमारजी नांदेचा, जुगराजमलजी पटवा कार्यसमिति में लिए गए।

महिला परिषद के चुनाव

जावरा में महिला परिषद के चुनाव सर्वानुमति से हुए जिसमें श्रीमती ज्योत्सना जागीरदार अध्यक्ष, श्रीमती सोहनबाई मेहता उपाध्यक्ष, श्रीमती लीलाबाई मारवाड़ी सचिव, श्रीमती पुष्पा सकलेचा सह सचिव, श्रीमती कंचनबाई पिपाड़ा कोषाध्यक्ष निर्वाचित हुई।

नव वर्ष के प्रकाशित पंचांग मंगवायें

कार्तिक मास से प्रारंभ **'श्री राजेन्द्र जैन तिथि दर्पण'** पंचांग (साइज ११ × ७ से. मी.) प्रकाशित हो गये हैं। इच्छुक महानुभाव निम्नांकित पते पर पोस्टकार्ड लिखकर मंगवा सकते हैं -

शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका - थाने (महाराष्ट्र) पिन - ४०० ६०१

भूल-सुधार

'शाश्वत धर्म' - अगस्त १९९२ के पृष्ठ ४२ पर शाश्वत धर्म के बनाये गये सदस्यों की सूची १०-६-९२ तक दे दी गयी है। जबकि १-४-१९९१ से ३१-३-९२ तक बीस वर्षीय १२५; पंचवर्षीय ३३१ एवं एक वर्षीय १९६ ग्राहक बनाये गये हैं।

समाचार - सार

बीकानेर - अ. भा. साधुमार्गी जैन संघ का ३० वां वार्षिक तीन दिवसीय अधिवेशन (दि. २८-२९-३० सितम्बर) संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री रिद्धकरणजी सिपाणी की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ।

राजमुन्द्री (आ. प्र.) - श्री महावीर जैन विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं द्वारा पर्युषण पर्व पर धार्मिक प्रदर्शनी का आयोजन एवं रंगोली, चित्रकारी, समोवसरण रचना शाकाहार से प्रेरित चित्रावली आदि का प्रदर्शन किया गया।

रतलाम - इन्टरनेशनल जैन महावीर मिशन की बैठक इन्दरमल कटारिया पत्रकार की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें श्रीमोतीलाल बाफना संयोजक महेन्द्र मालवी अध्यक्ष, एवं श्री ललीत कोठारी महासचिव सर्वानुमति से चुने गए। बैठक में 'जनवरी ९३ में आचार्य श्री सुशील कुमारजी महाराज के दीक्षा पर्याय के ५० वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर आचार्य श्री का भव्य अभिनन्दन समारोह एवं प्रादेशिक सम्मेलन आयोजित किए जाने का निर्णय लिया गया।

बम्बई - श्री महावीर जैन विद्यालय का हीरक जयंती समारोह का शुभारम्भ ५-१०-९२ को महाराष्ट्र राज्य के गवर्नर श्री सी. सुब्रहमण्यम के करकमलो द्वारा बिरला मातुश्री सभागृह में हुआ। एवं ६ अक्टोबर को सिद्धचक्र महापूजन का आयोजन किया गया। यह समारोह विविध कार्यक्रमों के साथ १५ जनवरी १९९३ तक चलता रहेगा। इसी प्रकार के कार्यक्रम संस्था की अन्य शाखाओं में भी मनाए जा रहे है।

बैंगलोर - श्री अरिहंत जैन प्राणी कल्याण संस्था के तत्वावधान एवं पू. साध्वीश्री मुक्तिश्रीजी म. सा. की निश्रा में श्री सम्भवनाथ जैन मंदिर दादावाड़ी में इनामी तात्कालिक चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन श्रीमती इन्दिरा कुहाड़ द्वारा किया गया। भाग लेनेवाले सभी प्रतियोगियों को सांत्वना पुरस्कार एवं विजेताओं को पुरस्कार दिए गए।

वाग (म. प्र.) - शोश्यल ग्रुप युवा एवं अ.भा.श्री रा.जैन बाल परिषद द्वारा पर्युषण पर्व पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर पर्युषण पर्व सोल्लास सानन्द मनाए गए।

सांचोर (राज.) - पू. गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में पू. मुनिश्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. द्वारा मासक्षमण की तपश्चर्या का पारणा किया गया इस निमित्त खरतरगच्छ श्री संघ की ओर से अष्टान्हिका महोत्सव एवं चल समारोह का आयोजन किया गया।

धानेरा - जीवदया मंडल के महानिदेशक श्री मदनराज भंडारी का अभिनन्दन धानेरा, नगर की विभिन्न संस्थाओं द्वारा किया गया। श्री भंडारीजी ने जीवदया के क्षेत्र में किये जानेवाले कार्य का विवरण दिया और आगे के कार्यक्रमों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि जीवदया के क्षेत्र में संत महापुरूषों से मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु वे सुरत में विराजित राष्ट्रसंत आचार्य श्री जयंतसेनसूरिजी म. सा. एवं नवाडीसा में विराजित मुनिश्री हितरूचीविजयजी म. सा. से भेंट करेंगे। श्री भंडारीजी ने बताया कि उत्तर प्रदेश, गुजरात, दिल्ली तथा राजस्थान राज्य सरकारों द्वारा प्रत्येक स्कुल एवं कालेजों में जीवदया मंडल की स्थापना हेतु आदेश प्राप्त किये है।

मांडल - मुनिराज श्री हरिभद्रसागरजी सहित ३५ भाई बहनों के धर्मचक्रमहातप की पुर्णाहुति निमित्ते ९ छोड के उद्यापन सह पन्द्रह दिवसीय जिन भक्ति महोत्सव का आयोजन ९-१०-९२ से किया गया।

वम्बई - सुप्रसिद्ध जैन संगीतकार श्री जयन्तकुमार राही की रजत जयन्ति समिति के उपक्रम से जैन संस्कृति के अविभाज्य अंग के समान विविध कलाकारों को प्रोत्साहन हेतु जैन कला भवन की स्थापना का कार्यक्रम चल रहा है।

केशवणा - मुनि मोहनविजयजी समुदाय की साध्वीजी उद्योतश्रीजी की शिष्या साध्वीजी श्री विनयश्रीजी आदि ठाणा के चातुर्मास प्रवेश के साथ ही विविध आराधनाओं का ठाठ लगा हुआ है। व्याख्यान में उपस्थिती अच्छी रहती है। साध्वीत्रय के श्रेणीतप का पारणा कार्तिक शुक्ला ६ को महोत्सवपूर्वक सम्पन्न होगा।

राजगढ़ - श्री जैन तीर्थ यात्रा व्यवस्था समिति द्वारा श्री शिखरजी पावापुरी राजगृही आदि तीर्थों की यात्रा हेतु प्रतिवर्षानुसार यात्रा संघ इस वर्ष भी श्री कान्तिलालजी भण्डारी - समिती सचिव एवं संगठन मंत्री अ. भा. श्री. रा. जै. न. प. के नेतृत्व में ११० यात्रियों के साथ ३३ दिन के लिये २८-९-९२ को प्रास्थित हुआ। ज्ञातव्य है कि इस संघ में प्रतिवर्ष आर्थिक रुप से कमजोर, वृद्धों, विधवाओं एवं दिक्षार्थियों का निःशुल्क अथवा अर्धशुल्क में २४ यात्री लिये जाते हैं।

हैदरावाद - श्री रघुनाथमल (अहिंसा प्रेमी) ने भारत के प्रधानमंत्रीजी को पत्र लिखकर पशुओं के मांस निर्यात पर तुरंत रोक लगाने, नये कत्लखाने खोलने व अंडों के उत्पत्ति की नीति को रोकने एवं सरकार द्वारा अहिंसा के मार्ग को अपनाने की अपील की है।

रतलाम - सौ. उषा रमेश चौपडा के ३१ उपवास का पारणा २७ सितम्बर को सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर रथ यात्रा का आयोजन हुआ एवं समाज की विभिन्न संस्थाओं द्वारा तपस्वी का बहुमान किया गया।

विजयवाड़ा - श्री संभवनाथ राजेन्द्र जैन परिषद द्वारा ११ सितम्बर को प्रारंभ बारह दिवसीय पुष्कर मेले में श्री संभवनाथ राजेन्द्रसूरि जैन श्वेताम्बर ट्रस्ट के सौजन्य से मुफ्त नाश्ते के पैकेट व पुराने कपड़े वितरित किए गये।

जामनगर-विविध तपश्चर्याओं के अनुमोदनार्थ एवं आचार्यदेव श्री कनकचंद्रसूरिजी की १० वीं स्वर्गारोहण तिथि निमित्ते सिद्धचक्र महापूजन, अट्ठारह अभिषेक सह दशान्हिका महोत्सव ३-१०-९२ से मनाया गया।

थाने - श्री वर्धमान जैन मंडल द्वारा स्वाध्याय प्रेमियों के लिये मुफ्त प्रवचन ऑडियो केसेट लायब्रेरी प्रारंभ की गयी है।

अहमदावाद - नगरपालिका द्वारा धार्मिक स्थानों के आसपास के ५० मीटर विस्तार में मांसाहारी पदार्थ विक्री अथवा बनाने पर प्रतिबंध लगाया गया है।

काकीनाड़ा - पू. मुनिराज श्री दिव्यरत्न विजयजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में मासक्षमण, सिद्धितप, छट्ठ, अट्ठम, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ के अट्ठम तप, समवसरण तप, श्रावण भाद्रपद तप, आदि अनेक तपश्चर्याएं सानन्द सम्पन्न हुई।

कलोल - पू. आचार्य श्री विजयलब्धिसूरिजी म. सा. की प्रेरणा से श्री अरिहंत प्रकाशन भावनगर द्वारा श्री नंदलाल देवलुकभाई द्वारा संपादित ग्रंथ 'शासन प्रभावक श्रमण भगवंतों' की द्वितीय आवृति का विमोचन ६-१०-९२ को किया गया। इस अवसर पर श्री नंदलालभाई का बहुमान भी किया गया।

तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय की सुरम्य छाया में
नव्वाणुं यात्रा आराधना के पवित्र प्रसंग पर

स्नेह सभर आमंत्रण

शुभारंभ - कार्तिक शुक्ला १५ मंगलवार दि. १०-११-१९९२

आयोजक

बाकरा (राजस्थान) निवासी उकचन्द, पारसमल, मगनलाल, सन्तोषकुमार, अशोककुमार एवं समस्त सालेचा परिवार

सम्पर्क सूत्र

उकचंद जुगराजजी सालेचा,
ए/२, व्रजविहार एपार्टमेन्ट,
नवरंगपुरा पोस्ट ऑफिस के पीछे,
अहमदाबाद - ३८० ००९
☎ ४६ ८७ ८४, ४६ ५२ ९३

निवेदक

पालीतणा निवास स्थल,
९, सौधर्म निवास धर्मशाला,
तलेटी रोड,
पालीतणा - ३६४ २७०
☎ (०२८४८) २३२३

विचार - मंथन

धार्मिक शिक्षा आवश्यक - वर्तमान युग में शिक्षा को काफी महत्व दिया जा रहा है, किन्तु मात्र व्यवहारिक शिक्षा पाकर मानव जीवन में शान्ति का अनुभव नहीं करता है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली अधुरी व दोषपूर्ण होने से जीवन उत्थान की नींव मजबूत नहीं हो पाती। जीवन को उज्ज्वल बनाने एवं दिव्य ज्योति प्रगटाने हेतु धार्मिक शिक्षा अत्यंत आवश्यक है।

- कु. रेखा हस्तीमलजी कोठारी - आहोर

पूज्य आचार्य भगवंतो व मुनिराजों से निवेदन - कृपया कुछ प्रश्नों का योग्य समाधान करें - शांतिस्नात्र आदि पूजन में तीर्थंकर भगवंत की प्रतिमा के समक्ष नवग्रह आदि देव-देवियों की पूजा की जाती है, तो गुरू वंदन क्यों नहीं किया जाता? शांति स्नात्रपूजन में 'जे के वि दुट्ठ देवा' के अंतर्गत देवताओं को दुष्ट की उपमा दी है, तो क्या तीर्थंकर भगवंत समक्ष ऐसे तुच्छ दोष युक्त शब्दों का सम्बोधन उचित हैं। 'ॐ पितृ कलत्र' वृहत्तशान्ति की गाथा का उपयोग पंच महाव्रतधारी साधु साध्वियों द्वारा किये जाने से क्या प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में असंयमीओं के गृहस्थ जीवन की अनुमोदना नहीं होती? ऐसे अनुष्ठानों का प्रोत्साहन, अनुमोदन, प्रेरणा संयमी, कंचन कामिनी के त्यागी पंच महाव्रतधारी हर्षोल्लास के साथ करें तब क्या कहा जाय?

पूज्य आचार्य भगवंतों व विद्वान मुनिराजों से निवेदन है कि कृपया उपरोक्त प्रश्नों का समाधान करें। **- हजारीमल द्वारा-सपना स्लेब्स, ३८/९ मीनचीन बाजार, कर्नुल-५१८ ००१**

साहित्य स्वीकार

❁ **कथालोक** - (तीर्थ कथा विशेषांक) सम्पादक, प्रकाशक, प्राप्तिस्थान - श्री हर्षचंद जैन, ४०४, कुन्दन भवन, आजादपुर, दिल्ली - ३३, मूल्य - दस रुपये, पृष्ठ १४६

❁ **अर्हत वचन** - (संगोष्ठी विशेषांक) सम्पादक - डॉ. श्री अनुपम जैन, प्रकाशक - देवकुमारसिंह कासलीवाल, प्राप्ति स्थान - कुन्द कुन्द ज्ञानपीठ दि. जैन उदासीन आश्रम ट्रस्ट, ५८४, म. गां. मार्ग, तुकोगंज - इन्दौर - ४५२ ००१ (म. प्र.) वर्ष ५ अंक २-३ (त्रैमासिक)

❁ **शांति निकेतन** - (गुजराती) (पू. अमरेन्द्रविजयजी महाराज श्रद्धांजलि विशेषांक) सम्पादक - श्री अशोक शाह, प्रकाशक - एवं प्राप्तिस्थान - प्रेरणा प्रकाशन ट्रस्ट शांति निकेतन साधना केन्द्र तीथल (बलसाड़) द्विमासिक वर्ष ७ अंक १

❁ **अमर भारती** - (पू. अमरमुनि स्मृति अंक) सम्पादक - कृष्णानंद शास्त्री प्रकाशक एवं प्राप्तिस्थान - श्री टी. आर. डागा, मंत्री विरायतन, राजगीर, जि. नालंदा (बिहार) - ८०३ ११६

❁ **सुशील महाकाव्यम्** - रचयिता - डा. जवाहरचन्द्र पटनी; प्रकाशक - श्री जैन संघ - खीमेल (राजस्थान)

आचार्यदेव श्रीमद् विजयसुशीलसूरीश्वरजी के ७५ वें जन्मदिवस (अमृत महोत्सव) निमित्त प्रस्तुत प्रकाशन में श्रीमद् की जीवन गाथा १५ सर्गों में विविध छन्दों की रचना द्वारा दी गयी है। परिशिष्ट खण्ड में साहित्य साधना शिष्य परिवार, शासन के विविध कार्यक्रमों एवं खीमेल चातुर्मास की झलक दी गयी है।

❁ **भवचक्र की विचित्रता** - लेखक मुनि श्री जयानंदविजयजी म. प्रकाशक शा. सोभागमल मोतीचंद सराफ आहोर, प्राप्ति स्थान - जे. के. संघवी (सम्पादक) शाश्वत धर्म कार्यालय, जामलीनाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र) मूल्य - सदुपयोग।

भवचक्र की विचित्रता बतलाती हुयी कथा प्रकाशित की गयी है। जिज्ञासु पाठक एक रूपया पोस्टेज खर्च भेजकर भेंट मंगवा सकते हैं।

❁ **आत्म स्वरूप** - लेखक मुनि श्री जयानंदविजयजी म. प्रकाशक श्री गुरू रामचंद्र प्रकाशन समिति भीनमाल। प्राप्ति स्थान शा. देवीचंद छगनलाल - भीनमाल, राजस्थान - ३४३ ०२९, १) जे. के. संघवी (सम्पादक), शाश्वत धर्म कार्यालय, जामली नाका, थाने - ४०० ६०१ (महाराष्ट्र), मूल्य - सदुपयोग।

चार गति के जीवों का स्वरूप आलेखित किया गया है। स्वाध्यायी पाठक उपरोक्त पते पर एक रूपया पोस्टेज खर्च हेतु भेजकर मंगवा सकते हैं।

❁ **पगडंडी सूरज तक** - मुनि क्षमासागरजी; प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान - हीरा भैया प्रकाशन, ६५ पत्रकार कॉलोनी, कनाडिया मार्ग - इन्दौर (म. प्र.); पृष्ठ ८०; मूल्य - पांच रूपये

विविध विषयों पर काव्यमय रचनायें प्रस्तुत की गयी है।

❁ DRAVYA SANGRAHA **(द्रव्यसंग्रह)** - मुनि नेमिचन्द्र सिद्धान्ताचार्य, अंग्रेजी भाषानुवाद श्री शरदचंद्र घोसाल, प्रकाशक व प्राप्तिस्थान - श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन पुस्तकालय, १६१-भुलेश्वर, बम्बई - ४०० ००२

शाश्वत धर्म आय - व्यय विवरण

दिनांक १ - १ - ८८ से ३१ - ३ - ८९

१७० पंचवार्षिक सदस्यों से	१७०००.००	श्री कागज खर्च खाते	३८८१५.६०
१६५ वार्षिक सदस्यों से	४१२५.००	श्री प्रिंटीग खर्च खाते	७९७३५.९९
श्री भेंट व विज्ञापन से	३२३४४.००	श्री पोस्टेज खर्च खाते	७१७७.४५
श्री ब्याज खाते जमा	७३०८०.५०	श्री ब्लाक खर्च खाते	१५१६.९२
श्री नुकसानी खाते	१६३५७.७१	श्री पगार खर्च खाते	१३८००.००
		श्री प्रतिनिधी कमीशन खर्च खाते	१७६.००
		श्री स्टेशनरी खर्च खाते	४०६.००
		श्री कार्यालय खर्च खाते	७४४.२५
		श्री प्रवास खर्च खाते	५३५.००
	१,४२,९०७.२१		१,४२,९०७.२१

नोट :- संरक्षक ४, स्तंभ १, आजीवन १, एवं बीस वर्षीय ३६ ग्राहक बनें

शाश्वत धर्म आय - व्यय विवरण

दिनांक १ - ४ - ८९ से ३१ - ३ - ९०

११६ श्री पंच वर्षिय सदस्यो से	११६००.००	श्री पोस्टेज खर्च खाते	७२९८.००
वार्षिक सदस्यो से	२७५५.००	श्री पगार खर्च खाते	१७४००.००
श्री भेंट एवं विज्ञापन से	४४७४२.००	श्री प्रवास खर्च खाते	५८८.००
श्री ब्याज खाते जमा	६७८०२.३४	श्री प्रिंटींग खर्च खाते	३५१५४.६९
		श्री कागज खर्च खाते	४५२३३.००
		श्री प्रिंटींग खर्च खाते एडवान्स	२००००.००
		श्री स्टेशनरी खर्च खाते	२८२.६०
		श्री कार्यालय खर्च खाते	१३७.५०
		श्री बचत खाते	८०४.७८
	१,२६,८९९.३४		१,२६,८९९.३४

नोट :- संरक्षक १, बीस वर्षीय ५४ ग्राहक बनें

शाश्वत धर्म आय - व्यय विवरण

दिनांक १ - १ - ९० से ३१ - ३ - ९१

१६० श्री पंच वर्षिय सदस्यो से	१६०००.००	श्री कागज खर्च खाते	३८५६७.००
२०० श्री वार्षिक सदस्यो से	५०००.००	श्री प्रिंटींग खर्च खाते	७६६७२.९५
श्री भेंट एवं विज्ञापन से	३६१३९.००	श्री पोस्टेज खर्च खाते	१३,२३२.०५
श्री ब्याज खाते जमा	६६०४४.८०	श्री प्रतिनीधी कमीशन खाते	१८८.००
		श्री स्टेशनरी खर्च खाते	२२०.९०
श्री नुकसानी खाते	२४३६९.०५	श्री पगार खर्च खाते	१८०००.००
		श्री कार्यालय खर्च खाते	४०४.००
		श्री ब्लाक खर्च खाते	२६७.९५
	१,४७,५५२.८५		१,४७,५५२.८५

नोट :- संरक्षक १, बीस वर्षीय ६४ ग्राहक बनें

शाश्वत धर्म आय - व्यय विवरण

दिनांक १ - १ - ९१ से ३१ - ३ - ९२

श्री पंच वर्षिय सदस्यो से	३३१००.००	श्री पोस्टेज खर्च खाते	८१४८.००
श्री वार्षिक सदस्यो से	४९००.००	श्री विविध खर्च खाते	८९३.००
श्री भेंट एवं विज्ञापन से	३०३२५.००	श्री पगार खर्च खाते	१८०००.००
श्री ब्याज खाते जमा	६७९४२.००	श्री ट्रांसपोर्ट खर्च खाते	१४६५.००
		श्री प्रवास खर्च खाते	२५०.००
		श्री प्रिंटींग खर्च खाते	५३७६८.००
		श्री कागज खर्च खाते	४७५८५.००
		श्री बैंक एवं प्रतिनिधी कमीशन खर्च खाते	१०५४.००
		श्री बचत खाते	५१०४.००
	१,३६,२६७.००		१,३६,२६७.००

नोट :- संरक्षक २, बीस वर्षीय १२५ ग्राहक बनें

'શ્રી ગણધર ગૌતમ સ્વામી'

શ્રી ચેતન વેલજી છેડા

સર્વારિષ્ટ પ્રણાશાય, સર્વાભિષ્ટાર્થદાયિને ।
સર્વલબ્ધિનિધાનાય, શ્રી ગૌતમ સ્વામીને નમઃ ॥"

લોભ, લાલચ અને લોલુપતા એ જેને વળગે છે. એ માનવી દીન, રંક અને નિસ્તેજ બની જાય છે. અગ્નિના સ્પર્શથી જેમ બીજ નિઃસાર થઈ જાય છે. આવી ઠગારી આશાનો દાસ બનેલો માનવી પોતાનું સર્વસ્વ ગુમાવી બેસે છે.

સંતોએ આવી આશાને હંમેશા જાકારો આપ્યો છે. એનાથી મુક્તિ મેળવવી એ પણ એમની સાધનાનું એક ધ્યેય હોય છે. આવી આશા તો નિરાશા, હતાશા કરતાં પણ વધારે નુકશાન કરનારી અને લાચાર બનાવનારી છે. સંતોની સાધના તો અમર આશાથી ભરેલ જીવંત સાધના હોય છે. તેથીજ એમને નિરાશા, હતાશા અને ગમગીની સ્પર્શી શકતી નથી. અને એમની સાધનામાંથી જન્મતી સિદ્ધિ સૌ કોઈની આશાનો આધાર બની રહે છે.

આવી જ આશાના મહાન આધાર સ્તંભ હતા. અનંત લબ્ધિના સ્વામી, ભગવાન મહાવીર દેવના પરમ વિનયી મુખ્ય શિષ્ય અને પ્રથમ ગણધર, અનંત લબ્ધિના સ્વામી ગુરુ ગૌતમ સ્વામી, એમના નામનો કેટલો બધો મહિમા છે. મરતાને જીવન મળે, દુખિયાનું દુઃખ દુર થાય, રોગ-શોક સંતાપ શાંત થઈ જાય, ભય માત્ર નાશ પામી જાય છે. અને સર્વત્ર સુખ-શાંતિ અને આનંદ મંગળ પ્રવર્તી રહે એવો છે. એ ધર્મ પુરુષનો અને એમના નામસ્મરણનો પ્રભાવ, એ પ્રભાવ છે તેઓની નિર્મળ, નિઃસ્વાર્થ અને નિષ્કપટ જીવન સાધનાનો તથા પરગજજુ પ્રકૃતિનો. એમની એ સાધના આજે પણ કંઈક જીવો માટે આશ્વાસન, આશા અને આધારરૂપ બનીને એમનામાં બળ, બુદ્ધિ અને તેજ પ્રગટાવે છે. ધર્મના આ અમૃતનું પાન કરનારા સંતો અને સતીઓ યુગે યુગે આવતા જ રહે છે. અને કેટલાક આત્માઓ તો, એ અમૃતનું પાન કરવાની સાથે સાથે, પોતાની શ્રેષ્ઠ સાધનાના અમૃતનું દાન કરીને એ પરબોને વધારે સમૃદ્ધ પણ બનાવતા જાય છે.

આવા જ એક મહાસંત શ્રેષ્ઠ સાધક અને સિદ્ધી મહાપુરૂષ હતા. ગુરુ ગૌતમ સ્વામી. જે શ્રમણ ભગવાન મહાવીરના ધર્મતીર્થના અમૃતનું પાન કરીને તેઓ અજર અમર બની ગયા. અને એ ધર્મતીર્થને પોતાની આત્મ સાધનાના અમૃતનું દાન કરીને જગતના પરમ ઉપકારી બની ગયા.

દીન દુઃખી જગત આજે પણ એ મહાપુરૂષની લબ્ધિ, ઋદ્ધિ અને સિદ્ધિઓનું સ્મરણ કરીને એમનું શરણ શોધે છે. સૌ ભાવિક નર-નારીઓ અમૃતના અધિકારીએ પ્રાતઃસ્મરણીય ધર્મપુરૂષનું પુણ્ય સ્મરણ કરીને એમની સ્તુતી કરતા કહે છે :

અંગુઠે અમૃત વસે, લબ્ધિ તણા ભંડાર,
તે ગુરૂ ગૌતમ સમરીએ, મન વાંછિત ફલ દાતાર...
ધર્મ શાસ્ત્રોની રચના ભૂમિ,
ધર્મ નાયકોની અવતાર ભૂમિ,
ધર્મો અને ધર્મતીર્થોની સ્થાપના ભૂમિ,
ભગવાન મહાવીરના જન્મ અને નિર્વાણની ભૂમિ...

બડભાગી મગધ દેશ !

ધર્મો, ધર્મસ્થાપકો, અને ધર્મશાસ્ત્રોના ત્રિવેણી સંગમે એ ધરતીના કણ કણને પાવન બનાવી ધર્મ ...સ્કારિતાનો ઈતિહાસ સર્જ્યો હતો. એ પુરાણ સિદ્ધિ મગધદેશ એજ અત્યારનો બિહાર પ્રદેશ.

મગધ દેશમાં એ ગોબર નામનું ગામ, વિદ્યા અને વિદ્વાનોની ખાણ અને વૈદિક બ્રાહ્મણ ધર્મનું ધામ. તેમાં ત્યાં યજ્ઞ કર્મ અને વેઢ વેઢાંગના પારંગત એક વિપ્રવર રહે. વસુભૂતિ એમનું નામ. યજ્ઞ કર્મ અને વિદ્યાદાન એજ એમનો વ્યવસાય. એમના ધર્મભાર્યાનું નામ પૃથ્વી દેવી. ગૌતમ એમનું ગોત્ર. પૃથ્વી માતાને ત્રણ પૂત્રો હતા. ઈન્દ્રભૂતિ, અગ્નિભૂતિ, વાયુભૂતિ, ત્રણેય સૂર્ય, ચંદ્ર, અને ઈન્દ્ર સમાન તેજસ્વી શાંત અને પ્રભાવશાળી, એક ને જૂઓ અને એક ને ભૂલો એવી એ બંધુ ત્રિપુટી, વિદ્યા, ધર્મ અને સુચિતાનો જાણે પવિત્ર ત્રિવેણી સંગમ .

પંડિત ઈન્દ્રભૂતિનો જન્મ શ્રમણ ભગવાન મહાવીર વર્ધમાન પહેલાં આઠ વર્ષે, વિક્રમ સંવત પૂર્વે ૫૫૦ માં, આજથી લગભગ ૨૫૦૦ વર્ષ પહેલા થયો હતો. તેમની કાયા વજ્ર જેવી મજબૂત હતી. તેઓના હાડકાં વજ્રઋષભના રાય નામે સંઘયણ (સાંધા) વાળા હતા. એમની સાત હાથ ઊંચી પડછંદ કાયાના અંગ પ્રત્યંગો પ્રમાણસર અને સોહામણા હતા. જેનું એક એક અંગ પ્રમાણસર હોય એવો દેહ. એમનો વાન સોનલ વર્ણી - સોનાની રેખા જેવો ઉજળો અને તેજસ્વી હતો. પણ પોતાની આવી સુંદર, સુદ્દઢ અને નિરોગી કાયાનું એ વિપ્રવરને ભાન ન હતું. ન અભિમાન કાયા તો એમને મન જીવન સાધનાનું માત્ર એક સાધન હતી. એટલે કાયાની માયા તેમને ક્યારેય સતાવી ન શકતી.

એ જ કાળ અને એ સમયની વાત છે. અપાયા નગરીમાં સોમિલ નામે એક ધનાઢ્ય બ્રાહ્મણ રહે. એણે મોટો એક યજ્ઞ આદર્યો હતો. અને એ માટે તેણે મોટા મોટા અગિયાર બ્રાહ્મણોને નોતર્યા હતા. તેમાં પહેલા ત્રણ એટલે ઈન્દ્રભૂતિ, અગ્નિભૂતિ, વાયુભૂતિ તે અગિયારે બ્રાહ્મણોની ક્રિયાકાંડ અને મંત્રાક્ષરોમાં ખૂબ જ 'ખ્યાતિ હતી. આ યજ્ઞ વખતે તેમના મંત્રાક્ષરો થી દેવલોકના દેવો પણ ત્યાં આવતાં. પરંતુ આ નગરીની બીજી દિશામાં એક ઉદ્યાનમાં પ્રભુ મહાવીર પધાર્યા હતા. તેથી લોકો દેવના આવવાની રાહ જોતા હતા. અને જે વખતે દેવ આવતા દેખાયા. તેથી લોકો રાજી થયાં. પરંતુ તે દેવો તે યજ્ઞ તરફ આવવાને બદલે પ્રભુ મહાવીર જ્યાં પધાર્યા હતા. ત્યાં જવા લાગ્યા. ત્યારે કોઈને પૂછતાં એવી જાણ થઈ કે અહીં મહાજ્ઞાની સર્વજ્ઞ એવા મુનિ પધાર્યા છે. ત્યારે પંડિત ઈન્દ્રભૂતિને આઘાત લાગ્યો અને કહ્યું કે મારા જેવા સર્વ શાસ્ત્રોના જ્ઞાત અને સર્વ વિદ્યાવિશારદ મહા પંડિતના બેઠા હોવા છતાં આ સર્વજ્ઞપણાનો ઢોંગ કરનાર આ વળી કોણ છે. તેથી ત્યારે તે મહાવીરનું ગુમાન ઉતારવા તેમના પાંચશો શિષ્યો સાથે ચાલી નીકળ્યા. પરંતુ જ્યારે પ્રભુના ખરા સર્વજ્ઞ પણાની જાણ થઈ ત્યારે તેમણે પોતાના પાંચસો શિષ્યો સાથે પ્રભુ પાસે દીક્ષા લઈ લીધી. ત્યાર બાદ તેમના ભાઈ અગ્નિભૂતિને લાગ્યું કે તેમણે પોતાના માયાવી દ્રષ્ટિથી મારા ભાઈને તથા શિષ્યોને તેમની માયાવી જાળમાં જકડી લીધા છે. તો તે પણ પોતાના પાંચસો શિષ્યો સાથે પોતાના ભાઈને છોડાવવા ચાલી નીકળી પડ્યા. પણ જ્યારે તેમને પણ પ્રભુ મહાવીરે બધી વાત સમજાવી ત્યારે તેમણે પણ પોતાના પાંચસો શિષ્યો સાથે ત્યાં દીક્ષા લઈ લીધી. છેવટે તેમના નાના ભાઈએ પણ તેવું જ વિચાર્યુ તેથી તેઓ પણ પોતાના શિષ્યો સાથે ત્યાં ગયા. પણ તેમનું પણ પરીણામ તેવું જ આવ્યું. અને તેમણે પોતાના શિષ્યો સાથે દીક્ષા લઈ લીધી. અને પછી બાકીના આઠ પંડિતો પણ પ્રભુ મહાવીરને પરાજિત કરવાના હેતુથી આવ્યા. પણ છેવટે તેમણે પણ ત્યાં દીક્ષા લઈ લીધી. આમ આ અગિયારે પંડિતોની શંકાના નિરાકરણમાં ભગવાન મહાવીરે જે જ્ઞાન ગંભીર વાતો સમજાવી એમાં જીવને સંસારમાં રોકી રાખીને એમાં રખડાવનારાં કારણોનું અને સંસારનાં બંધનમાંથી મુક્ત થવાના ઉપાયોનું સ્પષ્ટ, સુરેખ અને પ્રતીતિકરણ નિરૂપણ થયેલું જોવા મળે છે.

આ અગિયારે પંડિતો સાથેના ભગવાન મહાવીરના વાર્તાલાપને શાસ્ત્ર કર્તાઓએ 'ગણધર વાદ'ના નામે ઓળખાવ્યો અને સાચવી રાખ્યો. ભગવાનના સમસ્ત શ્રમણ સંઘના નાયક બન્યા હતા ગુરુ ગૌતમ સ્વામી. ભગવાન મહાવીર અને ગુરુ ગૌતમ વચ્ચેના ધર્મ સ્નેહનો તંતુ છેક પ્રથમ તિર્થંકર શ્રી ભગવાન ઋષભદેવના યુગથી લંબાતો હતો.

લાખના આંકડામાં દસ, વીસ, પચ્ચીશ, પચ્ચાસ હજારનો આંકડો આપમેળે સમાઈ જાય. એવું જ આત્મયોગી માટે ઋદ્ધિઓ, સિદ્ધિઓ માટે અને લબ્ધિઓના ચમત્કારનું હોય છે.

ગૌતમ સ્વામીની નામના ચોમેર લબ્ધિઓના ભંડાર તરીકે વિસ્તરી હતી. કેવી કેવી એ લબ્ધિઓ હતી. હાથનો સ્પર્શ થતો અને જીવોના દુઃખ દર્દ દીનતા દૂર થઈ જતા. એમના મળો, દુર્ગંધ મારતા મળો ન હતા. પણ રોગને દુર કરનાર સુવાસિત ઔષધો હતા. ઈશારા માત્રથી તેઓ ઝેરને દૂર કરી દેતા. અંગૂઠામાં એવું અમૃત વસતું કે જે વસ્તુને એનો સ્પર્શ થતો એ અખૂટ બની જતા. સામાના મનને જાણવું. દૂર દૂરની વસ્તુ કે ઘટનાઓને જાણવી વગેરે કઈંક સિદ્ધિઓ અને લબ્ધિઓના સ્વામી બન્યા હતા. ગુરુ ગૌતમ સ્વામી, ગુરુ ગૌતમ ભગવાનના આદર્શ, સંદેશવાહ અને આદર્શ શિષ્ય હતા.

એક વખતે ભગવાન પાર્શ્વનાથની પરંપરાવાળા કેશીકુમાર શ્રમણ પોતાના શ્રમણસંઘ સાથે શ્રાવસ્તી નગરીમાં આવ્યા અને એ વખતે ગુરુ ગૌતમ પણ ત્યાંજ આવી પહોંચ્યા. તેમની બંન્નેની ધર્મ પરંપરા એક જ હતી પરંતુ ક્રિયાકાંડ અલગ અલગ હતા. તેથી ગૌતમ સ્વામીએ તેમને સંતોષકારક તેમના પ્રશ્નોના ઉત્તરો આપીને ખૂબ સમજાવીને તેમને સત્ય સમજાવ્યું. અને ગૌતમ સ્વામીની વાણી સાંભળીને કેશીકુમાર શ્રમણ અને એમના શિષ્યોએ ભગવાન મહાવીરના પ્રતિક્રમણ અને પાંચ મહાવ્રતવાળા ધર્મનો સ્વીકાર કર્યો. એ બે સંતોનું મિલન એક જ ધર્મની બે પરંપરાઓના સંગમ રૂપે ધર્મ સંઘના ઈતિહાસમાં અમર બની ગયું.

અને હવે અહીં મહાવીર સ્વામીએ અષ્ટાપદ પર્વતનો મહિમા વર્ણવતા કહ્યું કે જે સાધક પોતાની લબ્ધિના બળે અષ્ટાપદ તીર્થ ઉપર જઈ ત્યા રહેલા જિનબિંબોના વંદન કરી એક રાત્રિ ત્યાંજ રહે છે. તે મોક્ષનો અધિકારી બને છે. અને એ તેજ ભવમાં મોક્ષ પામે છે. ત્યારે ગૌતમ સ્વામીએ અષ્ટાપદ તીર્થ પર જવા માટે પ્રભુ પાસે અનુમતિ માંગી અને પ્રભુએ રજા આપી તેથી તે અષ્ટાપદ તીર્થ પર જવા નીકળી પડ્યા, તેમણે પોતાની ચારણ લબ્ધિથી તેઓ વાયુવેગે થોડી જ ક્ષણોમાં અષ્ટાપદની તળેટીમાં પહોંચી ગયા. અને અષ્ટાપદમાં ચોવીશ તીર્થંકરોને વંદના કરી. અને દેવો, અસૂરો, વિદ્યાધરોને ધર્મોપદેશ સંભળાવ્યા અને રાત અષ્ટાપદ પર વીતાવીને સવારે પર્વત પરથી નીચે ઉતરવા લાગ્યા. ત્યારે અધવચ્ચે તેમને પંદરસો તાપસો મળી ગયા. અને એ તાપસોએ તેમની લબ્ધિ, ઋદ્ધિ , સિદ્ધિ જોઈને તેમને પોતાના ગુરુ બનાવવાનું કહ્યું. ત્યારે ગૌતમ સ્વામીએ એ પંદરસો તાપસોને દીક્ષા આપી. અને પછી ચાલતા થયા. પછી જ્યારે ભોજનવેળા થઈ ત્યારે ગૌતમ સ્વામીએ પૂછ્યું કે આજે તમે તમારા તપનું પારણું કેવા આહારથી કરશો ? ત્યારે બધાએ ખીરનું પારણું કહ્યું. તેથી તેમણે તેમની લબ્ધિના બળથી પંદરસો તાપસોને પેટ ભરીને ખીરનું પારણું કરાવ્યું.

ગૌતમ સ્વામી તપસ્વી હતા. તેઓ છટ્ઠના પારણે છટ્ઠની તપસ્યા કરતા હતા. અને કાયાની માયાથી મુક્ત રહીને દેહને દાપુ આપવા ખાતર જ લુખો સુકો, રસ-કસ વગરનો સાદો નિર્દોષ આહાર લેતા હતા.

જ્યારે ભગવાન મહાવીર સ્વામી પાવાપૂરીમાં મહાનિર્વાણ પામ્યા ત્યારે ગૌતમ સ્વામી દેવશર્માને પ્રતિબોધ કરીને પાવાપૂરી આવી રહ્યા હતા. ત્યારે તેમણે અધરસ્તે જ અતિ આઘાતજનક ભગવાન મહાનિર્વાણ પામ્યાના સમાચાર મળ્યા. જાણે કમળના સુકોમળ ફૂલ ઉપર વજ્રપાત થયો. એ સાંભળીને ગૌતમ સ્તબ્ધ દિગ્મુઢ થઈ ગયા. એમનું રોમ રોમ બેચેન અને બેહોશ બની ગયું. એમની વાચા જાણે હરાઈ ગઈ. એમના અંતરની વેદનાને કોઈ અવધિ ન રહી. અને પછી તેઓ પોતાની જાતને ધિક્કારવા લાગ્યા. અને છતાં ત્યા આંસુ લુછનાર, ભગ્ન હૃદયને આશ્વાસન આપનાર અને ઘેરા શોકના સંતાપને શાંત કરનાર કોઈ જ ન હતું.

મારી રાગ દ્રષ્ટિને દૂર કરવા જ કરુણાસાગર ભગવાને અંત સમયે પોતાની પાસેથી અળગો કર્યો અને મારા જીવનને મારી મેળે અજવાળવાનો માર્ગ મને બતાવી દીધો. આ પણ મારા ઉપર ભગવાનનો કેવો મોટો અનુગ્રહ ! હું અબૂઝ એ સમજ્યો નહીં અને પ્રભુને દોષ દેવાના મહાદોષમાં પડી ગયો ! શ્રમા

શ્રમણ ભગવાન મારા આ દોષને ક્ષમા કરશો ! અને એ પશ્ચાતાપ અને આત્મ નિરીક્ષણના તાપમાં ગૌતમ સ્વામીનાં મોહ-માયા-મમતાનાં શેષ બંધન પળવારમાં ભસ્મ થઈ ગયાં, એમનો આતમા પૂર્ણ નિર્મળ બની ગયો. અને એમના જીવનમાં કેવળજ્ઞાનનો દિવ્ય પ્રકાશ વ્યાપી ગયો.

જ્યોતથી જ્યોત પ્રગટે એમ ભગવાન મહાવીરનું નિર્વાણ ગૌતમ સ્વામીના કેવળજ્ઞાનનું નિમિત્ત બની ગયું. કારતક વદિ અમાવસ્યાની રાત્રીના પર્યુષણ પર્વનો છેલ્લો પહોર ગુરુ ગૌતમ સ્વામીના કેવળ જ્ઞાનથી પ્રકાશમાન થઈ રહ્યો. બાર અંગસૂત્રો (દ્વાદશાંગી)ના અને ચૌદ પૂર્વના જ્ઞાનના ધારક ગૌતમ સ્વામી તે દિવસે સર્વજ્ઞ અને સર્વદંશી બન્યા.

વિક્રમ પૂર્વે ૪૭૦ મા વર્ષોની આ ઘટના.

એ ઘટનાને આજે વિ.સં. ૨૦૪૮માં પચીસો, અઢાર વર્ષના વહાણાં વાઈ ગયા, છતાં એની યાદ ન ભુલાવા પામી છે, ન ઝાંખી બની છે. ભગવાન મહાવીરના મહાનિર્વાણના પુણ્યસ્મરણની સાથે ગુરુ ગૌતમ સ્વામીના કેવળજ્ઞાનનો પ્રસંગ એકરૂપ બનીને સદાસ્મરણીય બની ગયો.

કેવળજ્ઞાન પછી બાર વર્ષ સુધી ગૌતમ સ્વામી પૃથ્વીને પાવન કરતા રહ્યા. અને ગામ-નગરોમાં વિચરીને ભગવાનના શાસનની પ્રભાવના કરતા રહ્યા.

કાળ-પાકે અને ફળ-ફૂલ-પાંદડાં ખરવા લાગે.

સમય આવે ને નદી-સરોવરનાં નીર સુકાવા માંડે,

એવું જ દેહ અને આત્માનું સમજાવું.

ગૌતમ સ્વામી પોતાની કાયાનો વિશ્વના જીવોના કલ્યાણ માટે નિરંતર ઉપયોગ કરતા રહ્યા. અને છેવટે બાણું વર્ષની પરિપકવ વયે તેમણે રાજગૃહ નગરમાં વૈભારગિરિ ઉપર કાયાની માયા ઉપર પૂર્ણ વિજય મેળવીને એમણે એક માસનું અણસણ સ્વીકાર્યું

એ અણસણને અંતે ગૌતમસ્વામી મહાનિર્વાણ પામ્યા.

એમની આત્મજ્યોત ભગવાન મહાવીર અને અનંત મુક્ત આત્માઓની જ્યોતમાં સદાને માટે ભળી ગઈ.

ભગવાન મહાવીરના પ્રથમ શિષ્ય, ગણધર શ્રી ગૌતમ સ્વામી તે દિવસે અક્ષર સુખના સ્વામી બની સિદ્ધ, બુદ્ધ મુક્ત થયા.

રાજગૃહ નગર - ગુણશીલ ઉદ્યાન (ગુણાયા તીર્થ) ગુરુ ગૌતમસ્વામીના અંતિમ સંસ્કારની સ્મૃતિ રૂપે રચવામાં આવેલ. જળમંદિરથી પવિત્ર તીર્થધામ બની ગયું.

સર્વનું કલ્યાણ કરવાની ઉદાત્ત ભાવના અને નિર્મળ, નિખાલસ, સરળ વૃત્તિમાં રહેલો છે. દુઃખને જોઈને કરુણાથી ગદ્ગદ થઈ જવું. સુખ જોઈને પ્રસન્નતા અનુભવવી અને સૌકોઈનું કલ્યાણ કરવા સદા તત્પર રહેવું એ એમનો સહજ ગુણ હતો. આ રીતે ગૌતમ વિશ્વકલ્યાણની ભાવનાના પ્રતિક કે પ્રતિનિધિ અને મંગલમય વિભૂતિ બની ગયા હતા.

ધન્ય ભગવાન મહાવીર સ્વામી !
ધન્ય ગુરુ ગૌતમ સ્વામી !

॥અનંત લબ્ધિનિધાનાય શ્રી ગુરુ ગૌતમસ્વામીને નમઃ ॥

❀ ❀ ❀

માતૃત્વ શક્તિ સમ્પન્ન નારી-કથા

ધર્મ સંસ્કાર સંપન્ન પુત્રવધુ

પં. શ્રીપૂર્ણાનન્દવિજયજી 'કુમાર શ્રમણ'

લક્ષ્મી અને સરસ્વતી માતાની કૃપાદષ્ટિને પ્રાપ્ત થયેલા મોતીલાલ શેઠ મૂળ સ્વભાવે પરોપકારી, સત્યદષ્ટા અને પ્રામાણિક હોવાથી, વ્યાપાર રોજગારમાં કે લેવડદેવડમાં ક્યાંય પણ અપ્રામાણિકતાનો પ્રવેશ થવા ન પામે તે માટેની કાળજી શેઠને બરાબર હતી. પૂર્વભવની પુણ્ય બેન્ક મજબુત હોય તો આ ભવમાં અન્યાય, જૂઠ, ખોટા તોલ-માપ કે હિસાબના ગોટાળા કરવામાં શેઠજી જૈનધર્મની વિરાધનાને માનનારા હતા. માટે ગામમાં અને દૂર દૂર પણ શેઠજીની યશોગાથા ગવાતી હતી. તેમને ત્રણ પુત્રો ઉપરાંત 'હિરાબ્હેન' નામની એક પુત્રી હતી. જે બાલ્યકાળથી ધર્મ ની અનુરાગિણી, અરિહંત ભગવંતોની પૂજા-પાઠમાં શ્રદ્ધાળુ અને સાધ્વીજી મહારાજ પ્રત્યે રાગસંપન્ન હોવાથી વિચારશક્તિનો વિકાસ સાધેલ હતી. આ કારણે જ ધર્માન્ધતા કે શ્રદ્ધાન્ધતા તે કન્યાને સ્પર્શેલી ન હતી માટે પ્રત્યેક પ્રસંગને ધાર્મિકતાનો રંગ આપીને બગડેલી બાજીને પણ સુધારવાની શક્તિ તેમનાં હતી.

એક દિવસે વ્યાખ્યાનમાં ગુરુદેવોના મુખેથી સાંભળ્યું કે ગૃહસ્થાશ્રમજીવન દીક્ષાની પૂર્વ ભૂમિકા સ્વરૂપ હોવાથી સૌ કોઈએ પોતાના માંડેલા ગૃહસ્થાશ્રમને ત્યાગ-તપ અને સ્વાર્થનું બલિદાન આપીને સુધારવા માટે પ્રયત્ન કરવો. મળતા પદાર્થોનો જાણી બુઝીને ત્યાગ કરવો, આનું નામ ત્યાગધર્મ છે, જે જૈનશાસનની આરાધનાનો મૂળ પાયો છે.

જે ક્રિયામાં, અનુષ્ઠાનોમાં કે પોતાના જીવન વ્યવહારમાં ત્યાગધર્મ નથી, ત્યા 'જૈનત્વ'ની આરાધના કંઈક અધૂરી રહેવા પામે છે. જેથી જીવનના અનાદિકાલના કષાયો, વિષવો કે ભોગલાલસા આદિ દૂષણોનો અંત કોઈ પણ આવતો નથી.

એવો ત્યાગધર્મ પુણ્યકર્મની બોલબાલા હોય તે સમયે યદિ જીવનમાં આવી જાય અથવા મોક્ષાભિલાષિણી પુરુષાર્થ શક્તિના બળે લાવવામાં આવે તો માનવ, માનવના શરીરમાં જ દેવ જેવો બની શકે છે.

ઉપરોક્ત વિચારોનીસાથે 'હીરાબ્હેન' ભરયુવાન અવસ્થામાં પ્રવેશ કર્યો. સોથોસાથ સ્રીધર્મના શણગાર-રૂપ ગંભીરતા, નમ્રતા, સરલતા,પવિત્રતા, સહિષ્ણુતા અને મર્યાદિતા આદિ ગુણોને પણ અપનાવી શકયા હતાં અને એક દિવસે તે ગામના કાંતિલાલ શેઠના પુત્રવધુ બનીને સાસરે આવ્યા. કાંતિલાલ શેઠ સારા શ્રીમંત હતાં, વ્યાપાર મોટો હતો, કમાણી સીમાતીત હતી, માન મરતબો પણ ઠીક ઠીક પ્રાપ્ત કરી ચૂક્યા હતાં. તેમને 'પદ્મશ્રી' નામે ધર્મપત્ની હતી. ચાર પુત્રો અને ચાર પુત્રવધુઓ હતી. તેમાં 'હિરાબ્હેન' સૌથી નાના હતા.

ત્યાગી-તપસ્વી મુનિરાજોના પ્રભાવે શેઠના કુટુંબમાં અરિહંત ભગવંતોની પૂજા, માળા, વ્યાખ્યાન, સામાયિક ઉપરાંત દાન-પુણ્ય આદિના અનુષ્ઠાનો વણથંભ્યા ચાલુજ હતા. શેઠ-શેઠાણી, પુત્રો ને પુત્રવધુઓ જ્યારે ઉજળા વસ્રોમાં અષ્ટ પ્રકારી પૂજાના થાળ લઈ દેરાસરે આવતા ત્યારે સૌનીનજર શેઠના કુટુંબ પર પડ્યા વિના રહેતી નહિ અને વ્યાખ્યાનના સમયે ગુરુદેવનો પણ વિષયની ચર્ચા કરવામાં આનંદ આવતો હતો. આમ

નક્કી કરેલા બાહ્ય અનુષ્ઠનોમાં શેઠજીને જરા પણ પ્રમાદ ન હતો.

ધાર્મિકતા કે ધર્માનુષ્ઠાનોમાં ત્યાગધર્મની પ્રધાનતા જ્યાં હોતી નથી ત્યાં ક્રોધનું શમન, ઈન્દ્રિયોનું દમન; વિષયોનું વિરમણ, માનનું મર્દન અને માયાનું મારણ લગભગ અશક્ય હોય છે. પરિણામે કાંતિલાલ શેઠના ગૃહસ્થાશ્રમ જીવનમાં વાતે વાતે જીભાજોડી આદિ દુષ્ટ તત્ત્વો દિવસે દિવસે અને વાતે વાતે વધતા ગયા. આ નાપાક અને ગૃહસ્થાશ્રમને હાનિ પહોંચાડનારા તત્ત્વો જેના કુટુંબમાંથી નાશ ન પામે તો તે ઘરનો પ્રત્યેક મેમ્બર પ્રમાદી, કામનો ચોર, ઉદ્ધત અને ધીમે ધીમે તામસિક બનતો જાય છે. ફળસ્વરૂપે કુટુંબમાંથી સુખ, શાંતિ અને સમાધિ જેવા ઉપાદેય તત્ત્વો પણ ધીમે ધીમે પલાયન થાય છે.

અઢળક શ્રીમંતાઈમાં રહેલા કાંતિલાલ શેઠના ઘરની આન્તર દશા પણ આવીજ હતી. કેમ કે પુરૂષો વ્યાપારમાં મસ્ત હોવાના કારણે પોતાના ગૃસ્થાશ્રમ પ્રત્યે દુર્લક્ષ્ય રહ્યાં અને પુત્રવધુઓ વધારે પડતી ભણેલી હોવાથી પોતાના શરીર ને શણગારવામાંથી બહાર આવી શકી નહિ. પરિણામ એ આવ્યું કે ઘર સંચાલનના બધા વિભાગો સર્વથા નાદુરુસ્ત બનતા ગયા અને તે દિવસો પણ આવ્યા કે ઘરના રસોડામાં ભોજન કરવા માટે સૌની આંખો પરસ્પર લડવા લાગી અને હોટલ કે લોજમાંથી સૌના ટીફીન જુદા જુદા આવતા થયા.

મોટા શ્રીમંતોના ઘરકલેશનો છેલ્લો ફળાદેશ પૂરા સંઘ અને સમાજને પણ લડાવવા કામે આવે છે. આ કારણે અત્યાર સુધી સંઘમાં એક જ મહિલામંડળ હતું. આજે ત્રણે જેઠાણીઓના જુદા જુદા મંડળો થયા અને અરિહંતોની ભક્તિમાં પણ સ્પર્ધા, વિરોધ તથા એક બીજાના મંડળને અપમાનિત કરીને સંઘની મહિલાઓને ત્રણ ભાગમાં વિભક્ત કરવામાં આવી. પ્રતિક્રમણ જેવી પરમ પવિત્ર ક્રિયાઓમાં પણ અસમાધિ, જીભાજોડી વધતી ગઈ.

અનુભવીઓનું કથન છે કે જેની ખાનદાનીમાં કે સમાજમાં કલેશ અને ગુપ્ત દુરાચાર ઉપરાંત ભોજનના સમયે પંક્તિભેદ થયો હોય તો તે ખાનદાનનું પુણ્યકર્મ ધીમે ધીમે ઘટતું જાય છે. શેઠજીને પણ વ્યાપારોમાં પ્રકારાન્તરે ખોટ આવતી ગઈ પરંતુ પુણ્યકર્મ જોરદાર હોવાથી તેનાં પર કોઈનું ધ્યાન ગયું નહિ.

ગુરુદેવોના ઉપદેશથી શેઠે ઉપધાન, ઉજમણા અને નાના મોટા ઉત્સવોમાં યથાશક્તિ દ્રવ્યવ્યય કર્યો અને બાહ્ય દષ્ટિનો યશ ખૂબ મેળવ્યો. પરંતુ વધતી જતી ઘરની અશાંતિ, આર્તધ્યાન અને એક બીજા સાથેના મનદુ:ખ આદિના કારણોથી શેઠ પોતાના મુખ પર હાસ્યની રેખા ઉપસાવી શક્યા નહિ. ઘણીવાર વિચારોમાં અટવાઈ ગયા પછી કહેતાં પણ હતાં કે "હું આટલો ધર્મ કરૂં છું તો પણ જીવનમાં શાંતિ નથી, માળા ગણું છું પણ મનમાં સ્થિરતા નથી, વ્યાખ્યાનો સાંભળું છુ પણ હૈયાની અશાંતિ મટતી નથી."

આવી સ્થિતિમાં પુત્રવધુ બનીને આવેલા હીરાબેનના મનમાં મુંઝવણ વધે તેમાં આશ્ચર્ય નથી. પરંતુ નાનીઉંમરમાં જ ધર્મના રંગે રંગાયેલા બ્હેન અફસોસ કર્યા વિના ઘરની બેડોળ સ્થિતિનું મૂળ તપાસી લીધા પછી આત્મગત નીચે પ્રમાણેના વિચારો કર્યાં.

"જૈનધર્મની શિક્ષા ગૃહસ્થીને બગાડવા માટે નથી પણ બગડેલાને સુધારવા માટે

છે.''

''સામાયિક, પ્રતિક્રમણ આદિ જીવનમાં સમાધિ મેળવવા માટે છે, જે પોતાના અંગત સ્વાર્થોના બલિદાન વિના શક્ય નથી.''

''ભોગોપભોગ વિરમણ, અનર્થદંડ વિરમણ કે પરિગ્રહ-પરિમાણ વ્રતોનું પાલન કર્યા વિના કેવળ મંત્ર-તંત્ર-દોરાધાગા-એકાક્ષી નાળીયેર કે જમણા શંખ આદિથી સુખ-શાંતિ અને સમાધિ કોઈ કાળે પ્રાપ્ત નથી થતી.

આવા વિચારો સાથે 'હીરાબેને' બે પ્રતિજ્ઞાઓ ધારી લીધી.

(૧) રસોડાથી લઈ ઘરનું બધું કામ મારા પોતાના હોહાથે જ કરવું, કેમ કે રસોઈ ખાધા વિના ચાલતું નથી તો પછી ઘરના કામકાજથી કંટાળીને નિરૂદ્યમી તથા આળસુ બની જીવન બરબાદ કરવું તે પાપ છે.

(૨) ઘરમાં આવનારી વસ્તુઓ મારે લેવી નહિ. કેમ કે....વધારે પડતો પરિગ્રહનો આગ્રહ રાખીને આખાએ કુટુંબમાં અસંતોષ જગાડવો તે ધાર્મિકતા નથી, માટે વર્ષભરમાં કપડાની ચાર જોડ અને સૌભાગ્યના આભૂષણ સિવાય બીજે કંઈ પણ લઈશ નહિ, મંગાવીશ નહિ અને રીર પર ધારણ કરીશ નહિ.

ઉપરોક્ત નિર્ણય કરીને હીરાબેને પોતાના મોટા જેઠાણી પાસેથી રસોડાનો ચાર્જ લઈને સ્થાન સ્થાન પર ભેગા થયેલા કચરાને દૂર કર્યો,વાસણો સાફ કર્યા અને રસોઈનો પ્રારંભ કર્યો. ઉત્સાહ અને શ્રદ્ધાપૂર્વક પ્રારંભેલા કાર્યોમાં ઈશ્વરનો આશીર્વાદ સમાયેલો હોવાથી રસોઈનું કાર્ય સારી રીતે પૂર્ણ થયું અને સાસુ-સસરા, જેઠ-જેઠાણીઓ તથા નણંદોએ આનંદ પૂર્વક ભોજન કરીને પોત પોતાના રૂમમાં આવી શેષ દિવસ ગપ્પામાં જુગાર રમવામાં પૂરો કર્યો. જ્યારે હીરાબેને સ્વસ્થચિત્તે સામાયિક અને અરિહંતના ધ્યાનમાં પૂર્ણ કર્યો.

સાત્ત્વિક ભાવથી પળાતી પ્રતિજ્ઞાઓ હંમેશા સારા ફળો આપે છે અને સાથોસાથ કલેશ-કંકાસથી બગડી ગયેલી ગૃહસ્થાશ્રમની હવાને શુદ્ધ કરે છે.

સંયમધારી સાધ્વીજી મહારાજાનો સહવાસ આત્માને પુટ કરવા માટે હોય છે, જેનાથી ગમે તેવા સ્વાર્થોનું બલિદાન દેવાનું સામર્થ્ય પ્રાપ્ત થાય છે. હીરાબેનનો આત્મા પુષ્ટ હતો. તેથી ત્રણ-ચાર દિવસમાં તો સૌને રસોઈનો સ્વાદ આવતો થયો. સાથોસાથ બહારથી આવનારા ટીફીનો અને પડીકાઓ બંધ થયા. આમ ધીમે ધીમે ઘરમાં શાંતિનું સામ્રાજ્ય આવ્યું અને સૌના મુખ ઉપર આનંદની છાયા દેખાવા લાગી. પરંતુ રોગના કજીયા-કંકાસથી ટેવાઈ ગયેલા 'પદ્મશ્રી' શેઠાણીને મૌન શી રીતે ફાવે? માટે રહી રહીને તે વિચારતા હતાં કે આજકલ રસોઈગરમાં શાંતિ શાથી? રસોઈ સારી થવાનું કારણ? વારો કોનો છે? લીસ્ટ જોતાં આ સપ્તાહનો વારો મોટી બહુનો છે. બેશક! તે ડબલ ગ્રેજ્યુએટ છે. પણ હાય રે! તેનો સ્વભાવ! કોઈની સાથે મેળ જામે જ નહીં. કલિયુગના ભગવાને પણ ભૂલ ખાદી છે કે આવા જીવોને ગ્રેજ્યુએટ ડબલ ગ્રેજ્યુએટ કર્યા. આવી રીતના વિચારોના વમળમાં ગોથા ખાતા શેઠાણીજી ચોર પગલે રસોડા પાસે આવ્યા અને મોટી બહુના સ્થાને નાની બહુને જોયા પછી આશ્ચર્યચકિત બનેલા શેઠાણીએ હીરાબેનને કહ્યું કે...'તું રસોડામાં શા માટે? તને વારો કોણે સોંપ્યો? હજી તું નાની છે. લગ્નોત્તર વિધિ પણ

થઈ નથી, તે કારણે મોજ-મજા કરવાના દિવસોમાં રસોઈઘર સંભાળવાનું કામ તારૂં નથી.

સાસુજીને સાંભળ્યા પછી અતિ નમ્રભાવે મીઠા શબ્દોમાં હીરાબેન કહ્યું.....'બા! હું પણ તમારા ઘરની મેમ્બર છું, પરણીને તમારે ત્યાં આવી છું, આણા સાથે મારો આત્મા સંકળાયેલો નથી પણ જે ઘરમાં આવી છું તેની સેવા કરવી તે મારો પરમ ધર્મ છે. નવરા બેસીને શરીરમાં રોગોને આમંત્રણ આપવુ તેના કરતાં કામકાજ કરી શરીરને નિરોગી રાખવું વધારે સારૂં છે. જુઓને 'બા!' રસોઈ પાણી કરતાં મારૂં શરીર કેવું હલકું ફૂલ જેવું છે. કેવી સ્વસ્થ છું, મને કેટલો બધો આનંદ છે'

ઢગલાબંધ વ્યાખ્યાનોથી જે આત્મા ભીંજાયો નથી, તે સાસુનો આત્મા નાની બહુના પવિત્ર સરળ અને નિર્દોષ વિચારો સાંભળતાં જ અજ્ઞાન ગ્રન્થીથી છૂટા થયા છતાં બોલ્યા કે 'બહુદેવી! તારી વાત સાચી છે. અત્યાર સુધી ખાઈપીને આળસુના પીર જેવા બનેલા મારા શરીરમાં કેટલાય રોગો છે. દવા, ગોળીઓ અને ઈન્જેક્શન રોજ લેવા પડે છે. શ્રીમંતોના ઘરમાં એ જ મોટી રમખાણ છે કે કોઈ જાતનો પરિશ્રમ નથી માટે ખાધેલું શી રીતે પચે? અને રોગીષ્ટ શરીરમાં ધર્મસ્થાન કરતાં મન શી રીતે સ્થિર રહે? આ પ્રમાણે ભાનમાં આવેલા સાસુજીને જીવનની અસલીયત સમજવામાં આવી અને તે ક્ષણથી જ રસોડાનું બધું કામ નાની બહુ પાસેથી પોતાના હસ્તક લીધું.

'જેવી દૃષ્ટિ તેવી સૃષ્ટિ' આ ન્યાયાનુસાર પાંચ મિનિટ પહેલા દ્રષ્ટિ શરીર અને તેની માયા ઉપર હોવાથી ઘરનું કામ કરવામાં પોતાના પોઝીશનની હાનિ સમજનારા હતાં અને અત્યારે તેમની દ્રષ્ટિ જીવનતત્ત્વ પર પડતાં તેમની સૃષ્ટિ પણ બદલાઈ અને ઘરનું કામકાજ કરવામાં પોતાનો ધર્મ સમજાયો અને બહુ જ ખંતથી કામનો પ્રારંભ કર્યો. ૨-૪ દિવસ કષ્ટ જેવું લાગ્યુ હશે પછી તો શેઠાણીજીના શરીરમાં સ્વસ્થતા આવી ગઈ અને આત્મા પણ સ્વસ્થ થયો.

આ પ્રમાણે સાસુજીને સ્વસ્થ કર્યા પછી પહેલા નંબરના જેઠાણીને સમ્યગ્ ધર્મ સમજાવવા માટે ખાનગીમાં પોતાના પતિની પાસે બે માટલા મંગાવ્યા અને હિરાબેને કૂવાથી પાણી ભરવાનું કામ ચાલુ કર્યું. બે ચાર દિવસ પછી પાણીની હેલ લઈ આવતા હીરાબેનને જોઈ મોટા જેઠાણીએ કહ્યું કે 'આ શું કરો છો? આપણે મોટા ઘરની બહુ-દીકરીઓ છીએ; માટે પાણી ભરવાનું કામ આપણું નથી.' જવાબમાં હીરાબેને કહ્યું કે 'જેઠાણીજી! તમે ભૂલ ખાઈ રહ્યાં છો. પાણી પીવામાં પાપ નથી તો પાણી ભરવામાં ક્યું પાપ? અને પોઝીશનની વાત કરો છો તો સમજી લેજો કે ઘરનું કામકાજ કરવામાં પોઝીશન ડલ થતું નથી પણ વૈર-વિરોધ-કજીયા, કંકાસ અને વાતે વાતે-જીભાજોડી કરવામાં પોઝીશનને ધક્કો લાગે છે. મોટા ઘરની બેટીઓને તો 'જાત મહેનત ઝિંદાબાદ' જ પરમ ધર્મ છે. જોતાં નથી મારા શરીરની સ્વસ્થતા અને મેવા-મિષ્ટાન્ન ખાધેલા તમારા શરીરની બેડોલતા.'

ભવિતવ્યતા હશે અને જેઠાણીએ પાણી ભરવાનું કામ પોતાના હસ્તકે લીધું અને ધીમે ધીમે શરીરની ખોટી ગરમી, મેદ-આળસ અને પ્રમાદથી મુક્ત થયેલા જેઠાણીજીના મન અને આત્મા સ્વસ્થ બન્યા.

અને આ જ પ્રમાણે બીજી બે, જેઠાણીઓને પણ કામે લગાડી દીધી.

ઘરના કામકાજમાં ગૂંથાયેલા સૌ મેમ્બરોના મન પણ પવિત્ર બન્યા અને ક્લેશ સમાપ્ત થયા. આજે મનની સ્વસ્થતાના કારણે સામાયિકમાં સ્વસ્થતા, પૂજામાં મગ્નતા અને પ્રતિક્રમણમાં મિચ્છામિ દુક્કડં દેવાનો આનંદ પ્રાપ્ત થયો અને હીરાબેન પ્રશંસાને પાત્ર બન્યા.

ज्ञान-सूक्तियाँ

संकलनकर्त्री - पू. साध्वीजीश्री प्रियदर्शनाश्रीजी
पू. साध्वीजीश्री सुदर्शनाश्रीजी

जहा सूई ससुत्ता, पडिआविन विणस्सइ ।
तहा जीवे ससुत्ते, संसारेविन विणस्सइ ।।

– उत्तराध्ययन २९/५९

जिस प्रकार धागे में पिरोई हुई सुई गिर जाने पर भी गुम नहीं होती है, उसी प्रकार ज्ञान रूप धागे से युक्त आत्मा संसार में कहीं भटकती नहीं, अर्थात् विनाश को प्राप्त नहीं होती ।

सव्वभावाहिगमं जणयइ ।।

– उत्तराध्ययन २९/५९

ज्ञान की सम्पन्नता से जीव सभी पदार्थ-स्वरूप को जान सकता है ।

नाण संपन्नेणं जीवे चाउरन्ते ।
संसारकन्तारे न विणस्सइ ।।

– उत्तराध्ययन २९/५९

ज्ञाना से संपन्न जीव चार गति-रूप संसार अटवी में विनाश को प्राप्त नहीं होता ।

एगे नाणे ।

– स्थानांग १/४३

उपयोग की दृष्टि से ज्ञान एक प्रकार का है ।

सुयस्स आराहणयाएणं अन्नाणं खवेइ ।

– उत्तराध्ययन २९/२४

ज्ञान की आराधना करने से जीव अज्ञान का क्षय करता है ।

नाणेन विणा न हुंति चरण गुणा ।

– उत्तराध्ययन २९/३०

ज्ञान के अभाव में चारित्र - संयम गुण प्रकट नहीं होता ।

नाणी नो पमायए कयावि ।

– आचारांग ३/३

ज्ञानी आत्मा को किसी भी परिस्थिति में प्रमाद नहीं करना चाहिए ।

सुत्ता अमुणी, मुणिणो सया जागरन्ति ।

– आचारांग १/३/१

अज्ञानी सदा सोये रहते हैं और ज्ञानी सदा जागते रहते हैं ।

नह्यज्ञानात् परः पशुरस्ति ।

– नीतिवाक्यामृत ५/३७

अज्ञान से बढ़कर कोई पशु नहीं है ।

अण्णाणमओ जीवे कम्माणं कारगो होदि ।

– समयसार ९२

अज्ञानी आत्मा ही कर्मों का कर्ता होता है ।

डाक पंजीयन क्रमांक MH/THN १६१ पहले से डाक व्यय चुकाये बिना भेजने की
अनुमति प्राप्त लाय़सेन्स नं. ३५

જનતાના હિતમાં પ્રચારિત

संपादक - जे.के.संघवी अ.भा. श्री. राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद के लिये
डपूजी आर्ट प्रिन्टर्स- थाने में मुद्रित।